प्रकाशक :
श्री सज्जन अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
हरिरामवाला (मश्रूवाला)
पोस्ट-दुलमाणा; रेलवे स्टे० पीलीबंगा
(जिला गंगानगर) राजस्थान

मुद्रक :
ए जू के श न ल प्रेस
फड़ बाजार, बीकानेर

श्रद्धेय सज्जन जी
के
कर-कमलों में
उनकी ५६वीं वर्षगांठ पर
श्रीमान् सिद्धराज जी ढड्ढा
द्वारा
सादर समर्पित

हरिरामवाला—६ दिसम्बर १६६६

'सज्जन'-अभिनन्दन ग्रन्थ परामर्शदात्री समिति

१. श्री रामचन्द्र, मक्कासर, सम्पादक
२. श्री मदन चन्द कौशिक, शि० प्रसार अधिकारी
३. श्री मंगू राम शर्मा, अध्यापक, सचिव
४. श्री मलकियत सिंह प्र० अ० मक्कासर
५. श्री भाग सिंह भास्कर अध्यापक सूरांवाली
६. श्री रामजी दास पूनियां प्र० अ० चक जहाना
७. श्री हनुमान दास वर्मा भू० पू० पंच डबली राठान

बैठे हुए—बायें से दायें : सर्वश्री रामचन्द्र मक्कासर, सज्जन, मदन चन्द कौशिक, मनकियत सिंह भेला।
खड़े हुए—बायें से दायें : सर्वश्री हनुमानदास वर्मा, मंगू राम शर्मा, रामजी दास पूनिया।

स्वर्गीय श्री शिवचन्द राय इस ग्रन्थ के प्रेरणा स्रोत

श्री शिवचन्द राय

हम परस्पर वर्षों से प्रभावित थे। वे मेरे गुणों का बखान विद्यार्थियों और अध्यापकों में करते और मैं उनका समाज में। गत वर्ष उन्होंने मुझे कहा, "छोटी-बड़ी रचनाओं की अपेक्षाकृत कोई पुस्तक लिखिये।" इस वाक्य ने मुझे कुछ चिंतन करने को विवश कर दिया।

थोड़े दिनों बाद हम दोनों चक हरिरामवाला (मथूवाला) में गये। श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सज्जन) ने हमारा स्वागत किया और कहा "जी आया नूं।" वार्तालाप और संगति के बाद, पुनः मेरे साथी बोले, "लो! ये हैं हमारे हीरो।" मैंने भी झटपट सज्जन जी के बारे में जानकारी संग्रह की और लिखने-लिखाने का निश्चय किया। अब तो समिति भी बनी है। समाज के कई लोगों ने समर्थन, शुभ-आकांक्षा, लेख भेजे हैं। एक आदर्श अध्यापक को हम सम्मानित करेंगे। यह उस स्वर्गीय आत्मा की प्रेरणा थी। वैसे सबको कहने का हक है कि मैंने इस ग्रन्थ को तैयार करवाया है, लेकिन मैं इसे ऐसे समझाता हूं:

> कलियां रोती हैं कि भंवरों ने उन्हें क्यों ताका।
> भंवरे रोते हैं कि कलियों को निखारा किसने॥

—सम्पादक

हमने भी खोज लिया

आज देश में आदर्श व्यक्ति की भारी अपेक्षा है, समाज को उनसे प्रेरणा मिलेगी तो हित संभव है। अगर सब अपने स्वार्थों एव मोह-जाल में फंसे रहे तो न जाने कहां और कैसा अंत हो ! सचमुच वह अत दुःखद हो सकता है। लोग भटक सकते हैं। संतान पथ-च्युत बन सकती है। सामाजिक मूल्य विपरीत ढंग से आंके जा सकते हैं। हम देखते भी हैं- टेरालीन, रेशम, मखमली वस्त्रों की ओट में सपन्नता, धन के घेरे में बंधा बड़प्पन,-कारों के ऊपर ही सोने वाले बड़े आदमी क्या हमारा मार्ग प्रशस्त करेंगे ?

आदर्श है कौन ? जो सैकड़ों को सांत्वना दे, उन्हें बढ़ने को और उनके चलने में अपनी शिक्षाओं को उतार दे। लोग स्वयं उनकी ओर लालायित हों। आदर्श स्वयं छिपता है, शर्माता है. लेकिन कुछ भले उन्हें ढूंढ लेते हैं। हमने भी खोजा, ऐसे ही एक पुरुष को। उनका जीवन प्रकाश में आना चाहिए। वह है सज्जन (सदानन्द)। विद्वान् बहुत मिलेंगे लेकिन त्यागी नहीं। यहां इन दोनों गुणों का गठ-बंधन है। हमारे शब्दों में यह दूसरी व्याख्या है 'आदर्श' की। इस आदर्श (सज्जन-सदानन्द) के लिए क्या किया जाये ? वे स्वय कुछ चाहते नहीं, लेते नहीं, उन्हें कैसे मनायें ?

इलाके के पढ़े-लिखे लोगों और चिन्तकों को सज्जनजी की ५६वी वर्षगाठ पर श्रद्धा-सुमन अर्पित करने चाहिएं, लेकिन यह उनका ठीक-ठीक मूल्यांकन नही। मात्र इससे वे क्या सम्मानित होगे! यह तो बचकानी बात है कि हम किसी सरोवर में घर से लोटा भर कर उडेल दें। फिर भी लगता है, लोग उन्हें कभी जानेगे और वह मरणोपरान्त ही! हम दुर्बल सेवक विचारने हैं, "सज्जन को इस जन्म-तिथि पर क्या दें, क्या लें?" उत्तर-बुद्धि के पैमाने पर टिका है, जैसा ज्ञान है वैसा दें और लें। उन्हें हम एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट करें या पुस्तक, वह तो एक सम्मान मात्र है। आशा है जमाना उन्हें अपने लक्ष्य पर पहुंचने को सामने रखेगा, जैसे दूसरे तट पर जाने हेतु नाव होती है; अथर्ववेद में एक ऋचा है।

हे ईश्वर तू रुचि, कान्ति है, तू 'रोचस्' है तू कान्तिमान्, अतिमनोहर है। वह तू जिस प्रकार अपनी कान्ति से 'रोचस्' रुचिकर, मनोहर है उसी प्रकार मैं पशुओं से और ब्रह्मतेज से चमकू कान्तिमान बनू।

उपरोक्त वाक्य रचना शायद सज्जन जैसे ही दिव्य व्यक्ति के लिए ही गढ़े गये है। वे ईश्वर के प्रारूप हैं और मैं उनका अनुयायी। वे कान्ति हैं और मैं उनकी कान्ति से प्रतिबिंबित।

आइये ! हम उस 'रोचस्' में आलोकित हों । उन
नकशे कदम हमारे लिए 'मील के पत्थर' बनें, प्रका
स्तम्भ हों । चलो उन्हें देखें-पढ़ें । जो भाई, छात्र-छात्राएं उन
साथ रहे हैं या जिन्होंने उनमें जैसा दर्शन किया है, वे इ
वर्षगांठ पर सज्जनजी के बारे में लिखें ।

हम उन्हें कुछ दे नहीं सकते, फिर भी कुछ न कु
लिखकर या भेंट करके संतोष अवश्य कर सकते हैं।
भगवत्प्रेरणा से.........।

—रामचन्द्र मवका

अनुक्रम

शहीदी खंड

सन्देश

और

सारे संसार का धर्म तो वास्तव में एक ही।
और वह है 'मानव धर्म' रूप '१ सत् धर्म'।
अन्य नाम धर्म हिंदू-सिक्ख-मुस्लिम आदि सब।
सच-सच पूछो तो हैं 'अपने-अपने पसंद धर्म'।
सर्व पसंद धर्म देखलीजिये वही उक्त 'मानव धर्म'।
कहो तो, भला, ऐसे धर्म से, किसे इन्कार ?
तो क्यों न भिन्न-भिन्न नाम धर्मों के, तज।
कहो-रखलो एक ही सर्वोत्तम नाम 'मानव धर्म'।
बल्कि '१ सत् धर्म' ही, कि 'सत्' सत्य तथा नित्य !

— सज्जनामृत

राष्ट्रपति सचिवालय, PRESIDENT'S SECRETARIAT,

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली - 4.

Rashtrapati Bhavan.
New Delhi-4

सत्यमेव जयते

पत्रावली सं० 18-हि/69

कार्तिक 30, 1891 शक
नवम्बर, 21, 1969

प्रिय महोदय,

राष्ट्रपति जी के नाम भेजा आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री योगेन्द्र पाल जोशी "सज्जन" को उनके जन्म दिवस पर "अभिनन्दन-ग्रन्थ" भेंट करने का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री "सज्जन" के दीर्घ जीवन की राष्ट्रपति जी कामना करते हैं और आयोजन की सफलता के लिये अपनी शुभकामनायें भेजते हैं।

भवदीय,

खेमराज गुप्त

राष्ट्रपति के अपर निजी सचिव

श्री मंगू राम शर्मा,
सचिव, 'सज्जन" अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति,
विद्यालय हरिराम वाला,
पो० डूनमाना, जिला श्रीगंगानगर,
राजस्थान।

उत्तम मार्ग ही कल्याण करता है !

—वेद भगवान्

शुभ कामनाएं

"GIRIJA"
30, Edward Elliot Road,
Mylapore, Madras-4.
March 22, 1969.

[illegible]r Sir,

Dr. S. Radhakrishnan has asked [illegible]to acknowledge your letter of the 18th [illegible]rch and to send his good wishes for the [illegible]cess of the function you are arranging to [illegible]nour the teacher on his 56th year.

Yours faithfully,
P. S to Dr. S Radhakrishnan

सत्य मार्ग ही उत्तम मार्ग है !

बरकतुल्ला खां
शिक्षा एवं न्याय मंत्री
राजस्थान, जयपुर
डी 1924/शि./69
अप्रेल 8, 1969

प्रिय शर्मा जी,

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हु[ई]
कि एक आदर्श शिक्षक के सम्मान में उनकी ५६वीं वर्षगां[ठ]
पर एक "सज्जन अभिनन्दन-ग्रन्थ" भेंट करने जा रहे हैं।

आपका यह प्रयास सफल सिद्ध हो। य[ह]
मेरी शुभ कामनाएं आपके साथ हैं।

आपका
बरकतुल्ला खां

श्री मंगूराम शर्मा,
सचिव,
सज्जन अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,
हरिरामवाला (मथूवाला)
पो० दूरमाना (गंगानगर—राज०)

सत्य-रहित जीवन, नरक है ! और सत्य-युक्त, स्वर्ग !

—सज्जनामृत

संदेश और श्रद्धांजलि

श्री "सज्जन" (श्री योगेन्द्र पाल जोशी, प्रधानाध्यापक, प्रा० पाठशाला हरिरामवाला) को उनकी ५६वीं वर्षगांठ पर मैं अपनी ओर से और इस शाला परिवार की ओर से हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं। श्री जोशी जी का आदर्श-युक्त जीवन,—प्रेरणाप्रद कार्य, उत्साही जीवन, कर्त्तव्यनिष्ठ जीवन की ओर संकेत करते हैं। आपकी मधुर मुस्कान, शिक्षण कार्य में सोने मे सुगन्ध का उदाहरण देती है। आपकी रचनाएँ, "विश्वज्योति" पत्रिका का प्रकाशन अदम्य उत्साह भर देती हैं। श्री "सज्जन" जैसा सादा रहन-सहन एव उच्च विचार यदि भारतीय अध्यापक अपनाने की क्षमता रखे, तो देश के भावी नागरिक जो आज शालाओं में अध्यापन कर रहे हैं अपने देश को पूरे निखार पर ला सके, ऐसा हमारा विश्वास है। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से मगल-कामना करता हूं कि श्री जोशी जी दीर्घायु हों और अपने व्यक्तित्व से शिक्षा जगत् को आलोकित करते रहे !

होतीलाल शर्मा, एम. ए., बी. एड.
प्रधानाध्यापक रा. मा. पा., चांदना (पदमपुर)

नानक, दुखिया सब संसार सो सुखिया, जिस नाम-आधार !

मेरा सन्देश व श्रद्धांजलि

मैं श्री सज्जन जी को सन् ६५ से जानता हूं। श्री सज्जन जी ने जो कार्य पाठशाला हरिरामवाला में किया है, वह सराहनीय है। इनके परिश्रम से लगाया हुआ उपवन देख कर पंचवटी की स्मृति हो आती है। इस युग में ऐसी महानात्माओं की अति आवश्यकता है। मैं श्री सज्जन जी के दीर्घायु होने की मंगल कामना करता हूं।

रामचन्द, सरपंच
ग्रा० पं०, सहजीपुरा

मेरी श्रद्धांजलि

ये मास्टर जी मेरे गांव में आज से १२ साल पहले पढ़ा रहे थे। इनका लड़कों से बड़ा प्यार रहा और इनका सब परिवार का रहन-सहन और व्यवहार बड़ा अच्छा रहा। इनके सहयोग से ही मैंने अपने माता-पिताश्री के नाम से दो कमरे, दो बरांडे स्कूल में बनवा दिये। जहां ये मकान में रहते थे, तो उनके पास में श्रीमती तुल्सी (चौधरी श्री रामप्रसाद जी मास्टर की धर्मपत्नी) ने एक कमरा, एक बरांडा स्कूल में बनवा दिया — श्री सज्जन जी की धर्मपत्नी आर्या [illegible] क्योंकि इनका महिला-समाज-सेवा में

ऐ विद्वानो ! गिरे हुये मनुष्यों को ऊपर उठाओ !

—वेद भगवान्

बडा प्रेम था। दूसरे प्रान्त (पंजाब) से आनकर हमारे जहां-जहा रहे इन्होंने सहयोग दिया। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है, कि ऐसी लक्ष्मी का बैकुण्ठ मे वास होवे। बाकी मैं ईश्वर से प्रार्थना करूगा कि श्री 'सज्जन' जैसे आदर्श पुरुषों को *जिनने एज्यूकेशन में बडा योग दिया है,* चिरायु करे, ताकि वे जनसेवा करते रहें।

हरीराम, मक्कासर

मेरी शुभकामना

श्री सज्जन जी से मैं सन् ६२ से परिचित हूँ। मैं इनके परिश्रम और त्याग को देख कर बहुत प्रभावित हुआ। सच-मुच इन्होने सेवा-कार्य करने मे कोई कसर नही रखी। मैं भगवान से शुभ-कामना करता हू कि वह इनको तन्दुरुस्त रखे और दीर्घ आयु प्रदान करे।

हरगोपाल शर्मा
भू० पू० अध्यक्ष
न्याय पंचायत, डबली
(राठान)

ऐ नानक ! मिलकर रहने की खूबी इतनी ज्यादा है कि वह बयान में नहीं आ सकती !

श्रेष्ठ शिक्षक

हे त्याग मूर्ति महान् !
हे ईश ज्योति महान् !

किया सुकर्मों से उत्थान,
लगा कर सत् में ध्यान ।

कर रहे सत् शिक्षा का दान,
किया सुख वर्षा मंदिर निर्माण ।

उसका किया सुशिक्षा से शृंगार ।
उद्यम से लगाया एक उद्यान ।

कर से कर रहे श्रमदान,
और करें सर्व जन-कल्याण ।

निज सुखों को दिया त्याग,
सत् के नीचे करते विश्राम ।

हे श्रेष्ठ शिक्षक महान् !
तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम !

मंगूराम शर्मा
अध्यापक, [illegible]

जिस आदत से आनंद न मिले वह आदत मत डालो।

—जिमरमन

राजस्थान ग्राम सेवक संघ शाखा हनुमानगढ़

क्रमांक १ दिनांक ६-११-६६

शुभ कामना संदेश

हमें "सज्जन अभिनन्दन ग्रन्थ" के सम्पादक द्वारा शुभ कामना देने के लिये कहा गया। मैंने सचिव के नाते स्वयं मथूवाला जाकर सज्जन जी के पवित्र धाम (पाठशाला) को देखा। वहां की सारी व्यवस्था, रचना और कृति मे सुगन्ध ही सुगन्ध दिखाई दी। यही बात अपने मित्रो को कहता हूं कि हमें ग्रामसेवक नाम को सफल करना है तो सज्जन जी से केवल त्याग की बात सीख लें। जब मनुष्य त्याग करता है और साथ में ज्ञान का सम्बल हो तो वह प्रत्येक को लुभाता चलता है। मुझे विश्वास है कि ग्राम सेवक संघ के सदस्य इस उत्सव (सज्जन अभिनन्दन ग्रन्थ समारोह) में स्वय आ करके अनुभव करेंगे और सभी अपना प्रत्यक्ष शुभ सदेश देंगे।

आदर्श आदमी व्यवहार कुशल होता है।

—समर्थ रामदास

कार्यालय ग्राम पंचायत, मक्कासर (हनुमानगढ़)

क्रमांक ६५ दिनांक ६-११-६६

शुभ कामना संदेश

मैं यह पहली वार सुन रहा हूं कि एक भले अध्यापक का सम्मान जनता द्वारा होगा। सावित होता है कि समाज में भी किसी पुरुष को जांचने की क्षमता किसी प्रकार कम नहीं होती। और यह तरीका सर्वोत्तम है। मैं संदेह करता हूं कि सज्जन जी को सही रूप से आंकने में कहीं कोई कमी न रह जाये। मैं तो चाहता हूं कि ऐसे अध्यापक देश की शिक्षा-योजना को अपना मार्ग-दर्शन दें। अगर शिक्षा विभाग इनकी योजना विशेष रूप से आत्मिक शिक्षा, को ही लागू करता है तो हमारे देश के बच्चे त्याग और अपना चहुंमुखी विकास कर पायेंगे।

प्रभु करे आप चिरायु हों। और आपके सम्मान में किया जाने वाला उत्सव दूसरों को लालायित करे।

नौरंगलाल शर्मा

सरपंच

ग्राम पंचायत, मक्कासर

पो० मं० हनुमानगढ़ (गंगानगर)

संस्मरण

'जियो और जीने दो' ! 'मरो और मारो', नहीं !

पत्रकारों की दृष्टि में :

हम तो विभूतियों को लोगों की चर्चा मे या लेखकों की रचनाओं मे पढ़ते है। हमारे पत्र मे 'सज्जनजी' के बारे मे कई समाचार छपे हैं। ऐसे सरस्वती-पुत्र के बारे में प्रकाशन करके यह अखबार भी धन्य है। हमने उस सतयुगी के दर्शन किये हैं—

यही है इबादत यही है दीनों ईमां
कि दुनियां मे काम आये इसां के इन्सां

योगराज सोबती
सम्पादक, सीमा सन्देश
श्रीगंगानगर (राज०)

'सज्जन' जो यथा नाम तथा गुण से भरे-पूरे है। श्रम का महत्व कोई उनसे सीखे। ऐसे आदर्श-पुरुष युगों जिए, इस सद्कामना के साथ !

शेखर सक्सेना
सम्पादक, 'सेनानी'
बीकानेर

ही एक सत्य सुमरो उसे नित्य—चाहो सुख ही सुख यदि नित्य!

—सज्जनामृत

एक अदना-सा युवक

शिक्षा जगत् के प्रज्वलित दीपक, सरस्वती के उपासक, कर्मनिष्ठ, निर्भीक सदाचारी एवं स्नेहशील, हनुमानगढ़ तहसील के गौरव श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सदानंद 'सज्जन') के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही आज हरिरामवाला जैसे छोटे से गांव के बच्चे बच्चे के दिल में सरस्वती के प्रति श्रद्धा एवं लगन दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किसे मालूम था कि एक दिन एक अदना-सा युवक छोटी सी पाठशाला को अपने सद् प्रयत्नों से एक विशाल भवन का रूप दे देगा।

आपकी बीस वर्ष की सेवाएं गंगानगर जिले में शिक्षा प्रसार के लिये एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मात्र पुस्तकों का अध्ययन ही ज्ञान नहीं बढ़ाता—इस बात को ध्यान में रख कर ही अपने छात्रों के मन-मस्तिष्क में उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा का भी समावेश कराया।

आप जैसे भारत मां के दुलारों के द्वारा ही देश उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकता है। भगवान आपको चिरायु करे!

तेजनारायण शर्मा
सम्पादक, 'तेज'
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

अरे मन ! चल वहाँ चलें जहाँ निर्मल संत-जन हैं !

— दादूदयाल

अविस्मरणीय !

सज्जन जी की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है—शिक्षा जगत् में आपकी सेवाएं प्रशंसनीय, सराहनीय ही नहीं बल्कि अविस्मरणीय हैं। सद्भावनाओं सहित—

गुरबक्श
सम्पादक, साप्ताहिक 'भटनेर टाईम्स'
हनुमानगढ

दिव्य ज्योति का प्रकाश

प्रथम उन — चरणों — नमन् !

उनके गुणों की व्याख्या करने में लेखनी असमर्थ है। किन्तु फिर भी कुछ दर्शाने हेतुः—उनका जीवन महापुरुषों के समान आदर्श है। स्वभाव सरल व वाणी बड़ी प्रिय है।

सर्व प्रथम वही पहचान नाना सुख जिस-प्रदान !

—सज्जनामृ

सेवा, सत्यावलम्बन, त्याग, परोपकार के उत्तमोत्तम गुणों को ही जीवन का सच्चा शृंगार जानकर स्वयं को इन दिव्य आभूषणों से सुसज्जित किया है।

सदाचार, शिष्टता, निर्मलता, सत्यता व ईश-भक्ति इनके जीवन रूपी दर्पण से झलकती है। वे कलयुगी जीवों की तड़फती आत्मा को अमृत रूपी ज्ञान द्वारा शान्त कर रहे हैं। उनके द्वारा शाला-भवन निर्माण व पेड़-पौधों को देखकर मन अति आनन्दित हो उठता है। जिस प्रकार पुष्प में सुगन्ध, दूध में मक्खन, मेंहदी में लाली विद्यमान है, वैसे ही उनमें दिव्य-ज्योति का प्रकाश है।

कुमारी आशा रानी कालड़ा
मुख्य अध्यापिका,
कन्या पाठशाला,
डबली राठान

सतयुगी पुरुष

आपकी महिमा करने वाली मेरी बुद्धि तो नहीं पर मैं भी कुछ अपने टूटे-फूटे शब्दों में गुणगान करने जा रहा हूं।

संतान का उत्तम होना माता पिता के शुद्ध आचरण पर निर्भर है !

—महर्षि दयानन्द

जब से आप पाठशाला हरिरामवाला में देखे गये है आप हर समय कार्य में व्यस्त रहते है । आप बड़े कर्मठ व्यक्ति हैं । आपका जैसा नाम है वैसे ही, स्वभाव के सज्जन पुरुष हैं । आपकी वाणी मे इतना मिठास है कि बार-बार मिलने को दिल करता है । आपने अपनी कृतियों को अपने जीवन में क्रियान्वित कर रखा है ।

आपने तो अपने जीवन का लक्ष्य केवल समाज-कल्याण बना रखा है । आपकी रचित 'घर बैठे सत्संग', 'भवसागर से पार', 'सज्जन-कवितावली' का अध्ययन करके नि.सदेह कल्याण हो सकता है । आपने अपने वेतन का ६०% भाग बचाकर प्रा. पाठशाला हरिरामवाला में एक सुन्दर कार्यालय और उसके सामने एक अच्छा बगीचा लगाया है । मानो शान्ति निकेतन जैसा दिखाई देता है । प्रवेश पर इतना आनन्द आता है कि यही बैठा जाये और दीवारों पर अंकित उच्च विचार पढता रहूं । खुशकिस्मत ग्रामवासी जिनको गुरुजी जैसे महान् पुरुष मिले जिन्होंने ग्राम को चार चांद लगा दिये ।

भगवान मुझे भी काश ! इनके साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करता तो इनकी सादगी-उच्च विचार से

लज्जा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है!

—प्रेमचन्द

लाभान्वित होता। निःसंदेह आप सतयुगी पुरुष हैं और आदर्श अध्यापक हैं।

रामजीदास पूनियां

प्र० अध्यापक, चक जहाना

आदर्श अध्यापक

आपका जीवन सद्‌गुणों से परिपूर्ण होने के कारण गागर में सागर के सदृश है। आपके जीवन में सादगी, सफाई, सच्चाई, भलाई, आदि गुणों का समावेश है। आपने मानव धर्म को अपनाकर जनकल्याण में जो योगदान दिया, उसका जीता-जागता नमूना चक हरिरामवाला में दृष्टि-गोचर हो रहा है। अध्यापन और साहित्यिक रचना द्वारा जो समाज-सेवा आप कर रहे हैं, उसके लिए समाज ऋणी है।

आपकी करनी और कथनी एक है। आपकी कृतियां मौलिक व जन-भाषा में हैं जो जनसाधारण के लिए उपादेय हैं। आपने सर्व सद्ग्रन्थों का मंथन कर उन्हें जनता की भाषा में सार रूप रख दिया है। आपकी रचनाओं में उच्च

बच्चे का भाग्य सदैव उसकी मां की कृति है !

—नेपोलियन

चरित्र व अगाध पांडित्य झलकता है। आपके सत्कर्मों से प्रतीत होता है, जैसे कोई पुरातन योगीपुरुष भारतीय पावन भूमि के पुनः दर्शन करने आये हो। आपके जीवन में वह दैवी प्रेरणा विद्यमान है, जिसके सहारे सत् पुरुष द्युलोक मे विचरते हैं। निःसदेह आपका जीवन आदर्श है।

मंगूराम शर्मा
अध्यापक
रा० प्रा० पा०, हरिरामवाला

He is not only a..........!

Shri Sajjan ji is not only a teacher but also a preacher among the public, teachers and students. He is a writer, poet and tries his level best to change the minds of the people to be true, kind, faithful and sincere for the human beings. Simple living and high thinking proved to be true to his dreams in Govt. Primary School Hariramwala,

आत्म गौरव नष्ट करके जीना मृत्यु से भी बुरा है !

—भर्तृहरि

करेगी; तथा अपनी गौरवमयी प्रेरणाओं से सभी को आप्यायित करती रहेगी, यही मेरी अन्तर्मयी धारणा है।

वीरबलदत्त शास्त्री
रा० उ० विद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन

High thinking............!

Shri Sajjan ji is really a noble man. God has blessed him with many qualities and he is making the best use of these qualities in serving the pupils and the community, especially in the villages where the need of educating and elevating the people is utmost. He follows the principle of 'High Thinking and simple living' which seems to be very true from the look of his office where the following lines are written in Hindi:—

"Sada jeewan aur oonchai vichar
Neisandeh Sada Bahar, Sada Bahar !"

यदि मैं अंधे को कुएं के सामने देखूं, तो मेरा चुप बैठना पाप है !

— शेख़ सादी

Surinder Kalra
Headmistress,
Govt. Girls Sec. School,
Hanumangarh Town

महापुरुष

मास्टर जी (योगेन्द्रपाल जी) मेरे बड़े भाई जैसे हैं। जब मैं स्कूल में पढ़ने लगी थी उस समय से आप भाई (रामचन्द्र जी) के पास आते हैं। जब-जब आप दोनों मिलते हैं, रात-रात भर गहरे विचारों में डूबे रहते हैं। आपके चिंतन तक मैं नहीं पहुंच सकती। लेकिन लगता है कि आप एक महापुरुष हैं।

मुझे तो आप जब मिलते हैं तो एक प्यारभरी थपकी, उपदेश और खाने के लिए कुछ न कुछ दे जाते हैं। और बच्चों को कुछ न कुछ खाने के लिए चाहिए ही। इस तरह से दोनों-खुराक (ज्ञान व खाना) मिल जाता है। परमेश्वर करे आप जैसों का हमारे घर में सदा प्रवेश होता रहे।

इन्द्रा देवी, कक्षा ६
कन्या महाविद्यालय
ग्रामोत्थान विद्यापीठ
संगरिया

दूसरों के गुण और अपने अवगुण ढूँढो !
— बेंजामिन फ्रैंकलिन

जिसको कर्मयोगी के रूप में देखा

मैंने आपको श्री रामचन्द्र मक्कासर सर्वोदयी की प्रेरणा पाकर पहली बार पुराने विद्यालय में चक हरिरामवाला (मश्रूवाला) ग्राम के बीच में देखा। जैसा सुना वैसा पाया। किन्तु कुछ इनकी सज्जनता व सरलता अथवा भावुकता-पूर्ण भोली बातें, जो आपका प्राकृतिक स्वभाव है यह आजीवन रहता है। यह देखकर मुझे सशय हुआ, कभी क्रोध भी आया, भावावेश मे मैंने इनको ढोंगी भी बताया। इस भाव को मैं यहीं छोड़ता हूं। क्योंकि यदि हम किसी महात्मा की भी कमी को देखने लगें तो भी एक पुस्तक बन सकती है। किन्तु उससे कुछ लाभ नहीं। पुराने, पूर्वज तथा पूजनीय ऋषियों-मुनियों के नाम पर हम अनेकों इलजाम सुनते हैं। जैसे सोलह कला अवतार श्रीकृष्ण के नाम को भी चोर, व नचार आदि नाम देकर बदना बताते हैं। महर्षि दयानन्द के प्राण लिए, गांधी को गोली मारी, नेहरू को नालायक तथा विनोबा जो ससार के माने हुए सतों मे महान हस्ती है, को पागल बताते हैं। गर्ज कि हमारे देश में जहां दीवानों, परवानों की कमी नहीं वहां बेईमानों का भी बाहुल्य है। सो वह अपने पापों पर पर्दा डालने हेतु दुरालोचना करते हैं।

मेरी यह मान्यता है कि श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सदानन्द

धर्म के आगे शरीर की परवाह मत करो !

— गुरु गोविन्दसिंह

सज्जन) प्र० अ० चक हरिरामवाला (मश्रूवाला) पं० समिति हनुमानगढ़ की सेवा, साहस, त्याग तथा श्रमदान अध्यापकों के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक नागरिक के लिए आदर्श. अनुकरणीय तथा विचारणीय तो अवश्य है। अतः ऐसे कर्म-योगी को यथायोग्य सम्मान मिलना चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा मिले। यदि आप ढोङ्गी व व्यवहार से मक्कार होते तो पहले ही चमक जाते। अब भी अंधेर नहीं देर हुई है। देर आयद दुरुस्त आयद वाली कहावत यहां चरितार्थ है। इसलिए मैंने आज अपनी अध्यक्षता में हुई गोष्ठी में यही सुझाने का साहस किया है। राज चाहे ढोंगियों को तरजीह दे किन्तु हमें सेवकों की कदर करनी है।

भागसिंह भास्कर

[illegible]

संयोजक, जिला संघर्ष समिति, गंगानगर

त्यागी शिक्षक

भारतवर्ष की वसुन्धरा आदि से त्यागी और तपस्वियों की जननी रही है जिनके अनेक उदाहरण ग्रन्थों में भरे हुए हैं। जैसे ऋषि दधीचि ने अपनी अस्थियां भी राजा इन्द्रदेव

केवल सत्य ही टिकेगा। बाकी सब कुछ समय के ज्वार में बह जायेगा।

—महा० गांधी

(देवनगरी का राजा) को देकर सर्वस्व त्याग किया, वैसे ही नेहरूजी, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी किया।

समुद्र के गर्भ में कितने-ही प्रकार के रतन और जवाहारात होते हैं। रतन और जवाहारात की कीमत हर व्यक्ति नहीं आंक सकता, क्योंकि वह इन चीजों से अनभिज्ञ होता है। इनकी कीमत एक जौहरी ही आंक सकता है। कई दफा कई रतनों और जवाहारातों की कीमत जौहरी भी आंकने में असमर्थ हो जाता है। अन्त में वह कहता है—यह अमूल्य है। इसी प्रकार मानव-जीवन एक अमूल्य जीवन है और मानव इस भू के सब जीवों में श्रेष्ठ जीव है।

इस धरा पर कई प्रकार के जीव पैदा होते हैं। उनमें मानव ही श्रेष्ठ जीव है, मानव में भी वह मानव जो सात्विक, त्यागी, यति—सादा जीवन, उच्च विचार रखने वाला और आत्मदर्शी हो, वही श्रेष्ठ होता है। हर मानव में प्रकृति की तरफ से तीन गुण होते हैं—(१) रज (२) तम और (३) सत्व। सत्व गुण इनका राजा होता है। रज और तम इसके अधीन कार्य करते हैं।

इसी प्रकार के गुणों से सम्पन्न एक और व्यक्ति इस वसुन्धरा पर प्राप्त हुआ है, जिसको जानकर आप अत्यधिक प्रसन्न होंगे। वह है—"सदानन्द, सज्जन" (योगेन्द्रपाल जोशी) जो गांव हरिरामवाला, तहसील हनुमानगढ़, जिला

विद्या धर्म से शोभा देती है !

—वेद भगवान्

श्रीगंगानगर (राजस्थान) में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं।

सर्वहित के दूत

"सदानन्द, सज्जन" एक प्राथमिक पाठशाला में अध्यापक पद पर कार्य करते हुए भी त्यागी हैं जिसका जीता जागता नमूना ग्राम हरिरामवाला स्कूल की इमारत के रूप में है। इस अल्पवेतन-भोगी अध्यापक ने अपने वेतन में से धन-राशि संचित कर स्कूल की इमारत बनाने का जो कार्य किया है वह इस जिले में अब तक कहीं भी देखने में नहीं आया है।

शांति की प्रतिमूर्ति

"सदानन्द, सज्जन" कर्मकाण्डी हैं। यह निरन्तर कार्य करते रहते हैं। ये स्कूल के लिए और देश के हितार्थ संलग्न रहते हैं। इन्होंने अपने भरसक प्रयत्न द्वारा स्कूल, फुलवारी और पेड़-पौधे लगाये हैं, जो बहुत ही मनमोहक और आनंद-दायक हैं। स्कूल की सफाई और अनुशासन का ध्यान रखते हुए, आस-पास की भी सफाई और अनुशासन का अत्यधिक ध्यान रखते हैं ताकि विद्यार्थियों को शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद वातावरण मिल सके। एक दफा की बात है, मैं कुछ सरकारी कार्य से गांव हरिरामवाला पहुंचा। उसी बीच में इनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं जैसे ही शाला के दरवाजे से अन्दर पहुंचा तो क्या देखता हूं, श्री "सज्जन"

गुरु की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है !

—शेख सादी

जो अपने दफ्तर की सफाई करने में तल्लीन हैं, मेरे नमस्कार करने पर कुछ ध्यान मेरी तरफ हुआ और बैठने के लिए आसन दिया। तो मैं क्या देखता हूं कि कार्यालय की दीवारों पर कुछ उपदेशात्मक वाक्य हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं। यह कितना आदर्शमय और लाभदायक है। लेख कुछ सुन्दर ढग से पेंट न होने के कारण मैंने एक पेंन्टर का नाम प्रस्तावित किया और वचन दिया कि मैं उसको लेकर आऊंगा।

युवक सज्जन

कारणवश मैं उनके पास निश्चित तिथि पर न पहुंच सका। परन्तु "सज्जन" जी बिना किसी प्रकार का विलम्ब किये हनुमानगढ़ पहुंचे और पेंन्टर को लेकर चले आये और सुन्दर तरीके से कार्य करवाया। इससे सिद्ध होता है, कि वे एक अच्छे कर्मकाण्डी जीव हैं। इस प्रकार श्री "सज्जन" जी तन, मन, धन से जनता की सेवा करने तत्पर रहते हैं।

शिक्षा के प्रकाश-स्तम्भ

देश के उत्थान के लिए अच्छे छात्रों की अत्यधिक आवश्यकता होती है। अच्छे छात्र तैयार करने के लिए

विद्या धर्म से शोभा देती है !

—वेद भगवान्

श्रीगंगानगर (राजस्थान) में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं।

सर्वहित के दूत

"सदानन्द, सज्जन" एक प्राथमिक पाठशाला में अध्यापक पद पर कार्य करते हुए भी त्यागी हैं जिसका जीता जागता नमूना ग्राम हरिरामवाला स्कूल की इमारत के रूप में है। इस अल्पवेतन-भोगी अध्यापक ने अपने वेतन में से धन-राशि संचित कर स्कूल की इमारत बनाने का जो कार्य किया है वह इस जिले में अब तक कहीं भी देखने में नहीं आया है।

शांति की प्रतिमूर्ति

"सदानन्द, सज्जन" कर्मकाण्डी हैं। यह निरन्तर कार्य करते रहते हैं। ये स्कूल के लिए और देश के हितार्थ संलग्न रहते हैं। इन्होंने अपने भरसक प्रयत्न द्वारा स्कूल, फुलवारी और पेड़-पौधे लगाये हैं, जो बहुत ही मनमोहक और आनंद-दायक हैं। स्कूल की सफाई और अनुशासन का ध्यान रखते हुए, आस-पास की भी सफाई और अनुशासन का अत्यधिक ध्यान रखते हैं ताकि विद्यार्थियों को शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद वातावरण मिल सके। एक दफा की बात है, मैं कुछ सरकारी कार्य से गांव हरिरामवाला पहुंचा। उसी बीच में इनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं जैसे ही शाला के दरवाजे से अन्दर पहुंचा तो क्या देखता हूं, श्री "सज्जन"

गुरु की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है !

—शेख सादी

जी अपने दफ्तर की सफाई करने में तल्लीन हैं, मेरे नमस्कार करने पर कुछ ध्यान मेरी तरफ हुआ और बैठने के लिए आसन दिया। तो मैं क्या देखता हूं कि कार्यालय की दीवारों पर कुछ उपदेशात्मक वाक्य हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं। यह कितना आदर्शमय और लाभदायक है। लेख कुछ सुन्दर ढग से पेंट न होने के कारण मैंने एक पेन्टर का नाम प्रस्तावित किया और वचन दिया कि मैं उसको लेकर आऊंगा।

युवक सज्जन

कारणवश मैं उनके पास निश्चित तिथि पर न पहुंच सका। परन्तु "सज्जन" जी बिना किसी प्रकार का विलम्ब किये हनुमानगढ़ पहुंचे और पेन्टर को लेकर चले आये और सुन्दर तरीके से कार्य करवाया। इससे सिद्ध होता है, कि वे एक अच्छे कर्मकाण्डी जीव हैं। इस प्रकार श्री "सज्जन" जी तन, मन, धन से जनता की सेवा करने तत्पर रहते हैं।

शिक्षा के प्रकाश-स्तम्भ

देश के उत्थान के लिए अच्छे छात्रों की अत्यधिक आवश्यकता होती है। अच्छे छात्र तैयार करने के लिए

ब्रह्मचर्य का अर्थ है वासनाओं का मन, वचन और कर्म से नियंत्रण !

—महा० गांधी

कुशल अध्यापकों की भी आवश्यकता होती है। जिस प्रकार का देश को अध्यापक चाहिये उसी प्रकार के आदर्श अध्यापक "सदानन्द सज्जन" हैं। ये विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर अत्यधिक बल देते हैं।

श्री 'सज्जन' जी का नारा "सर्वेश्वर एक" है, जो हिन्दू संस्कृति, वेद ग्रन्थों के अनुकूल है। वही मानने योग्य है, इसी में सर्वहित निहित है। श्री "सज्जन" भक्त और त्यागी जीव हैं। आत्मदर्शी होने के तीन साधन हैं (१) कर्म-काण्ड (२) भक्ति काण्ड और (३) ज्ञान काण्ड। इस प्रकार मेरे देखने में आया है कि श्री "सज्जन" जी तीनों साधनों का प्रयोग कर अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं।

मैं पृथ्वी के सभी मानवों से प्रार्थना करता हूं, कि आप सब श्री "सज्जन" जी की तरह सात्विक, त्यागी, यति रहकर अपने जीवन के साथ-साथ राष्ट्र का उत्थान करते हुए चतुर्मुखी सबल बनें।

चमनलाल कत्याल

हृदय को वासना-रहित करने के लिए प्रार्थना एक अचूक उपाय है !

—महा० गांधी

एक आदर्श शिक्षक, लेखक

परम आदरणीय सज्जन जी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व, दोनों से मैं परिचित हूं । सेवा का जो क्षेत्र उन्होंने चुना था वह ऊसर भूमि जैसा था । मक्कासर से फिर हरिरामवाला (मथूवाला), रेत के टीले और पानी का अभाव ऐसे ही क्षेत्र मे उन्होंने ज्ञान-गंगा को प्रवाहित करने का दुष्कर कार्य अपने हाथ मे लिया । हम अब जान पाये हैं कि ध्येय की पूर्ति के लिये परिश्रम और कष्ट सहन का नाम ही तप है । इन अर्थों में सज्जन जी का यह तप सफल हुआ और उनके हाथों से स्थापित की हुई शिक्षण संस्था किसी जीवित समाज के शौर्यपूर्ण प्रयत्नों का ज्वलन्त प्रमाण उपस्थित कर रही है । श्री सज्जन जी आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ उच्चकोटि के लेखक भी हैं । उनके निर्माण कार्यों और उत्कृष्ट कृतियों से यह प्रमाण मिलता है ।

उन्हें उनके भक्त लोगों ने इन्हीं सेवाओं के उपलक्ष में "सज्जन-अभिनन्दन ग्रन्थ" भेंट करने का कार्य अपने ऊपर लिया है । यह प्रयत्न स्तुत्य है और इस शुभ अवसर पर मैं भी सज्जन जी को शतशः प्रणाम करता हुआ अपनी श्रद्धा

'आर्य' नाम – विद्वान, धार्मिक और सज्जन पुरुष का – है!

—महर्षि दयानन्द

जो उनके लिए मेरे दिल में है, प्रकट करता हूं।

दिनेशकुमार जोशी

सर्वोदय आश्रम, मक्कासर

संतों की दृष्टि में

१ उ सतगुरु प्रसाद

श्रीमान मास्टर सदानंद सज्जन एक सत्पुरुष भी हैं। इनादे कम वडे सोहने हन। वहुन चिर तो वड़े-वजुरग वड़ी सोहनी पढ़ाई करा रहे हन। जनता दी सेवा कर रहे हन। इनां दी सेवा दा मुल असीं दे नहीं सकदे और ऐसी चीज आपको नहीं मिलेगी। ए वचियां दी सेवा कर रहे हन। और असी कई दफा स्कूल दे विच पहुंचे। जेहड़ा एनाने दफ्तर वनाया है। नंगे घड़ सेवा कीती है। और कई किसम दे वूटे लगाए हैं। और आप स्कूल आकर देख सकते हैं, ये झूठ नहीं। और साडे वास्ते ए मास्टर जी ऐसे तरी हन जि जिस तरह कोई ब्रह्म ज्ञानी हैं। मालिक दे अगे साडी बेनती

बालकों के पालन-पोषण तथा विद्या-शिक्षा उत्तम होनें-
सर्वोत्तम नींव हैं !

—सज्जनामृत

है कि मास्टर होरी सेवा करन, ते एन्दा दी बडी उमर होवे । जय-हिन्द !

इन्द्रसिंह शानो,
डबली राठान

जनता की नजरों में

सज्जन जी दा जीवन बहुते गुणां नाल भरया होण करके एतां दे जीवन दे बारे लिखना साडे लई बड़ा मुश्किल है । सज्जन जी अपने सुख नू छड के जेड़ी जनता दी सेवा कर रहे हन, ओनू भुलया नहीं जा सकदा । ऐनां दी लिखियां किताबों दा सानू पढ़ने सुनने दा मौका मिलया । ऐनां दी पुस्तकां दे इक इक शब्द दे बड़े डूंगे अर्थ हन । ओना नाल साडे दिल नू सच्ची शान्ति मिलदी है । आप जी दी लिखियां पुस्तकां दे पढ़नतों मन ते इक छाप-जी पैं जांदी है।

सज्जन जी दे कमां नू वेखके इंज जापदा है जोवें कोई महापुरुष अवतार धारया होवे । ऐनां दे जीवन दे हरेक कम नाल सानू सिखया मिलदी है । कम विच लगे रहना, हर

पर स्त्री को अपवित्र दृष्टि से मत देखो ! तुम्हारी भी बहन, माता, पुत्री को कोई देखे, तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

—सज्जनामृत

कम नेकी नाल पूरा करना, बुरे कंमां तों दूर रहना, विद्यार्थियां नूं चंगी सिखयां देणा, भलाई दे कंमां विच लगे रहना इनां दी जिन्दगी दा पहलू है ।

इथों तक कि ऐनांनें अपनी तनख्वा चों रुपये बचाके स्कूल विच इक दफ्तर बनाया है । जीनूं वेखके साडा दिल्ल बड़ा खुश होंदा है । ऐनां दे हथां नाल लगाए दरखत, फलां दे बूटे, फुलवाड़ी साडे स्कूल दी शांन बधांवदे हन । ऐनां दा सब नाल प्रेम है । सारे दे सारे सज्जन जी नूं आदर दी निगाह नाल वेखदे हन । असीं रब्ब अगो सच्चे दिल्ल नाल विनती कर दे हां कि सज्जन जी ऐसे तरां आपदे जीवन दी रोशनी नाल प्रकाश करदे रहन ।

हस्ताक्षर—छिगार सिंह, —पंच प्रशंसक,

मेजरसिंह, करतारसिंह, चक हरिरामवाला (मश्रूवाला) कृष्णसिंह, भूराराम, गुलवन्तसिंह, वचनसिंह, मनोहरलाल, नरसिंह, सतनामसिंह, भगवानसिंह,

निबन्धकारों के बीच

जिन "सज्जन" की सेवाओं के निमित्त यह ग्रंथ निकाला जा रहा है वे राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं एक सामान्य अध्यापक है । बहुत आगे का तो कौन जाने, पर निकट भविष्य में ये कुछ बदला दे सके ऐसी आशा शायद

पर स्त्री को अपवित्र दृष्टि से मत देखो ! तुम्हारी भी बहन, माता, पुत्री को कोई देखे, तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

—सज्जनामृत

कम नेकी नाल पूरा करना, बुरे कंमां तों दूर रहना, विद्यार्थियां नूं चंगी सिखयां देणा, भलाई दे कंमां विच लगे रहना इनां दी जिन्दगी दा पहलू है ।

इथों तक कि ऐनांनें अपनी तनख्वा चों रुपये बचाके स्कूल विच इक दफ्तर बनाया है । जीनूं वेखके साडा दिल्ल वड़ा खुश होंदा है । ऐनां दे हथां नाल लगाए दरखत, फलां दे बूटे, फुलवाड़ी साडे स्कूल दी शांन बधांवदे हन । ऐनां दा सब नाल प्रेम है । सारे दे सारे सज्जन जी नूं आदर दी निगाह नाल वेखदे हन । असीं रब्ब अगो सच्चे दिल्ल नाल विनती कर दे हां कि सज्जन जी ऐसे तरां आपदे जीवन दी रोशनी नाल प्रकाश करदे रहन ।

हस्ताक्षर—छिगार सिंह, —पंच प्रशंसक,
मेजरसिंह, करतारसिंह. चक हरिरामवाला (मथूवाला) कृष्णसिंह, भूराराम, गुलवन्तसिंह, बचनसिंह, मनोहरलाल, नरसिंह, सतनामसिंह, भगवानसिंह,

निबन्धकारों के बीच

जिन "सज्जन" की सेवाओं के निमित्त यह ग्रंथ निकाला जा रहा है वे राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं एक सामान्य अध्यापक है । बहुत आगे का तो कौन जाने, पर निकट भविष्य में वे कुछ बदला दे सकें ऐसी आशा शायद

लोगों को नही होगी इसलिये मैं मानता हूं कि ग्रंथ में जो कुछ लिखा जायगा वह ठोस होगा।

जिनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में यह ग्रंथ निकाला रहा है, मैं स्वय तो उनसे परिचित भी नही हूं ...ो... मैंने इस ग्रंथ के लिये कुछ लिखकर भेजने की बात ... मान ली, क्योकि इसमें इस बात का कोई खतरा नही कि मैं उनकी प्रशंसा के निमित्त चाहे जो लिख दूं। बताया गया है कि श्री योगेन्द्रपाल ... शाला के प्रधानाध्यापक ... होने के निमित्त उनके मित्रों ने जो ... निकालने का निर्णय लिया है वह व्यक्तिगत ... नहीं बल्कि एक सज्जन और भले अध्यापक ... ऐसा मैं मानता हूं, और इसीलिये मुझे इसके ... की कुछ प्रेरणा हुई।

एक समय था जब हमारे समाज में गुरु का दर्जा भगवान के बराबर था अगर सयोग से गुरु और ... दोनों सामने आ जाते तो विवेकी पुरुष के मन में कभी-व यह प्रश्न खड़ा हो जाता था कि पहले "किस के ... लागू ?" वह जमाना तो आज स्वप्नवत् हो गया है। प्राथमिक शाला का अध्यापक तो बेचारा अध्यापकों की कतार में भी सबसे पीछे आता है। जो इस कतार में आगे हैं उनकी भी आज समाज में कोई खास इज्जत नही है।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुले-गुलजार होता है !

कई शिक्षक ऐसा समझते हैं कि हमारा वेतन कम है इसलिये हमारी इज्जत कम है। और इसलिये वेतन बढ़वाने के लिये वे हड़ताल करते हैं, जुलूस निकालते है, नारे लगाते हैं और जेल जाते हैं। यह सही है कि आज के युग में पैसे की पूजा है और अध्यापक का वेतन भी कम है। लेकिन क्या शिक्षक इतना भी नहीं समझ सकता कि उसका वेतन बढ़ता भी गया तो कहां तक बढ़ेगा ? उस स्तर तक तो वह पहुंचने वाला है नहीं जिस स्तर पर पैसे वाले की पूछ होती है। शिक्षक को समझना चाहिये कि शिक्षक रहते हुए तो वह पैसे की दौड़ में पीछे ही रहने वाला है, वह आगे नहीं निकल सकता।

सोचना यह चाहिये कि शिक्षक के पास समाज को देने के लिये क्या है ? विद्या और विचार ! दूसरी चीज जो शिक्षक सहज ही समाज को दे सकता है वह है निरंतर अपने संपर्क में आने वाली एक के बाद दूसरी पीढ़ी को अपने चारित्र्य के उदाहरण से प्रेरणा। आज समाज में न विद्या की इज्जत है, न विचार का आदर, न चारित्र्य की पूजा। समाज को उन चीजों की चाह ही नहीं है जो शिक्षक उसे दे सकता है। सीधी-सी बात है कि ऐसी स्थिति में शिक्षक का आदर कैसे होगा। एक थानेदार हलाना हुआ आ जाय तो लोगों पर रौब गालिब ... क्योंकि सत्ता का मूल्य आज के समाज में ...

तुलसी जग में आयके, कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरि नाम ॥

है। थानेदार से ज्यादा वेतन पाने वाला कालेज का शिक्षक लोगों के सामने खड़ा हो जाय तो सहसा उसकी तरफ कोई देखेगा भी नहीं, क्योंकि शास्त्र का आज के समाज कोई खास मूल्य नहीं है।

समाज में विद्या का, विचार का और चारित्र्य का आदर प्रतिष्ठित होगा तब शिक्षक और अध्यापक का आदर अपने आप बढ़ेगा। उसके लिए शिक्षकों को फिर नारे नहीं लगाने पड़ेंगे। और जो व्यक्ति विचार और आचार का मूल्य समाज मे प्रतिष्ठित करना चाहता है उसको फिर इस बात की चिंता भी नहीं होगी कि व्यक्ति के नाते समाज उसका आदर हो। आज समाज में सत्ता, शस्त्र, और सम्पत्ति लोगों को आकर्षित करते है, और इसलिये मनुष्य और मनुष्यता का दर्जा नीचा होता चला जा रहा है।

अतः केवल हमारे अपने लिए नहीं, लेकिन सारी मानव जाति को ऊंचा उठाने के लिये, या यों कहिये कि उसे नीचे गिरने से रोकने के लिये, यह आवश्यक है कि समाज में विचार और आचार की महानता का आदर सम्स्थापित करने का प्रयत्न हो। अध्यापक अगर वेतन बढ़वाने के लिये नारे लगाने के बजाय इस दिशा मे अपनी शक्ति को जोड़ेगा तो निश्चय ही समाज में उसका आदर बढ़ेगा। भारतीय समाज में गुरु का स्थान इसीलिये ऊंचा था कि उस

तुलसी आह गरीब की कभी न खाली जाय।
मुये बकरे की खाल से, लोह भस्म हो जाय॥

समय चारित्र्य का और विचार का समाज में आदर था, और गुरु को इनके सिवा दूसरी चीजों का मोह नहीं था।

"सज्जन अभिनंदन ग्रंथ" के जरिये समाज में सज्जनों का और उनके गुणों का आदर बढ़ेगा, ऐसी आशा है।

सिद्धराज ढड्ढा

समाज सुधारक मास्टर

अध्यापक सज्जन काफी समय तों चक मश्रूवाला विच सेवा दे कम कर रहे हन। वहां के सारे पिंडवाले लोकां नाल अते-बच्चियां नाल इनां दा बहुत पियार अते सत्कार हन। इनांने ऐथे एक बहुत सुन्दर स्कूल अते बाग अपनी पूरी मेहनत नाल बनवाया अते सजाया। कि स्कूल दा दफतर अपनी किरत कमाई विचों बनवाया अते इस महान वाक नूं पूरा कीता (घाल खाए किछु हथों देह नानक राह पछाणे से) इस करके मैं इन्हां दा जिना भी कुछ लिखां ओह थोड़ा हन।

ऐसे सज्जन अते पियारे पुरुष संसार नूं काफी थोड़े हन। मेरी परमात्मा अगे एही बेनती है कि इनां

'धन कमा सौ हाथों से' फुरमाया यह वेद।
'हाथ हजार से पुण्य कर' चानन ! पाले भेद ॥

नूं सेवा करन दी ताकत अते तदुंरस्ती बख्शे। अतें जो इन्हांने समाजक सुधार वास्ते पुस्तक छापण अते लिखण दा बीडा चुकया होया है गुरु नानक देव जी महाराज ओंनूं पूरा करना मेरी इनहां बारे एही इच्छा हन। सब नगर निवासी, टीचर इनहां दा मान अते सत्कार वधाके अपना जन्म सफल करन। सत् श्री आकाल !

मैं हां आपजी दा सेवक
दास सरुप सिंह, लोको फिटर
रेलवे वरक छाप, हनुमानगढ़ जं०
(बीकानेर-राजस्थान)

मेरे प्रेरणा पुष्प

"श्रेष्ठ व सज्जन पुरुष एक ऐसी शक्ति व तेज के भंडार होते हैं जिसके प्रभाव से विषयासक्त, पापाचारी व नीच प्रकृति वाले मनुष्य अपने दोषयुक्त आचरण से रुक कर उनके कथनानुसार श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होते हैं।"

कुछ ऐसी ही शक्ति, ऐसा ही तेज "सज्जन" जी में

विकार सद्गुरु के सच्चे हृदय से प्राप्त शिक्षा से ही दूर होने सम्भव है।"

उनके समीप रहकर उनके गुणो से लाभ उठाने की अभिलाषा भी ईश्वर ने पूर्ण की। सन् १९५८ मे चक आर. बी. (पदमपुर) प्राथमिक पाठशाला मे 'सज्जन' जी का स्थानान्तरण हुआ और वही एक लघु अवधि के लिए मुझे उनकी समीपता का सौभाग्य मिला। अवकाश प्राप्त होते ही 'सज्जन' जी अपने साथी अध्यापको को अपने पास बैठा लेते व उन्हें उपदेश देते। छात्र-ताड़ना 'सज्जन' जी के सिद्धान्तो के सदा विरुद्ध रही। इस विषय पर एक दिन मुझे एकान्त मे बैठाकर प्रकाश डालते हुए कहा, "हरीश! एक अध्यापक की सबसे बडी भूल जो अनेको भूलो को जन्म देती है वह यह है कि वह बच्चो को कुछ सिखाने के आशय से मारता है, डांटता है, ताड़ना देता है अथवा अपमानित करता है जिसका फल यह होता है कि बच्चा परिश्रमी सुघड बनने की अपेक्षा पाठशाला के वातावरण से सदा के लिए घृणा करने लगता है। उन्हे प्यार दो! प्यार से ही उनके सुकोमल दिमागो मे शिक्षा के प्रति रुचि, कर्त्तव्य-भावना जैसे उत्तम गुण व गुरुजनो के प्रति सम्मान की भावना आदि पैदा किये जाने सम्भव है।" उनके इन उपदेशो से एक तरफ जहां मुझे "अध्यापक" शब्द की यथार्थता का बोध हुआ दूसरी ओर मैंने स्वयं मे निहित

लाभ क्या है ? गुणी पुरुषों के साथ मिलना ही लाभ है!

कितने ही दोषों से मुक्ति प्राप्त की।

'सज्जन' जी द्वारा रचित "सज्जन अमृत" को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसे 'पुस्तक' नहीं बल्कि 'ज्ञान-भंडार' कहना उत्तम रहेगा। रचना कवितायुक्त है। कविता देवताओं की भाषा है। प्रत्येक वस्तु जिसमें जीवन है, जीवन सौन्दर्य है, वह कविता है और जीवन व जीवन सौन्दर्य 'सज्जन' जी जैसे महापुरुषों की सद्सङ्गति से ही उपलब्ध हो सकता है। इनकी रचनाएं साहित्य जगत को देन हैं। आज शिक्षा जगत् को सज्जन जी जैसे अध्यापकों की आवश्यकता है। शिक्षा विभाग को उन पर गर्व होना चाहिए। प्रत्येक अध्यापक को उनके आचरणों का अनुसरण करना चाहिए। सौभाग्यशाली है वह शाला ! वहां के विद्यार्थीगण जहां 'सज्जन' जी जैसे कर्मठ, उत्साही, साहित्य-सेवी व आदर्शवान् शिक्षक शिक्षादान कर रहे हैं।

मेरी कामना है कि 'सज्जन' जी दीर्घायु को प्राप्त होकर शिक्षा जगत की सेवा करते रहें।

हरिश्चन्द्र शर्मा
मकरानार

दुख क्या है ? मूर्खों से मिलना ही दुःख है !

हे सतयुगी अध्यापक ! तुम्हें हमारा नमन् !!

आज के अध्यापक त्यागी बनेंगे ऐसी आशा धुंधली पड गई थी, लेकिन अभी अभी एक ऐसे असाधारण अध्यापक के त्याग का समाचार मिला है जो युगयुगीन तक हमारे समाज का पथ-प्रदर्शन करेगा।

वेद कहता है, "देवो, हमे लोक बल और धन बल दो।" ठीक इसी प्रकार जैसे वर्तमान अध्यापकों की पुकार भगवान ने सुनी हो। उन्हें आज श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सज्जन) सदानन्द, चक हरिरामवाला, पचायत समिति पाठशाला, तहसील हनुमानगढ मे एक सतयुगी अध्यापक के आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

सदानन्द (सज्जन) उपरोक्त प्राथमिक पाठशाला के निर्माणार्थ सात वर्षों से संलग्न थे। पहले आप एक गुरुद्वारे में पढ़ाते थे, लेकिन अब वहा आप तीन नवीन कमरे देखेंगे। मध्य का कमरा सज्जन जी ने अपनी आय (वेतन) मे से वचाकर अढ़ाई हजार रु० मे बनाया है। यह उदाहरण 'दधीचि की अस्थिदान' से कम नही। यह अपनी सात्विक कमाई का सद उपयोग कहलायेगा। यह कार्यालय है जिसके ऊपर प्रस्तर खुदा है।

कार्यालय

सज्जन द्वारा निर्माणित

जय जवान ! जय किसान !!

—श्री लालबहादुर शा

चैत्र, सं० २०२५ वि०—मार्च सन् १९६८ ई०

यह है आत्मोन्नति उस (सज्जन) अध्यापक की और समाज की जो सांसारिक रोगों की दवा है। बल्कि इसे हम अमृत कहें, जो सरस्वती के महान पुत्र ने हमें भेंट देकर पिलाया है। क्या समाज एवं भारत सरकार ऐसे गुरुवर को सम्मानित करेगी ?

रामचन्द्र, मक्कासर

आदर्श व्यक्ति

वैसे जब पंचायत का चुनाव सन् ६५ में सम्पन्न हुआ, उसी समय से, मेरा सम्बन्ध श्री सज्जन जी से लगातार रहा है। मैं जब भी चक हरिरामवाला जाता हूं श्री सज्जन जी का कार्य देखकर एक नई प्रेरणा प्राप्त होती है। श्री सज्जन जी ने शिक्षा सेवा तो उच्च कोटि की की ही है परन्तु समाज सेवा भी कम नहीं की है। आप एक आदर्श व्यक्ति हैं। आज के युग में अध्यापकगण श्री सज्जन जी के [illegible] कार्य से प्रेरणा ले सकते हैं। मैं श्री सज्जन जी

श्री सज्जन विद्यालय-फुलवाही में
छात्रों को शिक्षा देते हुए।

श्री सज्जन मनारो आदि की गोडी
करते हुए।

पुरुषार्थी पाये, आलसी जाये ! पुरुषार्थी गाये, आलसी हाये !

—सज्जनामृत

के दीर्घायु होने की कामना करता हूँ ।

रामरख बसीर
सहायक सचिव
ग्राम प०, सहजीपुरा

यह पुनीत कार्य इन्हें अजर-अमर रखेगा !

मैं श्री सदानन्द जी सज्जन से गत कई वर्षों से परिचित हूँ । राष्ट्र के उत्थान में शिक्षक का सबल सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। यदि शिक्षक कर्त्तव्यपरायण तथा कर्त्तव्यनिष्ठ हो तो वह तिमिराच्छादित वातावरण में ज्ञान की किरणें विकीर्ण कर सकता है । श्री सदानन्द जी शिक्षा क्षेत्र में अपने कर्त्तव्य का पालन दत्तचित होकर शालीनता के साथ गत २० वर्षों से कर रहे हैं। इन्होंने हजारों छात्रों का सही अर्थों में जीवन-निर्माण किया है। ग्रामीण जनता इनके उच्च आदर्शों से बहुत प्रभावित है। इनके शिष्य इनके प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में भी इन्होंने स्वस्थ परम्परा की स्थापना की है। आपने ग्रामों में रहते हुए भी छः सुन्दर पुस्तकों की रचना की है जिनका मैंने आद्योपांत अध्ययन किया है। इनकी पुस्तकों के पढ़ने

सकल मतान्त केवल हर-नाम !

— गुरु नानक

से पाठकों को सत्प्रेरणा प्राप्त होती है। इन्होंने अपने सात्विक परिश्रम द्वारा ग्राम हरिरामवाला में एक भव्य कार्यालय तथा आकर्षक वाटिका का निर्माण किया है। यद्यपि इनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि ये इन निर्माण कार्यों पर इतना व्यय कर सकें, किन्तु अपनी सतत साधना से जनता के सामने इन्होंने एक उच्च आदर्श रखा है। वास्तव में आपका यह पुनीत कार्य इनकी स्मृति को अजर-अमर रखेगा। इनका यह सत्कार्य शिक्षा विभाग राजस्थान को भी गौरवान्वित करता है। मुझे पूर्ण आशा है कि शिक्षक-बन्धु इनके द्वारा स्थापित स्वस्थ परम्पराओं का अनुकरण करके अपने आपको गौरवान्वित करेंगे।

ताराचन्द्र शर्मा
प्रधानाचार्य, बिहाणी सनातन धर्म
पोस्ट ग्रेजुएट कालेज,
श्रीगंगानगर (राज०)

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

भारत की संस्कृति दस हजार वर्ष पुरानी है। इस

रोज़ी का फ़िक्र इन्सान को जरूर है, मगर इतना मसरूफ न हो कि खुदा को भूल जाये !

भूमि पर सदैव महापुरुषों का अवतीर्ण होता रहता है। लोग ऐसे ही महापुरुषों की खोज में दूर-दूर जाया करते हैं। उनके सत्संग से जीवन का मोड बदल जाता है और भक्त का शेष जीवन पुण्य धारा में प्रवाहित होता रहता है। वह जीवन स्वयं में पूरा और आकर्षक होता है। फिर अनहद नाद, स्वर्ग और मुक्ति का मार्ग सरल होता है…।

मेरी शादी सन् १९६२ में होनी थी। इससे पहले मुझे एक अनजाने व्यक्ति के दर्शन हुये। वे बहुत सादे और गहरे जान पड़े। लेकिन उनके एक-एक शब्द में, प्रेम और भलाई के दर्शन हुये। जब मैंने उनकी बातें ध्यान से सुनी, तो कुछ चुम्बक की तरह उनकी ओर खिंच गया। जल्दी ही मैं एक नये और अटूट नाते से बंध गया। लगा जैसे मेरा उनके साथ जन्म-जन्म का संबन्ध है। बस यही थे मेरे दूसरे पिता बनाम वात्सल्य की प्रतिमूर्ति। अब तो मैं उनका हूं और वे मेरे हैं। जब भी मैं विचलित होता हूं तो पूजनीय योगेन्द्रपाल जौहरी (सज्जन) से मुझे मार्गदर्शन मिलता है। मैं जहां भी हूं, भगवान के बाद शायद वे ही मेरे इष्ट हैं। और उनकी प्रतीक देवी संयोगिता हम दोनों गृहस्थ में हैं। लेकिन मारा जीवन पिता जी के ही आदेशों से संचालित है। तो क्यों नहीं हम सुखी हों; उनका आशीर्वाद हमारे साथ है।

सच्चा नाम, सच्चा मन—दोनों हों, कैसा आनन्द।

—सज्जनामृत

रोशनलाल, भम्बी
गुना [मध्य प्रदेश]

दग्ध मानव के लिए शान्तिधाम

"शाला के उपकरण, भवन और उपवन आदि को सदा सुरक्षित रखना...............।"

"ग्राम में भी जरूर वितरण हो, फिर शेष फलों की आय शाला हेतु लगे !"

उपरोक्त शब्द रक्तिम-नीले रंगों में एक आदर्श पाठशाला के मुख्य कार्यालय के अगल-बगल दीवार में उत्कीर्ण हैं। संदर्भ है—अध्यापकों के मुख्य कर्त्तव्य और सेवा में शुभ प्रार्थना।

इस समय ऐसी शाला, सरस्वती मंदिर या प्रेरणाधाम का जिक्र प्रस्तुत है; जिसका संबंध एक सतयुगी प्रधानाध्यापक से है। श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सदानन्द, सज्जन) पंचायत समिति हनुमानगढ़, राजस्थान के गौरव हैं। आप क्या हैं ? इनको लिखने में लेखनी अशक्त है। मात्र समझाने हेतु कहा जा सकता है कि सज्जन पूर्वजन्म के

आलस्य भिक्षा की पूंजी और समस्त बुराइयों की जड़ है !

करेगी ।

जहाँ तक 'सज्जन' जी का सम्बन्ध है, उनके कार्य मापदण्डहीनता में भी उनकी कर्मनिष्ठा की महक इस क्षेत्र को सुवासित करती हुई भविष्य में मार्गदर्शन का स्रोत रहेगी, ऐसी मेरी मान्यता है ।

'सज्जन' जी के रचनात्मक कार्यों का विवरण सदा-सदा समाचार-पत्रों में प्रकाशित होता रहता है । कार्यालय तथा वाटिका का निर्माण केवल इनके एकाकी प्रयत्न का ज्वलन्त उदाहरण है, जो कर्तव्यविमुख और समस्याओं से ग्रस्त अध्यापकों के लिए एक प्रश्नचिह्न उपस्थित करती है, और एक संकेत देती है कि अध्यापकों की बहुमुखी समस्याओं का समाधान सरकार और समाज में नहीं वरन उनकी ही अन्तर्शक्ति में निहित है ।

देवीप्रसाद उपाध्याय
संचालक
बालमन्दिर, श्रीगंगानगर
२७-२-६६

अनुकरणीय आदर्श

श्री सज्जन जी का अभिनन्दन करने का आयोजन

नामी, कोई, बगैर मशक्कत, नहीं हुआ सौ बार
अक़ीक़ कटा, तब नगीं हुआ !

मानव क्या इस पनपते पारिजात को समझने-संवारने की चेष्टा करेगा । अगर वह, यहाँ की एकाग्र सीख, मौलिक कृति एवं परिकांक्षी नियंता को मिल कर कुछ ले तो वह बेमिसाल देन साबित होगी ।

"सेनानी" पत्रिका
बीकानेर
१८-२-६६

सत्प्रेरणा का स्रोत

भाई "सज्जन" जी की ५६वीं वर्षगांठ पर इस सत्प्रयास के लिये आयोजक बधाई के पात्र हैं। कर्मठ पद-चिन्हों का अनुसरण कर उनके त्याग एवं श्रमनिष्ठा का सम्मान कर प्रशस्त राजपथ का निर्माण करना समाज के हितचिन्तकों का कर्त्तव्य होना चाहिये जहां भी जिस किसी कोने में प्रकाश की चिनगारी मिले उसे संजोना जागरूकता का लक्षण है। आशा है कि इस क्षेत्रीय राजपथ पर चलकर भावी पीढ़ियां अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कुछ सम्बल प्राप्त

अज्ञान शिक्षा की कुंजी और समस्त बुराइयों की जड़ है !

करेगी ।

जहाँ तक 'गजनन' जी का सम्बन्ध है, उनके कार्य साधनहीनता में भी उनकी कर्मनिष्ठा की महक इस क्षेत्र को सुवासित करती हुई भविष्य में प्रेरणा का स्रोत रहेगी, ऐसी मेरी मान्यता है ।

'गजनन' जी के रचनात्मक कार्यों का विवरण यदा-कदा समाचार-पत्रों में प्रकाशित होता रहता है । कार्यालय तथा वाटिका का निर्माण केवल इनके एकाकी प्रयत्न का ज्वलन्त उदाहरण है, जो कर्तव्यविमुख और समस्याओं से परास्त अध्यापकों के लिए एक प्रश्नचिह्न उपस्थित करती है, और एक संकेत देती है कि अध्यापकों की बहुमुखी समस्याओं का समाधान सरकार और समाज से नहीं वरन उनकी ही अन्तर्शक्ति में निहित है ।

देवीप्रसाद उपाध्याय
संचालक
बालमन्दिर, श्रीगंगानगर
२७-२-६६

अनुकरणीय आदर्श

श्री गजनन जी का अभिनन्दन करने का आयोजन

उनके कार्य क्षेत्र के कुछ गणमान्य कार्यकर्ताओं ने किया है। शिक्षक वर्ग के लिये यह बहुत ही उत्साह-प्रद कार्य है। समाज में शिक्षकों को उचित स्थान मिलना ही चाहिए। राष्ट्र का नवनिर्माण इसी पर निर्भर करता है । प्रयास श्लाघनीय है। संयोजक बधाई के पात्र हैं।

सज्जन जी ने अपने प्रयत्न से ग्रामीण जनता में शिक्षा का जो आदर्श उपस्थित किया है, वह अनुकरणीय है। शिक्षक बंधु अपने-अपने सीमित क्षेत्रों में यदि इसी प्रकार उत्साह एव लग्न से कार्य करें तो शिक्षा प्रसार का कार्य अति शीघ्रता से हो सकता है।

आपका त्याग भी अनुकरणीय है। आपने अपने सीमित साधनों से धन संचय कर सर्वस्व विद्यालय में लगा दिया है। विद्यालय ही उनके लिये सर्वस्व हैं। आप तन, मन, धन से शिक्षा प्रसार में संलग्न रहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप रिटायर होने के बाद भी शिक्षा प्रकार में इसी प्रकार सहयोग देते रहेंगे और ग्रामोत्थान में अपना शेष जीवन लगायेंगे। भगवान आपको दीर्घायु प्रदान करें।

आट्टूराम वर्मा
एम. ए., बी. टी

हानि क्या है ? समय पर चूक जाना अथवा समय खोना ही हानि है !

एडमिनिस्ट्रेटर एवं विकास अधिकारी,
महर्षि दयानन्द महाविद्यालय
श्रीगंगानगर
२७-२-६६

परोपकाराय सताम् विभूतयः

राष्ट्र निर्माता में गम्भीरता, नम्रता, कर्त्तव्यनिष्ठता, दूरदर्शिता, मृदुलता, धार्मिकता, तर्कशीलता, सत्यवादिता, मिष्ठभाषिता व परोपकारिता आदि गुणों का समावेश होना अनिवार्य है। श्री सदानन्द "सज्जन" प्रधानाध्यापक चक हरिरामवाला (मंघूवाला) में उक्त गुण महकती हुई उपवाटिका के सदृश समाये हुए है । आपका अध्ययन अगाध पांडित्य लिए हुए है, तथा आपकी दृष्टि बड़ी पैनी है। जब आप अपने शिष्यों का अध्यापन करवाते हैं, उस समय छात्र आपकी हृदय-स्पर्शी वाणी को सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। आप गुरुकुल के कुलपति के समान अध्ययन, अध्यापन में पूर्ण प्रवीण है। "सादा जीवन उच्च विचार" आपके जीवन के आभूषण है। मानवमात्र का कल्याण एवं अज्ञानता रूपी तिमिर को दूर करना ही आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य है । "सज्जन" जी ने

स्नेह क्या है ? सद्भावना रखना ही स्नेह है !

साहित्यिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का मंथन करके जन-कल्याण हेतु अपनी मौलिकता द्वारा अनेक अनूठी कृतियां प्रकाशित करवायी हैं। "उदार चरित्र वालों के लिए समस्त विश्व ही अपने परिवार के तुल्य होता है।" 'सज्जन' जी भी इसी सज्जनता की साकार मूर्ति हैं। आपने अपना समस्त जीवन राष्ट्रोत्थान एवं दलित वर्गों के उत्थान हेतु लगा रखा है। आप "आराम को हराम" मानते हैं। अहर्निश राष्ट्र-कल्याणार्थ संलग्न हैं।

मैं परमपिता परमात्मा से मनोभिलाषा करता हूं, कि ऐसे कर्मयोगी सत्पुरुष शतायु बनें जिससे राष्ट्र की ज्ञान रश्मि प्रस्फुटित होती रहे।

मेहरचन्द शर्मा
शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर, साहित्यरत्न
राजकीय उ० प्रा० पाठशाला
डवली राठान

प्रेरणा-पुष्प

"गुरुजनो ! नेत्र खोलो (देखो) और श्री सज्जन जी

चतुराई क्या है ? धर्म ज्ञान में लगना ही चतुराई है !

जीवन-चरित्र को देखो। इनके तपस्वी जीवन से प्रशिक्षण प्राप्त करो और जगत का कल्याण करो।"

मैं भी आप सब शिक्षकों के साथ प्रशिक्षित शिक्षक हूं। आओ ! सब मिलकर जगत में शिक्षक की प्रतिष्ठा को सज्जन जी के जीवन से शिक्षा लेकर, फिर से स्थापित करें। श्री सज्जन जी के गुणों को ग्रहण करें और गुणों का समाज में—विद्यार्थियों में प्रचार करें। इनकी सज्जनता, सच्चाई, सरलता, सहनशीलता, धैर्यता, मित्रता, लगन, दृढ़ता, विद्वता, नम्रता, प्रेम और करुणा के गुणों को अपने में धारण करने का संतत प्रयत्न करें।

इनके साधु स्वभाव की छाप प्रत्येक व्यक्ति पर स्वभाविक ही पड़ जाती है, जिसका मैं एक उदाहरण हूं। इनका सादा रहन-सहन और पोशाक अनुकरणीय है।

विनीत
मुरलीधर गोयल
शुभचिंतक
हनुमानगढ़ टाउन
१-३-६६

जिसने "मैं कौन हूँ" जान लिया, वह निस्संदेह 'मोक्ष-पद' पा लेगा !

—सज्जनामृत

···बेड़ा पार हो जावे

आज मैं श्री सज्जन जी से मिली। आप से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। ऐसे कर्मयोगी और त्यागी महापुरुष से मिल कर बड़ी हिम्मत मिलती है—कुछ करने की और कुछ बनने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य सन्मार्ग की ओर अग्रसर होता है। ऐसे तपस्वी त्यागी शिक्षक गांव गांव में पहुंच जावें तो गांवों का डूबता बेड़ा पार हो जावे। भगवान ऐसे महापुरुषों का साया हमारे ऊपर बनाए रखे और इनकी कार्यक्षमता को चौगुना बनाए।

शकुन्तला गुप्ता
मुख्य अध्यापिका
बाल विकास विद्यालय,
हनुमानगढ़ टाउन

यह आमंत्रण

चलो चुनौती दें मिल कर अब,
हम सारे संसार को।

परमार्थ में स्वार्थ न देखो । स्वार्थ मनुष्य को मदांध बना देता है ।

उठो संभालो, आगे बढ़ कर
सदानन्द पतवार को ।
पापड़ों की काली छाया, धरती पर न शेष रहे
महानाश के प्रेरक मत का तनिक नहीं अवशेष रहे ।
मिटे वाद भेदों के बन्ध, युग का नवनिर्माण हो
मनुज मनुज के अन्तर में अद्भुत सज्जन का गान हो ।

स्वर्ग बने यह वसुन्धरा
बस ऐसी राह सवार दो ।
वीर बचाओ प्रलय लहर से
मानव को मधु प्यार दो ।

सज्जन ने हमको मार्ग दिखाया
जीवन का सम्मान का ।

मृत्यु पंथ से बचा सभी को
बतलाया पथ ज्ञान का ।
ज्ञान एकता का संगी है
विघटन मृत्यु निमन्त्रण है ।

छोड़ो पशुता लघुता अपनी
सबको यह आमन्त्रण है ।
दिया सज्जन संदेश न भूलो
जागो बाग संभाल लो ।

निर्मल कीर्ति-प्राप्ति के लिए त्याग श्रेष्ठ है !

उठो संभालो आगे बढ़ कर
सदानन्द पतवार को ॥

अवधेशसिंह कुशवाह
बाल विकास विद्यालय
हनुमानगढ़

God bless him !

I know Shri Sadanand (Sajjan) for fifteen years. He has a fad for writing and great zeal to reform the society. His sermons are very useful if we act upon them. We admire people for their wealth and station and seldom respect if they are great of heart. Truth, Beauty and Goodness which are the supreme virtues are never admired by us in practice. Sadanandji having these virtues in his character looms in darkness. His moral and ethical writings

are balm for the society if they are practised in day-to-day life.

May Almighty God bless him with long life so that he may fulfil his mission.

SAHIRAM
Headmaster
Govt. Middle School
Dulmana.

सुख वर्षा-मंदिर क्या, कैसा ?

मैं श्री सज्जन जी को कुछ वर्षों से जानता हूं। कभी कभी उनसे मिला करता हूं। अब कुछ रोज हुए मैं वहां पास से गुजर रहा था तो मेरे मन में 'गुरु जी' (योगेन्द्र पाल जी) के दर्शन करने की लालसा हुई। तो वहां सज्जन जी द्वारा स्थापित कार्यालय व उपवन देख प्रसन्नता का अनुभव किया। उपवन की सुन्दरता तथा कार्यालय की स्वच्छता पाकर मन को सुख-शान्ति प्राप्त हुए। उनकी रचना 'सज्जन-अमृत' के भी दर्शन पाये। उसमें अंकित

दिल्लगी ऐसी न करो जो दुखकर हो !

"सुख वर्षा-मंदिर क्या, कैसा ?" नामक अध्ययन में आया। जिसकी वास्तविकता यथार्थ पायी। जैसे कि उपरोक्त शीर्षक सम्बन्ध शब्द सेवा में उपस्थित हैं:—

"सुख वर्षा-मन्दिर क्या, कैसा ?"

ऐसा मन्दिर, वही, समझें जहां सुख-शान्ति मिलें। अंकित वहां, ऐसी बातें। प्रकाश जो दिन-रात, डालें। परिणाम : खराबियां सब भागें। तन्दुरुस्ती आदि सब आवें ! यही चीज, सब चाहवें। तो सुख-वर्षा-मन्दिर, पधारें ! सुख-वर्षा, निश्चय, पावें ! अजमा पावें—अजमा पावें !

लीजिये—सज्जन-कार्यालय में अनेक महापुरुष-चित्रों के नीचे, ये बातें, अंकित—'राह के रोड़े ? अर्थात बाधक कौन ? राह के सहारे ? अर्थात सहायक कौन ? आलस, स्वार्थ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, द्वेष, राग, अहंकार, उत्तेजक व मादक वस्तु-सेवन, अशुभ चिन्तन, ईश विस्मरण—ये ही बड़े भारी बाधक, जीवन-मार्ग और कल्याण-मार्ग में ! विपरीत—इनका परित्याग कर इन्हीं के स्थान, पुरुषार्थ आदि प्राप्त होने, बड़े ही सहायक; दोनों ही मार्गों में। विद्याहीन नर पशु समाना 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम् !' 'सफाई रखोगे, तो निश्चय सुख और आनन्द पाओगे !' इत्यादि शब्द, कार्यालय को एक श्रेष्ठ शिक्षालय ही नहीं बतला रहे, अपितु एक श्रेष्ठ शिक्षा-मन्दिर रूप एक सुख वर्षा-मन्दिर ही

सकल पदारथ हैं जग माहीं। कर्महीन नर पावत नाहीं॥

दिखता रहे। क्योंकि देखो, स्वास्थ्य आदि सभी ही सुख, इन शब्दों से, पाते जा रहे। भली-भांति न देखो—न विचारो, तो हां तो देख लीजिये, दुख, सब पा रहे। कहो तो, नहीं ?

अर्थात् समझदार मनुष्य तो ऐसे मंदिर से सुख, लाभ प्राप्त कर रहे। और ऐसे इस कार्यालय को सचमुच ही एक गुप्त धर्म-मन्दिर पा रहे ! कितना भेद, जो भाई-बहन देख-जान भी, लाभ नहीं कर रहे। और, यह उनका नसीब। क्या करें, सब, सेवक गरीब ? पर, फिर भी, सेवक तो यत्न व प्रयत्न बनाये ही रखें। कि कभी तो किसी भाई बहन को अवश्य यहां, लाभ हो सके। ऐसी आशा—पूर्ण आशा। सर्वांश भी जान रहा !

अब अन्त में मैं अधिक न लिखकर संक्षेप में ही कहना चाहूं कि भगवान् सज्जन जी के ऐसे श्रेष्ठ भावों को फली-भूत करे।

परसोतम दास शर्मा,
स. प्र. पा., बहलोलनगर

मेरे श्रेष्ठ गुरुदेव

मैं प्राथमिक कक्षाएं (५ तक) इन्हीं गुरुजी के

पढ़ा हूं। ये अच्छे तथा प्रेम से पढ़ाते हैं। इन्हीं के पढ़ाने से मैं चतुर हुआ हूं। इनके उत्तम विद्या-शिक्षा से भी मुझे बहुत लाभ हुआ है। वैसे इनकी लिखी पुस्तकें मैं समय मिलने पर अवश्य अध्ययन किया करता हूं जिससे शब्द-ज्ञान के साथ-साथ ऊंचे दर्जे की खुशी भी पाता हूं।

फिर इन्होंने स्कूल का भवन बनाने की प्रेरणा ही नहीं दी, बल्कि खुद भी इन्होंने अपने खर्च से एक बढ़िया कार्यालय का भी निर्माण किया तथा साथ ही सामने एक अच्छा बाग भी लगाया है। सचमुच ऐसे गुरु कभी नहीं आये और न ऐसे आगे कभी आयेंगे। इन्हें मेरे बारबार प्रणाम ! बल्कि यह दोहा कहे बिना भी मैं नहीं रह सकता—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागों पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय ॥

कृष्ण कुमार, कक्षा ८
रा० मा० पा०, दुलमा

शिक्षा जगत का चमकता सितारा

सदानंद "सज्जन" जैसे महानात्मा के लिए मेरे अं

अज्ञान मन की रात है, लेकिन ऐसी रात जिसमें न चांद, न तारे !

— कन्फ्यूशियस

मानव के लिए लिखना असम्भव है फिर भी मेरी अन्तरात्मा की पुकार है जिसको कि भौतिक युग का मानव अवश्य पहचानेगा।

आप सात साल से चक हरिरामवाला मे अध्यापक पद पर सेवा-कार्य कर रहे हैं। मुझे भी आपके द्वारा बनाया हुआ शाला कार्यालय व सुन्दर उद्यान देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

कार्यालय सज्जन जी ने अपने अर्थ व हाथों से बनाया है तथा कार्यालय को एक सुख-वर्षा मन्दिर का रूप प्रदान किया है। आपने अपना सर्वस्व जनता की भलाई में लगा दिया। आपकी रचित पुस्तकों को पढ़ने का भी अवसर मिला। आपकी रचनाए शिक्षावर्द्धक तथा सब के लिए उपयोगी हैं। आपकी रचनाओं का प्रत्येक शब्द अमृततुल्य है तथा हर मनुष्य को रास्ता दिखाने वाला है। आपकी भाषा-शैली बडी आसान तथा मार्मिक है जिसको पढकर मानव लाभ उठा सकता है। आपने उन सब मे वास्तविकता को ही अधिक महत्त्व दिया है।

अतः मैं ईश्वर से मंगलकामना करता हूं कि सज्जनजी दीर्घायु हों और वे अधिक से अधिक सेवा-कार्य करते रहे तथा शिक्षा-क्षेत्र आपके अमूल्य योगदान का लाभ उठा सके।

लोकहिताय जीवन जिसका—वह है सच्चा ब्राह्मण !

—स्वामी विवेकानन्द

फूलसिंह गोदारा

मु० अ०. प्रा० पा०, बहलोलनगर

सेवक अध्यापक

चक हरिरामवाला तहसील हनुमानगढ़ जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) की शाला के अध्यापक श्री योगेन्द्रपाल जोशी (सदानन्द, सज्जन) की सेवा-भावना स्तुत्य है जिन्होंने अपने अल्प वेतन में से २५०० रुपये बचाकर स्कूल का एक कक्ष बनवाया है।

देश में जब तक ऐसे अध्यापक न बनेंगे तब तक देश के करोड़ों बालकों की शिक्षा की व्यवस्था समुचित रूप में न हो सकेगी। उनकी ५६वीं वर्षगांठ पर उन्हें अभिनन्दन-ग्रन्थ देने पर मुझे प्रसन्नता है।

केशवानन्द

ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया

(राजस्थान)

ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है !

ये, हमारे गुरुवर !

मैं तथा मेरे सहपाठी सभी (अन्य पाठशालाओं के भी—जहां जहां ये पढ़ाते रहे) इन्ही गुरुओं के प्रताप (गुरुअध्यापन, गुरुशिक्षा) से सफल व उन्नत हुये है तथा हो भी रहे है। हम इनके आभारी तो हैं ही, ऋणी भी हैं। जिस किसी से एक भी अक्षर सीखो, वह भी अपना गुरु होता है। और ये तो हैं ही सचमुच हमारे उम्रभर के सबसे श्रेष्ठ गुरु कि जिन्होंने हमें अनेक ही अक्षर और अनेक शिक्षाएं प्रदान की हैं और कर रहे है। अन्य अध्यापक महोदय तो प्रायः अक्षर-ज्ञान ही करें, इन जैसी उत्तम शिक्षा कहां ? खैर, वे भी तो हमारे अच्छे गुरु है कि जिन्होंने हमें बहुत कुछ विद्या-दान दिया है। उनके भी तो हम आभारी है।

अन्य कितनी परेशानी की बात है कि मैं देखता हूं कि कुछ लोग हमारे इन गुरुदेव की गतिविधियों को देखते हुए भी प्रायः गलतफहमी में देखे जाते है, अफसोस, उन्हें मालूम नहीं कि ऐसे ही गुरुदेव—ऐसे ही व्यक्ति-विशेष ही तो समाज को, देश को बनाने वाले होते हैं ! गलतफहमी करने वाले लोग समय पा, हमारे इन गुरुदेव को समझ सकेंगे। और कुछ लोग तो, तब, मनोमन लज्जित भी होवेंगे—ऐसा मैं समझता हूं। समझदार मनुष्य तो सभी हमारे इन गुरुजी के सुन्दर निर्माण कार्यों से ही इनके गुणों का सही अनुमान लगाते है, और इनकी बहुत कदर और बड़ी सराहना कर

कुछ लोगों की दशा चक्की के समान होती है, वे पीसते दूसरों को हैं और चिल्लाते स्वयं हैं !

— रामकृष्ण परमहंस

रहे हैं। जिनमें मैं भी तो हूं तथा मेरे अन्य सहपाठी भी। इन्हें, यह अभिनन्दन ग्रथ, भला, भेंट क्यों किया जा रहा है ? इनके सुन्दर विचारों तथा सुन्दर कार्यों के कारण ही तो। और फिर यह ग्रंथ भी तो पाठकों को बड़ा ही प्रेरणादायक सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। शेष एक विशेष बात यह भी है कि इन गुरुजी ने एक कर्मचारी होते हुए निर्माण-कार्य किया जो इनके बड़े योगदान और त्याग का निस्संदेह एक श्रेष्ठ उदाहरण है। अब तक किसी कर्मचारी ने ऐसा निर्माण-कार्य शायद ही किया होगा। आगे का तो क्या कहूं ?

बाकी, मैं तो भगवान् से प्रार्थना करता हूं, कि हमारे ऐसे गुरुजी को हमेशा तन्दुरुस्त और चिरायु करें, ताकि ये और भी अधिक सेवा-कार्य करते रहें।

भागीरथ गोदारा,
पटवारी, मक्कासर

सज्जनता की मूर्ति

मैंने सन् १९६१ से १९६७ तक पंचायत समिति

उसे किसी दूसरी माला की आवश्यकता नहीं; जिसके जीवन का धागा प्यार और विचार के मनकों से पिरोया हुआ है !

हनुमानगढ के अन्तर्गत ग्राम पचायन डबली राठान में सचिव पद पर कार्य किया। सचिव के नाते पचायत समिति में आना-जाना नित्य-प्रति का कार्य था अर्थात् किसी न किसी अध्यापक से परिचय होता रहता था।

परन्तु जो सज्जनता, शीलता, आत्म-निर्भरता, निर्भीकता, सदाचार, इस महापुरुष में देखा वह अन्यत्र नही। हमारी संस्था प्राथमिक कन्या पाठशाला के, मुख्य होने के नाते हमारा परिचय थोडे समय पूर्व इनके साथ हुआ। इनकी सज्जनता से इतना प्रभावित हुआ कि शायद ये हमारे शत वर्षों से परिचित हों। इनके विचार सुनकर मेरा मन मन्त्र-मुग्ध हो उठा।

क्या ही अच्छा हो कि हमारे प्रिय भारत के समस्त अध्यापक इनकी सज्जनता, शीलता, लगन से शिक्षा प्राप्त करें।

विद्वानो के विचार पढ कर, उनके सम, मेरे पास शब्द नही। मेरी इच्छा है कि अवकाश प्राप्त करने के बाद भी सज्जन जी देश-सेवा मे रत रहे ताकि भावी सन्तान शिक्षण-मार्ग पर चलकर, देश-राष्ट्र का सिर ऊंचा कर सके।

अन्ततः मेरी लेखनी मे इतनी शक्ति नही कि 'सज्जन' जी के बारे में कुछ लिख सकू। दीर्घायु हों ! मेरे देश, मेरे

'सादा जीवन और ऊँचे विचार' निस्संदेह सदा बहार–सदा बहार !

—सज्जनामृत

प्रान्त के ऐसे भावी राष्ट्र-निर्माता—ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है ।

दिवानचन्द नूम्बर
भूतपूर्व सचिव, ग्राम पंचायत
डबली राठान (हनुमानगढ़)
जि० श्रीगंगानगर

एक प्राचीन ज्योति

ऋग्वेद की भूमि में तुमने लिखा है। इसलिए मुझे याद आ गया, कि मैं कई बार सोचता हूँ कि एक ऐसी संस्था के निर्माण का जहाँ वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों की चर्चा हो सके। क्या आप लोग इस दिशा में कुछ प्रयास कर सकेंगे? अध्यापकों और ऋषियों का सम्मान करते हुए वे ऋषि याद आते हैं जिनके मस्तिष्क में वेद की ऋचाएं उतरी थी। मेरा ऋषि-तुल्य अध्यापक महानुभाव से सादर अभिनन्दन कहें। ऋषित्व की प्राप्ति के लिए हम सब प्रयत्नशील रहें, यही मेरी प्रभु से प्रार्थना है। वेद शास्त्र विद्यापीठ जैसी संस्था बने जहां बैठ कर प्राचीन ज्योति अगली पीढ़ी तक पहुंचा सकें।

संगीत से क्रोध मिट जाता है।
—महा० गांधी

गौरीशंकर आचार्य
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

मेरे भी तो गुरु

हालांकि मैं इनके पास पढा नही। पढा या सीखा, तो केवल ऐसे, कि छः वर्षो से हमारी दुकान पर अपनी आवश्यक वस्तु खरीदने आ रहे है। तब-तब इनके मिलन-वर्तन (बोल-चाल, खान-पान, रहन-सहन) से मैं बहुत प्रभावित होता रहा। और फिर आज सौभाग्य से इनका हमारे रात्रि-विश्राम हुआ, तो मुझे अपने बड़े भ्राता जी से इनके सबध में और भी जानकारी मिली कि अपने इलाके के लोग, इन्हे, इनके निर्माण-कार्यों अर्थात् त्याग व सेवा के कारण एक अभिनन्दन ग्रन्थ ६ दिसबर, १९६९ को (५६वी वर्षगांठ पर) भेंट करने का कार्यक्रम बना रहे हैं। इस समाचार से जहाँ मुझे प्रसन्नता हुई, वहाँ उत्सुकता भी हुई कि मुझे भी ऐसे ग्रन्थ के जरूर दर्शन हों तब मेरे उक्त भ्राता जी ने सचिव—"सज्जन-अभिनन्दन-ग्रथ-समिति" से इस ग्रन्थ के दर्शन उपलब्ध कराये जिसका मैं बड़े प्रेम से दो घंटे तक अध्ययन करता रहा। फलस्वरूप मुझे एक सत्प्रेरणा प्राप्त हुई तथा मन में एक उमग पैदा हुई। मुझे भी कुछ

हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे अपना नाश हो। क्योंकि हम ही अपने बन्धु और हम ही अपने दुश्मन हैं!

—भगवान् [illegible]

[illegible]

ाराम हराम है, काम में आराम है !

—जवाहरलाल

करें नमन् तुम्हें तभी

हे सज्जन—सत्य प्रेमी,
सत्पुरुष—सत्य - सेवी ।
सचमुच, सर्व-हितैषी,
निस्सदेह प्रेरणा देवी ।
तुम हो त्याग-मूर्ति,
शान्ति के प्रति-मूर्ति ।
तुम हो कर्म-योगी,
मानो एक तपस्वी ।
तुम साधक-ईश - भक्ति,
-ली, -दी, न्यारी शक्ति ।
करें नमन् तुम्हे तभी,
और पायें आशीष सभी ।

संयोगिता देवी, भन्दी

सज्जन-जीवनी

कौन-सा दिन होता है और कौन-सी तारीख जिसमें

भेदभाव छोड़ दो ! दिल से दिल को जोड़ दो !

बालक के जन्म नहीं होते पर इन जन्म लेने वाले बालकों में कोई-कोई ऐसा भी होता है जिसके जन्म के कारण उसे जन्म देने वाली तिथि इतिहास में स्मरणीय हो जाती है। २ अक्टूबर गांधी को जन्म देकर, १४ नवम्बर पं० जवाहरलाल नेहरू को जन्म देकर जो पद पा गई, वही पद ६ दिसंबर १९१४ की तिथि श्री सदानन्द जी "सज्जन" को जन्म देकर अमर पद पा गई है। यह घटना ग्राम कुलथम जिला जालन्धर में हुई।

श्री "सज्जन" ब्राह्मण वंश के पुष्प, बचपन में योगेन्द्रपाल जोशी नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आपने अपनी माता बसंत देवी और पिता श्री रामलाल शर्मा से रूपवान और बलिष्ठ व्यक्तित्व पाया। आपके पिता राज्य कर्मचारी पटवार पद पर राज्य सेवा करते थे और माता बसंत देवी बसंत ऋतु की भांति जीवन भर गृहस्थ कार्य में सौंदर्य बिखेरती रहीं।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" वाली कहावत चरितार्थ करते हुए आपका बचपन भविष्य की भूमिका रहा। आपने अपने भविष्य की भूमिका की सफलता की छाया अपने माता-पिता से ग्रहण की। आपकी माता आदर्श महिला थीं।

श्री योगेन्द्रपाल जोशी की शिक्षा 'फराला' गांव के प्राइमरी स्कूल में आरम्भ हुई। आरम्भ में ही ये सर्वश्रेष्ठ

छात्र सिद्ध हुए। अपने अध्यापकों के प्रति वे बहुत श्रद्धालु रहे और साथियों के प्रति दयालु। एम० डी० ए० हाई स्कूल जालंधर में आपने किशोरावस्था एवं विद्यार्थी जीवन की झांकी अवलोकित की। इस प्रकार १९३२ में अपनी लगन से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर हाई स्कूल शिक्षा समाप्त की।

शिक्षा ग्रहण कर कुशल नवयुवक की भांति अपने माता-पिता के कार्यों में सहयोग देना शुभारम्भ किया। गांव के सीधे-सादे जीवन का प्रभाव आपके जीवन पर गहराई से पड़ा। आप "सादा जीवन और उच्च विचार" में आस्था रखते थे। उनमें जो वृत्तियां बचपन से ही झलकने लगी थी, उनमें से एक थी मित्रता की वृत्ति, सहपाठी तो उनके मित्र थे ही पर बड़ों बड़ों से भी वे मित्रता जोड़ते थे।

सन् १९४२ में आपकी शादी एक सुन्दर, सुशील एवं व्यवहार-कुशल ब्राह्मण कन्या से हुई। अपना गृह-कार्य अपने ही कंधों पर सम्भाला। आपने प्रारम्भ में व्यापार किया और १९४५ से १९४६ तक रेलवे विभाग में अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। लोकप्रियता के जिस शिखर पर वे अपने जीवन में पहुंचना चाहते थे वह व्यापार-कार्य से सम्भव न था अतः आपने अध्यापन-कार्य में रुचि ली।

अध्यापन-कार्य के साथ-साथ आप धार्मिक वृत्ति को निखारने के लिए सत्संग भी किया करते थे। आपकी एक-मात्र संतान एक पुत्री है जो आपकी आशा का प्रतीक बनकर

उज्ज्वल करती रही है। आपकी सूझ-बूझ और चतुरता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है—अपना साहस और सन्तुलन कभी न खोना। दुर्भाग्यवश आपकी धर्मपत्नी सन् १९५९ में आपसे सदैव के लिए बिछुड़ गई और चिर निद्रा में सदा के लिए सो गई।

श्री योगेन्द्रपाल जी जोशी की अध्यापन में रुचि, धार्मिक कार्यों में लगन और लोकहित-कार्य ही अपने जीवन का अध्याय रहा। अध्यापन-कार्य को स्वेच्छा से अपनाकर अपने पवित्र हृदय की आवाज को गम्भीर घोष के स्वर में अध्यापक के रूप में गुंजाया। आपने अध्यायन-कार्य एक आदर्श अध्यापक के रूप में आरम्भ किया और जो व्यक्ति मात्र आपके सम्पर्क में आये उन पर आपकी असाधारण प्रतिभा तथा बड़प्पन का गहरा प्रभाव पड़ा। आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय अनूपगढ़, २८ एच, मनकासर में जो शिक्षा-कार्य किया उसकी मधुर स्मृति आज भी उन शालाओं में बनी है। इसके अतिरिक्त राजकीय प्राथमिक शाला ५ जी, श्रीनगर (श्रीकरनपुर), चक २ आर० बी०, जोड़कियां और रणजीतपुरा शाला वातावरण में जो सुखद उल्लास, प्रेरणा और लगन से कार्य किया उसको क्रमशः शालाएं कदाचित् न भुला सकेंगी।

आजकल आप प्राथमिक शाला मथुराला में बड़ी ही तल्लीनता और शालीनता से शाला के अध्यापन का प्रातः-

ब्रह्मचर्य खुशकिस्मती की सीढ़ी का पहला डंडा है !

—क० हरनामदास

स्मरणीय रवीन्द्रनाथ टैगोर के स्वप्न को साकार करने मे अनवरत रूप से प्रयत्नशील हैं। मेरे अनुभव एवं विचार से इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी कि शाला के बच्चो को सभ्य बनाना सीखें श्री 'जोशी' जी के शांति-निकेतन मथूवाला से। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि श्री जोशी स्वयं बहुत सज्जन और सभ्य पुरुष हैं। इन्ही गुणो की बाहुल्यता के फलस्वरूप आपका उपनाम "सज्जन" पड़ा। शाला मे पढ़ाई, अनुशासन, सफाई, स्वच्छता और सहयोग के लिये श्री जोशी जी का बालकों को ताड़ना तो दूर रहा कभी नन्हे मुन्नों को कहना भी नहीं पड़ता और इसका एकमात्र कारण है आपका प्रेरणा से लबालब भरा जीवन !

वर्तमान शाला की चहुंमुखी प्रगति कराने का श्रेय है आपकी तत्परशीलता को। शाला का सुन्दर एवं आकर्षक कार्यालय, मनमोहक वाटिका और सुखद वातावरण सचमुच आपके कोमल और बलिष्ठ हाथों मे एक जोरदार दस्तखत हैं। शिक्षा जगत में यह आदर्श सदैव प्रकाशमान रहेगा।

सफल एवं आदर्श अध्यापक का गुण है—साहित्य मे रुचि और अपनी मौलिक रचनाओं द्वारा अपनी सरस्वती देवी की आराधना करना। श्री "जोशी" इस गुण को भी अपनी विलक्षण बुद्धि से अपने निखार पर लाने मे सफल रहे। आपकी रचनाएं—आध्यात्मिक हैं। 'शांतिया विश्व

वेद कतेब, कहो मत, झूठे झूठा वह, जो न विचारे !

कल्याणकर", "उत्तम पुस्तक दर्शन," "सज्जन-कवितावली," "सुखकर कहानियां," "भवसागर से पार" और "सज्जन-अमृत" मुख्य हैं।

यह बड़े संतोष की बात है कि श्री "सज्जन" जी के जीवन की उपलब्धि "सज्जन अभिनन्दन-ग्रन्थ" रचना का रूप धारण कर शिक्षा जगत में गणतन्त्र भारत की शालाओं के लिए एक अनूठी देन होगी। सज्जन अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति का प्रयास तो प्रशंसनीय ही कहा जायेगा।

होतीलाल शर्मा
एम० ए०, बी० एड०
प्रधानाध्यापक, रा० उ० प्रा० शाला
चान्दना, जिला श्रीगंगानगर

गांव मथूवाला, धन्य !

इस वक्त पढ़ाई के मुख्य जुम्मेवार गरु लोग हैं। जिस तरफ देखता हूं तो पढ़ाई का हाल बुरा है। पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले अच्छे भी हैं—इसमें शक है। मुझे मेरे साथी श्री रामचन्द्र ने श्री योगेन्द्रपाल (सज्जन) की जानकारी दी। मैंने सज्जन जी के दर्शन किये हैं। वे और उनके कामों के बारे में सुनकर जी कहता है कि मास्टर जी की पाठशाला
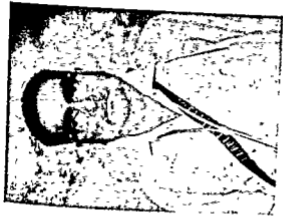
श्री होतीलाल शर्मा
प्रधानाध्यापक, चाडना (पदमपुर)

श्री नारायणदास
अध्यक्ष, न्याय पचायत, सतीपुरा

कुमारी आशारानी कालड़ा,
मुख्याध्यापिका, स्वनी राठान

श्री रोशनलाल, भम्बी
श्रीमती संयोगितादेवी, भम्बी

कुमारी आशारानी कालड़ा,
मुख्याध्यापिका, डबली राठान
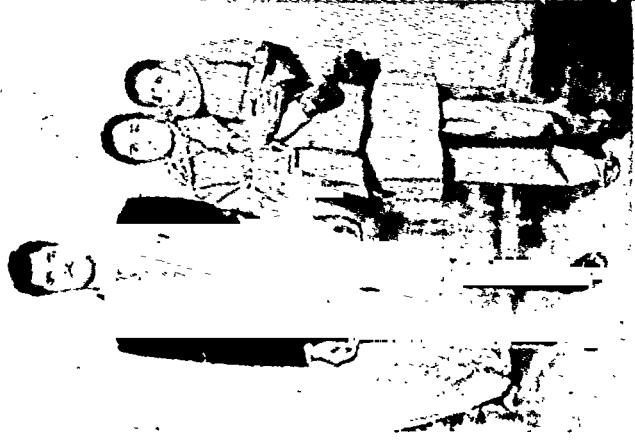
श्री रोशनलाल, भम्बी
श्रीमती संयोगितादेवी, भम्बी

धर्म और कर्म को छोड़ कर दुनियां में कोई भी सुख और शांति से नहीं रह सकता!

को भी देखूं। मुझे तो हैरानी है कि इस जमाने में सज्जन जैसे परोपकारी हैं। इनका गांव मधूवाला धन्य है। वे बच्चे जो इनसे पढ़ते हैं खुश-किस्मत हैं। यहां से निकले विद्यार्थी देश के लाल साबित हों। मास्टर जी के सम्मान में—अभिनन्दन में मेरी बधाई!

नारायणदास
अध्यक्ष
न्याय पंचायत, सतीपुरा
पो० हनुमानगढ़ (जि० श्रीगंगानगर)

आत्मबल बनाम हमलावर

हमारे ग्रन्थों में कुछ अद्वितीय चमत्कार पढ़ने को मिलते हैं। महर्षी के सामने हिंसक जानवर अपना स्वभाव छोड़ते देखे गये हैं। ऋषियों पर हत्यारों के शस्त्र चल नहीं पाते। भक्तों पर कसाइयों की चालें फेल हो जाती हैं। ऐसी ही एक घटना हम सज्जन जी के जीवन में देख-सुन कर हैरान हो गये। कई साल पहले सज्जन जी एक पाठशाला में अध्यापन-कार्य में डूबे हुए थे कि एक शराबी शाला में आना

यह किसी तरह साबित नहीं होता कि इन्सान को कुदरत ने गोश्त खाने के लिए बनाया है !

—प्रो० जान-ए०

है और वह सज्जन जी पर हमला करने को उतारू होता है। सज्जन जी निर्भय खड़े हैं। उधर से हमला करने वाला हिम्मत-पस्त हो जाता है। जैसे उनकी तपस्या के द्वारा हमलावर की शक्ति कुण्ठित हो गई हो।

क्या यह दैवी प्रभाव नहीं ? निश्चय ही इसमें सज्जन जी का आत्मबल और ईश्वरीय विश्वास झलकता है।

दर्शक व श्रोता

शिक्षकों में अग्रगण्य

मैंने "सज्जन जी" को शिक्षकों में आगे पाया और देखा। उनके रहन-सहन, बोल-चाल और व्यक्तित्व को देख कर मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि जो उससे पूर्व ऐसे व्यक्तियों को देख कर अन्य किसी मानव से नहीं हुई।

इनकी दृष्टि शाश्वत गहराइयों को लिए हुए है। मानव को जो अधिकार प्राप्त हुए हैं और ईश्वर ने उसे जिस कर्म के लिए भूलोक में भेजा है तथा अपने को समझने का अवसर दिया है, उनमें से अपने आपको समझने वाले एक सज्जन जी हैं।

मुहब्बत उन्नति का रास्ता है ।

—टॉलस्टाय

"यतः आत्मवत् सर्व भूतेषुय पश्यति स पंडितः" के समान गुणों को रखने वाले "सज्जन जी" के दर्शन मैं कर सका। इससे मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूं।

सज्जन जी में वे गुण विद्यमान हैं जो एक महान् शिक्षक में होने चाहिएं। जैसे अध्ययनशील, कर्मठता, पवित्रता और सामाजिक विलीनता तथा गुरु-भावना वाले विचार जो शिष्य के प्रति होने चाहिए।

सज्जन जी को गर्व तो छू तक भी नहीं गया। लोभ को तो शायद उन्होंने दिल में धारण ही नहीं किया होगा। क्योंकि जो कार्य के बदले वेतन मिला उसका एक बड़ा भाग गांव के बच्चों की शिक्षा पर लगा दिया जिसका जीता-जागता उदाहरण चक हरिरामवाला (मश्रूवाला) गांव की पाठशाला को देखने से मिल जाता है। बच्चों को कर्म का पाठ स्वयं अपने हाथों द्वारा पेड़-पौधे के लगाते हुए दिया।

इनके द्वारा मिला ज्ञान कौन पुरुष छोड़ सकता है अर्थात् इनकी शिक्षा छोटों से बड़ों तक को ज्ञान देकर अंधकार से प्रकाश को प्राप्त कराने योग्य है। जैसे पुरुषार्थी, विवेकी, सहनशीलता, उदारचित परिश्रमी और शाश्वत काल को देखने वाला आदि। इनकी लिखी रचनाएं अति उत्तम विचारों से परिपूर्ण है, जिनमें आज के युग की बुराइयों को निकाल कर अच्छाइयों के मार्गदर्शन का सही

...ग सकेगा न दुनियां के भोग, बच्चा ! भोग लेंगे तुम्हें बच्चा !

—माता-राजा गोपीचन्द

नमूना प्रस्तुत कर दिया है।

मैं आशा करूंगा कि एक सच्चे शिक्षक के रूप में इन्हें देखकर अन्य शिक्षक भी अपने को ऊंचा उठाने में सफल हो सकेंगे।

मैं ईश्वर से शुभ मनोकामना करता हूं कि "सज्जन जी" की आयु और बढ़ायें ताकि अध्यापक-बन्धु उनके जीवन का अनुसरण करके अपने आपको सद्मार्ग पर लायें।

डुलीचन्द 'भूंवाल'
अध्यापक
निवासी मिर्जावाला
(श्रीगंगानगर)

एक सत् पुरुष अध्यापक

आप हैं सदानन्द 'सज्जन' श्री योगेन्द्रपाल जोशी। जैसा आपका पवित्र नाम है वैसे गुण भी आपके जीवन में रवि की तरह द्युतिमान हो रहे हैं। आप चिरकाल से प्राथमिक पाठशाला चक हरिरामवाला में प्रधानाध्यापक पद पर आसीन होकर जन-कल्याण व नव-निर्माण कार्यों में पूर्ण

जिस व्यक्ति की कथनी और करनी अलग-अलग है, वह ईमानदार कैसे हो सकता है ?

रूप से जुटे हुए हैं। इनके गुणों का वर्णन करना तो मेरे लिए असम्भव है। इनका उल्लेख करने हेतु लेखक की लेखनी व शब्द चाहिये। मैं हरिरामवाला के समीप की कन्या पाठशाला डबली में अध्यापन-कार्य कर रही हूं। जब कभी भी इनके दर्शन होते हैं तो आत्मा को सच्ची शान्ति की अनुभूति होती है। आपका और मेरा सम्बन्ध पिता-पुत्री का है। आप सर्व स्त्री जाति को मातृवत् समझते हैं। आप हमेशा बड़ी को माता, समआयु को बहिन तथा छोटी को पुत्री तुल्य समझते हैं। आप पुरुषों के लिए ही नहीं नारी-जाति के लिए भी आदर्श हैं। आप में बात करने की कला अनोखी है। आप कभी भी किसी से हंसी-मजाक वाली वार्तालाप नहीं करते। आपकी बात का प्रत्येक शब्द तथ्यपूर्ण तथा वास्तविकता को लिए हुए होता है। हर मानव को उपदेश देना तथा पथ-भ्रष्ट का मार्ग प्रशस्त करना आप में एक महान् गुण है। आप जब कभी शाला में प्रवेश करते हैं आपकी उपदेशात्मक बातों को सुनकर मन में इतनी उत्सुकता होती है, जी चाहता है आप उपदेश करते रहें और आपके पवित्र शब्दों को मैं श्रवण करती ही रहूं।

आपने जो सेवा-सुधार का काम आरम्भ कर रखा है वह सदा सफल हो। मैं वाहे गुरु से प्रार्थना करती हूं, कि श्री 'सज्जन' जी मानव-जाति का कल्याण करते हुए दीर्घायु को प्राप्त हों।

गौ आदि पशुओं के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनों का विनाश हो जाता है !

—महृ० दयानन्द

महेन्द्र कौर सैनी
सहायक अध्यापिका, कन्या पाठशाला
डवली राठान

श्रद्धा-सुमन

श्रद्धेय सज्जन जी को अभिनन्दन-ग्रन्थ देने का विचार एक शुभ विचार है । सज्जन जी देश के एक निष्ठावान उत्साही सेवक हैं। उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या के साथ जनता-जनार्दन की सेवा का भी ध्येय अपने सामने रखा है। ये जहां भी रहे, सेवा-कार्य में रत रहे हैं। विशेषतः उनके हृदय में ग्राम-निवासियों के उत्थान की लगन सदा बनी रही। हरिरामवाला विद्यालय में एक बार जाना हुआ था। वहां की भव्य और विशाल इमारत को देखकर तथा वहाँ के कन्या गुरुकुल की सुव्यवस्था और हर क्षेत्र में काम सुचारु रूप से चलता देखकर मैं सज्जन जी की कार्य-शक्ति का अन्दाज कर सकी। स्त्रियों की शिक्षा आप बहुत जरूरी समझते हैं। इसलिये विद्यालय स्थापित करने में इतना भारी प्रयत्न किया है। ऐसे कार्यशील, निःस्वार्थ श्री सज्जन जी के जीवन का हाल लिखकर जनता के सामने आएगा, उससे

जानवरों को खुराक के लिए कत्ल करना रहमदिली के खिलाफ है !

— भगवान बुद्ध

जनता को काफी पथ-प्रदर्शन मिलेगा।

सरोज जोशी

शिक्षकों के शिक्षक

श्री सज्जन जी का परिचय मेरे एक परम मित्र द्वारा हुआ। इनके सम्पर्क में आने से मैं अति प्रभावित हुआ हूँ।

इनके विचार व प्रवचनो मे अति आनन्द आता है। इसलिये मैं अधिक समय इनसे मिलता रहा। ये चक हरिरामवाला में सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं जो कि जिला गंगानगर राजस्थान में है। वहाँ इन्होंने विद्या भवन के मध्य मे एक भव्य कार्यालय का निर्माण किया तथा एक अति सुन्दर उपवन लगाया है।

इससे यह सिद्ध होता है कि इनमे कितना त्याग और सेवा-भावना है तथा यह भी कि कैसे सफल अध्यापक हैं। इनके त्याग व सेवा को देखकर तो इलाके के लोग इनके सम्मान मे एक "सज्जन-अभिनन्दन ग्रन्थ" तैयार कर रहे हैं जिसे कि वे इनकी ५६वीं वर्षगांठ पर भेंट करने वाले हैं।

इस ग्रन्थ से मेरे विचार मे अन्य अध्यापकों को तथा जनता को भी अत्यन्त प्रेरणा मिलेगी क्योंकि यह ग्रन्थ एक

नेक ही मुहब्बत गुणकर तथा सुखकर होती है !

—सज्जनामृत

आदर्श शिक्षक का जीवनी-रूप ही है। और ऐसी उत्कृष्ट जीवनी से पाठक भला क्यों नहीं लाभान्वित हो सकेंगे ?

मैं श्री सज्जन जी से निवेदन करूंगा कि अवकाश-प्राप्ति के पश्चात् वे अपनी सेवायें निजी शिक्षा-संस्थाओं को दें।

परम पिता परमात्मा से मैं प्रार्थना करता हूं कि इन्हें चिरायु करें ताकि यह जनता की और भी सेवा करते रहें।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी
फायरमैन, लोको शैड, गुना
(मध्य प्रदेश)
दि० १२-६-६९

एक सफल गुरु

श्री योगेन्द्रपाल जोशी, जो 'सज्जन' नाम से भी पुकारे जाते हैं, गत छः वर्षों से मेरे सम्पर्क में रहे हैं। आप २० वर्षों से शिक्षा-विभाग में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं। आपकी शाला में प्रवेश करते ही प्रत्येक बुद्धिजीवी को प्राचीन गुरुकुल का स्मरण हो आता है और आपसे साक्षात्कार कर बरबस श्रद्धा के भाव उभर आते हैं।

अगर आपके दिल में स्फूर्त नहीं है, तो बाहर स्फूर्त की खोज करना बेकार है !

आपकी सादी वेश-भूषा, शिष्ट व्यवहार एवं मृदु वाणी का जादुई प्रभाव आगन्तुक को विवश कर देता है कि वह अधिकाधिक समय तक आपके उपदेशों का पान करे ।

आप यद्यपि अप्रशिक्षित अध्यापक है किन्तु आपको एक सफल गुरु कहना अतिशयोक्ति नही होगी । अध्यापन में आप बालक की मनोवृत्ति का विशेष ध्यान रख कर विषय-वस्तु के प्रति आकर्षण उत्पन्न कर उसे ज्ञान देते हैं । आपका अध्यापन-कार्य कक्षा के कमरे तक ही सीमित नही रहा है। शाला प्राङ्गण के प्रत्येक भाग में आपके द्वारा लिखे गये सदुपदेशों के अंश बालको को क्रीड़ा के समय भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। अभिभावको से घनिष्ठ सम्बन्ध निरन्तर बनाये रखकर शाला समय के अलावा भी आप बालकों का ध्यान उनके घरों में भली प्रकार से रखते है ।

अध्यापन-कार्य का क्षेत्र पाठ्य-पुस्तकों तक ही सीमित न रख कर आप बालको के बौद्धिक-विकास के साथ-साथ शारीरिक एवं नैतिक विकास का भी पूर्ण ध्यान रखते हैं। आपके छात्र स्वच्छता के प्रति जागरूक तथा अनुशासनप्रिय एवं नम्र हैं । जिन गुणों का विकास आप छात्रों मे चाहते हैं उनका प्रदर्शन आप स्वयं मूर्त रूप में प्रस्तुत करते हैं।

समाज-शिक्षा कार्यक्रम में भी आपने पूर्ण-उत्साह से

जो शुद्ध चित्त से कार्य करता है, उसकी कामनाएं सफल होती हैं !

भाग लेकर प्रौढ़-शिक्षा को सजीव रखा। प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र द्वारा आपने ग्रामीणों को अक्षर-ज्ञान ही नहीं दिया अपितु धार्मिक उपदेशों द्वारा उनमें नैतिकता का भी विकास किया। यह कार्य आपका स्थानीय जनता तक सीमित न रह जावे इस उद्देश्य से आपने अपने उपदेशों एवं विचारों को गद्य एवं पद्य के रूप में लेखबद्ध कर जन-साधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया।

आपकी कृतियां आज के पथ-भ्रष्ट मानव को विश्व-शान्ति का संदेश देती हैं।

शिक्षा-प्रेम आपका अद्वितीय रहा है। वर्तमान शाला के भवन-निर्माण में जहाँ ग्रामीणों का सहयोग प्राप्त हुआ वहाँ आप भी पीछे नहीं रहे। आपने अल्प वेतन में से बचत कर ३००० रुपये व्यय करके एक श्रेष्ठ कार्यालय का निर्माण कराया।

शाला प्राङ्गण को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के लिए आपने स्वयं श्रम करके फलों के एवं छायादार पेड़ों को लगाया और उनका पालन-पोषण किया।

पंचायत-राज व्यवस्था के अन्तर्गत ग्रामीण विकास कार्यक्रम में अध्यापक को प्रकाश-पुञ्ज माना गया है जिसका मूर्त रूप आप हैं। आपने अध्यापक से अपेक्षित कर्तव्यों का

ऐ परमात्मा ! हम फानी लोग तुम लाफानी प्रभु को बहुत से नामों से याद करते हैं !

—ऋग्वेद

नहीं रूप से पालन कर अन्य अध्यापकों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। आपका अनुकरण कर अध्यापक-वर्ग देश की प्रगति में ही सहायक नहीं होगा अपितु अपने खोये हुए सम्मान को समाज में पुनः प्राप्त करने में सफल होगा।

श्री सज्जन जी को उनके सेवा-निवृत्त होने के अवसर पर क्षेत्र के शिक्षा-प्रेमियों की ओर से अभिनन्दन-ग्रंथ भेंट किया जा रहा है – यह बडी ही खुशी का विषय है और यह उनका यथोचित सम्मान है।

मैं अभिनन्दन समारोह की मंगल-कामना करता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप चिरायु हों और इसी प्रकार देश तथा समाज की सेवा करते रहें।

मदनचन्द कौशिक
शिक्षा प्रसार अधिकारी
हनुमानगढ
दिनांक ३१ जुलाई १९६९ ई०

हकीकत एक है, मगर बयानात में इखतलाफ है !

समाज शिक्षक के कार्य और उत्तरदायित्व को समझे !

श्री 'सज्जन' जी का उनके छप्पनवें जन्म-दिवस पर अभिनंदन का आयोजन किया जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ। गुरु को उचित मान मिलना ही चाहिए। श्री सज्जन जी अपने सेवा-काल में जन-सेवा, समाज-सेवा, ग्रामोत्थान-साहित्य-सेवा और जन-शिक्षण के कार्य में रत रहे हैं। राष्ट्र की उन्नति सज्जन जी जैसे शिक्षकों पर निर्भर है। संस्कृति और सभ्यता की धारा को निरन्तर प्रवाहित रखने, उसे उच्चतम स्तर पर ले जाने का एकमात्र साधन शिक्षा है और शिक्षक शिक्षा-प्रक्रिया की धुरी है अतः यह आवश्यक है कि समाज शिक्षक के कार्य और उत्तरदायित्व को समझे और स्वीकार करे अभिनन्दन समारोह के आयोजन का यही उद्देश्य है। आज के युग में जब आर्थिक मूल्यों का ही प्रभुत्व है इस प्रकार का आयोजन अपना विशेष महत्व रखता है।

मैं श्री सज्जन जी के अभिनंदन समारोह की सफलता के लिए हार्दिक कामना करता हूँ।

सत्य प्रकाश सूद, व्याख्याता
एम० ए०, एल० टी०, एम० एड०.

उस प्रभु से ही चारों तरफ जिन्दगी हासिल करती हैं !

—अथर्ववेद

व्याख्याता

गुना (मध्य प्रदेश)

दिनांक १४-६-६६

शिक्षक-दर्शन

श्री सदानन्द जी 'सज्जन' शिक्षक राजस्थान से प्रथम भेंट का संक्षिप्त परिचय क्या व्यक्तित्व और कृतित्व की दृष्टि से और क्या अन्तर और वाह्य दृष्टि से सम्पूर्ण अर्थों में केवल शिक्षक, शिक्षक और शिक्षक दर्शन प्राप्त कर अपने को धन्य समझा । आज भी देश में कतिपय विभूतिया ऐसी हैं जो गुरुपद की गौरवपूर्ण-परम्परा को स्थिर रखे हुए हैं । समाज आज भी सच्चे गुरुओं का सम्मान करने मे पीछे नही । अत: आपको अपने ५६वें जन्म-दिन के उपलक्ष मे जो अभिनंदन-ग्रन्थ प्रस्तुत किया जा रहा है, वह सर्वथा न्यायोचित और समीचीन ही है । हमारे अन्य शिक्षक-बन्धुओं को उनके आदर्शों से प्रेरणा, स्फूर्ति और प्रोत्साहन मिले, यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है ।

विनयराम शर्मा

एम० ए०,एल० टी०

जिन्दगी एक फूल की मानन्द है, जिसके अन्दर शहद प्रेम का होता है !

—विक्टर हियोग

सेवा निवृत्त आचार्य
शासकीय उच्चतर विद्यालय,
पिछोर (ग्वालियर) म० प्र०
वर्तमानः – सरस्वती विद्यालय, गुना
दिनांक २४-६-१९६९

प्रेरणादायक ग्रन्थ

श्री सज्जन द्वारा लिखित साहित्य जन-साधारण को प्रेरणादायक है, तथा समस्त पुस्तकालयों में संग्रहीत कर विद्याध्ययन करने वालों को अत्यन्त लाभदायक साहित्य सिद्ध होगा।

मुझे आपके द्वारा रचित साहित्य के कुछ अंश पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ, जो अत्यन्त सरल, उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण हैं।

जनता द्वारा उनके ५६वें जन्म-दिवस पर अभिनंदन ग्रन्थ भेंट किये जाने के शुभ-समाचार से मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव करता हूं कि एक सुयोग्य, कर्मठ शिक्षक को मान देना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। हम आज गौरव का अनुभव करते हैं कि इस प्रकार समय समय पर समाज-सेवी

हमेशा यह सोचो कि पड़ौसी, नौकर, कुत्ते वगैरह सारे जानवर और सारे के सारे इन्सान सुख से सोयें। —ऋग्वेद

शिक्षकों को बराबर समाज द्वारा आदर दिया जाता रहेगा। सज्जन अभिनन्दन ग्रन्थ प्रेरणादायक है जो सभी पुस्तकालयों में उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं अपनी ओर से उस परम शक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह श्री सज्जनजी को दीर्घायु प्रदान करे और अधिक समाज सेवा करने का अवसर दे।

केवल कृष्ण चतुर्वेदी
एम० ए० (इतिहास), डी० एल० एसी०
पुस्तकालयाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, गुना
(मध्य प्रदेश)

उच्च कोटि के शिक्षक, साहित्यकार

अप्रत्याशित रूप से श्री सदानन्द जी 'सज्जन' निवासी गंगानगर प्रान्त राजस्थान से गुना में भेंट हुई एवं आपके कृतित्व के बारे में उनके पास प्राप्य लेखन-सामग्री के माध्यम द्वारा परिचय मिला। उक्त परिचयात्मक लेखन सामग्री को राजस्थान के संभ्रान्त नागरिकगण सज्जन

तुम एक दूसरे की हिफाजत करो और एक दूसरे के मददगार बनो !

—यजुर्वेद

अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने जा रहे हैं। श्री सज्जन के दर्शन मात्र से ही मैं प्रभावित हुआ एवं मुझे उनमें एक उच्च कोटि के शिक्षक, साहित्यकार, वेदान्ती, समाज-सुधारक के विशिष्ट गुण देखने को मिले। शिक्षक उच्च कोटि के समाज का नियन्ता है, ये बात श्री सज्जनजी के क्रियाकलाप जो रहे हैं, उससे स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। श्री सज्जन ने जिला गंगानगर में स्थित शाला के प्रधानाध्यापक पद पर रहकर जो विभिन्न प्रकार के निर्माणकार्य करवाये हैं वह उनकी सहयोगात्मक प्रवृत्ति का एक अद्भुत नमूना है। उदाहरण के रूप में आपने शाला हरिरामवाला में निजी व्यय द्वारा एक विशाल भव्य कार्यालय का निर्माण करवाया, दो बीघा जमीन में एक सुरम्य वाटिका का निर्माण स्वयं नाना प्रकार के पौधों को अभिसिंचित करके किया है। ये आपकी लगनशीलता एवं कष्ट-सहिष्णुता का अनोखा आदर्श प्रस्तुत करता है। आपने अपने अवकाश के क्षणों में अपनी शक्तिशाली लेखनी द्वारा अध्यात्म-परक ग्रन्थों का सृजन किया, जो कोटि-कोटि पाठकों को पारायण के अवसर ही प्रदान नहीं करता अपितु इन ग्रन्थों का पारायण करके पाठक लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के ज्ञान का संवर्धन ही नहीं करता है किन्तु एक अलौकिक आनन्द की उपलब्धि भी होती है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि ऐसे कर्मयोगी

नेक काम कर और देवता (फरिश्ता) बन जा !

—अथर्ववेद

वास्तविकता का पता लगा कि गाँवों का शिक्षा स्तर उठाने में अपना जीवनदान या कहें योगदान देने वाले विद्यमान हैं जिनका परिश्रम सही मानों में शिक्षा-सुधार है और श्रेष्ठ कदम है। इसके साथ-साथ अध्यापक श्री पूर्णसिंह की भी याद आ रही है जो लेखक व शिक्षा प्रसारक विशेषकर गाँवों में हैं। आज का समाज अध्यापक के प्रति अविश्वसनीय है। वह भूख में लड़ते हुए भी अपने कर्त्तव्य पर डटा रहता है और राष्ट्र के राष्ट्र-निर्माता, कर्णधार तैयार करता है। विद्वान् तो कहा करते हैं (उन पर लागू नहीं है) कि Simple living and high thinking लेकिन 'मज्जन' पर वास्तव में इसका प्रभाव है।

मुझे आज स्वयं सांसारिक नियम और भाग्य की विडम्बना पर आश्चर्य हो रहा है कि विद्यार्थियों की सेवा करने वाले सेवा से मुक्ति प्राप्त कर रहे हैं; वह भी बिना चाहे और उधर अबोध बालकों के हृदय अनाथ होते प्रतीत होते हैं। "मिट गया मिटने वाला फिर सयाम आय तो क्या ! दिल की बरबादी के बाद पयाम आया तो क्या।"

आपने अथक परिश्रम से शिक्षा जगत् में बालक रूपी पौधों को सुचारु रूप से संवारा है, जैसा कि माली का कर्त्तव्य है। उनका त्याग, ऊंचा भाव उनके बलिदान के प्रति आदरमूलक है; लेकिन इस ऊंचा भाव यथार्थ पर आश्रित

वह जबान गरांवहा (बहुमूल्य) है, जो ईश्वर की और खिदमते खुल्क (मानव सेवा) की बातें कहती है !

—बिलावल म० ५

एक नींव कीं ईंट ने अपना सर्वस्व अंधेरे में रख कर साथियों को उजाला दिया है और मैं आशा करता हूं कि इसी प्रकार उजाला देते रहेंगे तथा ऐसे महापुरुष का अभिनन्दन हमारा कर्त्तव्य है।

इसके साथ ही कामना करता हूं कि सज्जन जी स्वस्थ रहें एवं चिरायु हों ताकि आदर्श-प्रमाण रहें।

कर्त्तव्य पालन में,

राम कुमार जानी
विकास अधिकारी,
पंचायत समिति, हनुमानगढ़
दिनांक अगस्त ११, १९६९ ई०

उत्कृष्ट प्रकाश-स्तम्भ

(जीना हमें नहीं क्योंकि मृत्यु निश्चित है और मरना हमें आता नहीं क्योंकि मृत्यु से डरते हैं।)

मुझे स्वयं को अनुभव हुआ जब मैंने एक वाटिका में प्रवेश किया तो मुझे स्वामी केशवानन्द जी की याद आई। इसी विस्मोदना में कल्पनाओं से घिरा आगे बढ़ा तो

नेक काम कर और देवता (फरिश्ता) बन जा !

—अथर्ववेद

वास्तविकता का पता लगा कि गाँवों का शिक्षा-स्तर उठाने में अपना जीवनदान या कहे योगदान देने वाले विद्यमान हैं जिनका परिश्रम सही मानों में शिक्षा-सुधार है और श्रेष्ठ कदम है। इसके साथ-साथ अध्यापक श्री पूर्णसिंह की भी याद आ रही है जो लेखक व शिक्षा प्रसारक विशेषकर गाँवों में हैं। आज का समाज अध्यापक के प्रति अविश्वसनीय है। वह भूख से लड़ते हुए भी अपने कर्त्तव्य पर डटा रहता है और राष्ट्र के राष्ट्र-निर्माता, कर्णधार तैयार करता है। विद्वान् तो कहा करते हैं (उन पर लागू नहीं है) कि Simple living and high thinking लेकिन 'सज्जन' पर वास्तव में इसका प्रभाव है।

मुझे आज स्वयं सांसारिक नियम और भाग्य की विडम्बना पर आश्चर्य हो रहा है कि विद्यार्थियों की सेवा करने वाले सेवा से मुक्ति प्राप्त कर रहे हैं; वह भी बिना चाहे और उधर अबोध बालकों के हृदय अनाथ होते प्रतीत होते हैं। "मिट गया मिटने वाला फिर सयाम आये तो क्या ! दिल की बरबादी के बाद पयाम आया तो क्या।"

आपने अथक परिश्रम से शिक्षा जगत् में बालक रूपी पौधों को सुचारु रूप से संवारा है, जैसा कि माली का कर्त्तव्य है। उनका त्याग, ऊंचा भाव उनके बलिदान के प्रति आदरमूलक है; लेकिन इस ऊँचा भाव यथार्थ पर आश्रित

बदएमाल आदमी कभी राहत नहीं पा सकता !

—ऋग्वेद

होकर ठोस बन जाये। दूसरे शब्दों में अध्यापकों की नयी पीढ़ी, इनके कामों से प्रेरणा लें। "युग बीतेंगे, हम आप न होंगे, पर यह ग्रन्थ तब भी प्रभावपूर्ण रहेगा।" पढ़ाने में वे अक्षरों का ज्ञान कराने वाले मास्टरजी नहीं हैं, वे जीवन का निर्माण करने वाले आचार्य हैं। संस्कार बनाने की उनकी कला है, ये उपासक जीवन, एक श्रेष्ठ प्रशिक्षक की झलक हैं अर्थात् उनके द्वारा शिक्षा जगत् में सत्य शिक्षा के रूप में एक ज्योति की झलक प्रकाशमय है तो मानव का अंधेरे में ठोकर खाना व्यर्थ प्रतीत होता है जब कि मार्ग-दर्शक सामने होते हुए समझने की भूल कर रहा है।

फूलसिंह, अध्यापक
(मंत्री, रा० शि० संघ, हनुमानगढ़)

ऋषि-तुल्य अध्यापक

प्रधानाध्यापक चक हरिरामवाला (मथूवाला) के आध्यात्मिक विचार, निःस्वार्थ भावना, सीधी सादी वेश-भूषा तथा कर्मठता को देखकर प्राचीन ऋषियों की स्मृति हुए बिना नहीं रह सकती।

बदएमाल शख्स इन्सान नहीं कहला सकता !

— ऋग्वेद

श्री सज्जन जी प्राचीन गुरु अष्टावक्र जी के सदृश दृष्टिगोचर होते हैं। आज का युवक वर्ग व्यक्ति के सद्गुणों को नहीं देखता किन्तु उनकी दृष्टि व्यक्तित्व तथा वेश-भूषा तक ही सीमित है। ऋषि अष्टावक्र जी का शारीरिक गठन व सौन्दर्य विशेष न था, लेकिन उनकी बुद्धि विलक्षण तथा ज्ञान अगाध था। एक बार जनकपुरी के राजा जनकजी ने सब विद्वानों तथा ऋषियों को ज्ञान-परीक्षा करने हेतु अपने राजभवन में आमंत्रित किया। उक्त अवसर पर प्रकाण्ड पंडित, ऋषिजन सभा में पहुंचे। महाराज ने पधारे हुए विद्वानों से कहा कि ऐसा विद्वान ऋषि सिंहासन पर विराजे जो मुझे कम से कम समय में ज्ञान दे सके। महाराज के वचन सुनते ही सभा में सन्नाटा छा गया। सब ऋषिजन तथा विद्वान एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। सभा का वातावरण तथा ऋषि-विद्वानों का अपमान देखकर ऋषि-गुरु अष्टावक्र जी राजसिंहासन पर विराजमान हुए।

ऋषि-गुरु के सिंहासन पर बैठते ही विद्वान सभा में बवंडर छा गया। पधारे हुए विद्वान ऋषिदेव की खिल्ली उड़ाने लगे। क्योंकि ऋषि अष्टावक्र जी डील-डौल तथा वेश-भूषा में सुन्दर न थे। विद्वान-मंडली का ऐसा हाल देखकर ऋषि अष्टावक्र जी बोले, हे राजन ! आपने चमड़े तथा हड्डियों के व्यापारी, सभा में क्यों आमंत्रित किये हैं ?

आपस में लड़ने झगड़ने वाले मौत के गार में गिरते हैं !

—अथर्ववेद

इस पर जनकपुरी के महाराज बोले—ये चमड़े के व्यापारी नहीं, ये विद्वान हैं। प्रत्युत्तर में ऋषिदेव ने कहा—हड्डियों तथा चमड़े की परीक्षा करना चर्मकार का काम है, न कि विद्वान का। विद्वान का काम तो अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से अज्ञान रूपी आच्छादित अंधकार को दूर करना है। इन्होंने मेरे डील-डौल, रूप-रंग की परीक्षा की है, मेरे ज्ञान और बुद्धि को नहीं परखा। ततपश्चात् महाराज जनक ने निवेदन किया, हे ऋषिदेव ! हां अब ज्ञान दीजिए ! तदुपरान्त गुरु अष्टावक्र जी बोले कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिष्य बनना पड़ता है तथा गुरु की आज्ञानुसार कुछ बलिदान करने पड़ते हैं। महाराज बोले, तथास्तु ! गुरुदेव ने कहा, हे राजन आप संकल्प कीजिये, मैं तन-मन-धन गुरु से ज्ञान प्राप्त करने हेतु गुरुजी के चरणों में भेंट करता हूं। महाराज जनक ने तीनों वस्तुओं को भेंट करने का सभा के समक्ष संकल्प किया।

इसके पश्चात् कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिष्य को नीचे बैठना पड़ता है गुरुदेव की आज्ञानुसार महाराज जनक नीचे पृथ्वी पर बैठ गए। इस समय जनकजी के मस्तिष्क में कई प्रश्न—एक के पश्चात् एक उठने लगे। राजा जनकजी का मन राजमहल, कोष तथा राज-सिंहासन की ओर आकर्षित होने लगा।

सब जानदारों को यकसां समझने से झगड़ा और फिसाद मिट जाता है !

— भासा, कबीर

अन्तर्यामी ऋषि अष्टावक्र जी ने कहा कि हे राजन् ! आपका मन सांसारिक (क्षणिक) सुखों की ओर क्यों चलायमान हो रहा है ? हे राजन, सांसारिक सुखों की सब वस्तुओं का तो आप त्याग कर चुके हैं । हे शिष्य, अब संसार में परमपिता परमात्मा के सिवा तेरा दूसरा सहायी नहीं है। ऋषि-गुरु के ज्ञानवर्द्धक शब्द सुनकर राजा जनक पलकें बन्द करके अन्तर्धान हो गया । ऋषिदेव ने अपनी सर्वव्यापी दृष्टि जनकजी पर डाली । तेजवान दृष्टि पड़ते ही जनकजी को ज्ञान प्राप्त हो गया । ऋषिदेव ने मंत्रियों से कहा, अब महाराज को आवाज दीजिये । मंत्रियों ने. राजा जनक को काफी आवाजें दीं । लेकिन महाराज नहीं बोले, क्योंकि महाराज जनक का शरीर रूपी पिंजरा ही भू पर दृष्टिगोचर हो रहा था — उनकी आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जुड़ चुका था ।

जब महाराज जनक की चिरनिद्रा टूटी और उनकी पलकें खुली तब योगीराज ने राजा जनक को आशीर्वाद दिया और कहा कि हे शिष्य आपके द्वारा सकल्प की हुई सब वस्तुएं मैं आपको प्रसाद के रूप में पुनः देता हूं । इस प्रकार महाराज जनक के ज्ञान-चक्षु खोल कर ज्ञान की वर्षा करके अपने ज्ञान और बुद्धि का परिचय दिया । ऋषिराज राजा जनक जी से बोले, हे, शिष्य अब अपने राज-काज को

इन्तजाम, आराम ! इन्तजाम नहीं, आराम नहीं !

— सज्जनामृत

सम्भालिये। मेरे द्वारा दिये गए प्रसाद का उचित उपयोग करना क्योंकि परमपिता परमात्मा के सिवा इस संसार में अपना कोई सखा नहीं है । अतः इसको मन से कभी न भुलावें।

इस प्रकार अपने शिष्य-राजा को उपदेश देकर ऋषि-गुरु अष्टावक्र जी ने अन्य बन्धुवर ऋषियों के साथ ही सभा से प्रस्थान किया ।

ऋषि-गुरु अष्टावक्र जी के समान श्री सदानन्द सज्जन वस्तुतः ऋषि तुल्य गुरु कहलाने के अधिकारी हैं। आज का मानव-समाज अगर गुरुदेव से प्रेरणा ले तो अपना जीवन सफल बना तर सकते हैं । मानव-समाज के लिए ये ज्ञान प्रकाश-स्तम्भ से किसी भी प्रकार कम नहीं हैं। मैं परमेश्वर से इनके जीवन के लिए मंगल-कामना करता हूं।

हनुमान दास वर्मा, (भू० पू० पंच)
मु० डबली राठान

उत्तम समाज-प्रेरक

विश्व में जितनी भी महान् विभूतियां हुई हैं, उनका कोई न कोई आदर्श था। उन्होंने किसी न किसी सत् पुरुष से शिक्षा ग्रहण की है। और उनकी प्रेरणाओं के प्रताप से

नराहत घुट-घुट कर देती है मोहरत आते हैं
दुनिया उतना चाहिये नमक हो जितना खाते हैं।

[illegible]

मुनाफा, मूल राशि का चौथाई प्राप्त होना अच्छा है। डेढ़ा, दुगुना, चौगुना प्राप्त करना बहुत बुरा है।

—सज्जनामृत

कैसे वर्णन किया जाये···!

प्रीतमसिंह जोसन, अध्यापक
निवास स्थान १६ एफ, ज्वालेवाला
(तहसील करणपुर)

आओ साथी चलें···

आओ साथी चलें बाग में,
प्रकृति से प्रेम बढ़ाने को,
फूलों की खुशबू पाने को,
बहारों को गले लगाने को,
स्वर्ग सा आनन्द पाने को।

आओ साथी चलें बाग में,
गुरुवर के दर्शन पाने को,
अच्छी शिक्षा पाने को,
सब से मेल बढ़ाने को,
मानव धर्म अपनाने को।

आओ साथी चलें बाग में,
आओ उनको भेंट करें,
जिनने उनका बलिदान किया,

जग में तुम जब आये, जग हंसा तुम रोए।

सत्साहित्य से जन उपकार किया,
सुकर्मों से ही उपदेश दिया,
आप तो माली बने बाग मे।

जोगेन्द्रसिंह, रामगढ़िया "अध्यापक"
निवास स्थान—नाथवाना
(गंगरिया)

सज्जन जी की सादगी

सज्जन जी का त्याग एवं कर्त्तव्य-निष्ठा से मुझे हार्दिक खुशी हुई। सज्जन जी द्वारा अपने ग्राम मथूवाला में शाला भवन का निर्माण एवं छोटे से उपवन का लगाना उनके अमरत्व का संकेत है।

संयोजक-बन्धु उनको सम्मानित करने का श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। यह अन्य अध्यापकों के लिए भी प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मुझे स्वयं को सज्जन जी की मिलनसारिता एवं सादगी से एक आत्म-सन्तोष मिला। मैं सज्जन जी के

मायाधारी अन्हाँ, बोला शब्द न सुनें राम-घचोला !

—गुरु नानक

सदा स्वस्थ रहने एवं दीर्घायु होने की कामना करता हूं।

हेडमास्टर
गवर्नमेंट से० स्कूल
पीलीबंगा

एक प्रेरणाप्रद जीवन

राष्ट्रीय-उत्थान में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वही राष्ट्र-निर्माता है। आज के बालक ही कल के नागरिक होंगे।

अध्ययन की गंभीरता, कर्त्तव्य-परायणता, धैर्य, लगन, आत्मविश्वास, परिश्रम व हृदय की निश्छलता—अध्यापक के आवश्यक गुण हैं।

श्री सदानन्द जी 'सज्जन' का व्यक्तित्व इन गुणों से ओतप्रोत है व अध्यापकों के लिए प्रेरणाप्रद है।

मैं इनके भविष्य की मंगलकामना करता हूं।

एस० पी० सोनी
प्रधानाचार्य

जो वंड खाये, सो खंड खाये। जो कल्ला खाये, सो खेह खाये !

—गुरु नानक

नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय
हनुमानगढ़ टाउन
दिनांक २४-६-६६

सज्जन जी से भी शिक्षा नहीं ली तो...!

सज्जन जी से मेरा प्रथम परिचय लगभग दस साल पूर्व हुआ। उस समय से लेकर आज तक मैं इनके जीवन, कर्त्तव्य, वाणी एवं उपदेश से सीखता रहा हूं। इनकी सादगी और त्याग के मुकाबले में मुझे कोई सन्देह नहीं। इसी के सहारे तो आपने अपनी शाला में एक कमरा व बाल-वाटिका का निर्माण किया।

ऐसे अच्छे पुरुष का सम्मान होगा, यह जानकर अध्यापक समाज को गर्व ही नहीं बल्कि उसका मस्तक ऊंचा उठा है।

आज तक मैंने अध्यापकों को, पंचायत समिति के अधिक भले लोगों एवं सरकार द्वारा सम्मान देना सुना है। क्या वह चुनाव सही होता है ? लेकिन यह सम्मान समाज के द्वारा दिया गया है। यह है विशेषता और रोचकता ! मैं भी ऐसे अवसर पर अपनी सारी सद्भावनाएं उस समाज

सचाई ही तमाम दुनिया की बुनियाद है !

—सरदारीलाल 'नश्तर'

और सज्जन जी के चरणों में समर्पित करता हूं।

सुगनचन्द जोशी, अध्यापक,
सूरतगढ़ (गंगानगर)
दिनांक ७-१०-६९

"हे देवगण ! हम कानों से सदा कल्याण वचन सुनें, आंखों से सदा शोभन दृश्य देखें तथा सदा कर्म करते हुए पूर्णायु होकर जियें।"

कार्यालय नवयुवक संघ, मक्कासर

हनुमानगढ़ (श्री गंगानगर) राजस्थान

पत्रांक १८१ दिनांक १२-१०-६९

श्रीयुत सम्पादक,

"सज्जन-अभिनन्दन ग्रंथ समिति,"

चक हरिरामवाला

हमें यह जान करके अतीव प्रसन्नता हुई कि हमारे ही इलाके के एक सज्जन गुरु को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जा रहा है।

प्राकृतिक नियम-अनुसार, जीवन व्यतीत करोगे, तो निश्चय हमेशा तन्दुरुस्त व उन्नत रहोगे !

श्री 'सज्जन' जी एक अनमोल हीरे के समान है, जिनकी आज के कलुषित कार्यालय उनकी परख नहीं कर सके। इसी प्रसंग में कहा है—

शुद्ध होणी सरकार, मत होणा राखे मिनख।
अंध घोड़ी असवार, आं रो राम रूखालो राजिया॥

श्री योगेन्द्रपाल जोशी एक आदर्श अध्यापक है। मक्कासर के युवकों ने कुछ साल पहले आपके चरणों में बैठ कर शिक्षा ग्रहण की है। हमने आपको समीप से देखा-परखा है। आपके ऊँचे आदर्श घर से लेकर समाज तक एक जैसे थे। आपकी कथनी और करनी में जरा भी अन्तर नहीं था। बापू ने एक जगह इसे स्पष्ट किया है—"Ideals must work in practice, otherwise they are not potent."

हम शिक्षा जगत् को निवेदन करना चाहते हैं कि ऐसे नेक अध्यापक को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मान देना चाहिए। भगवान करे आप सौ साल तक हमारे देश को ज्ञान की ज्योति दिखाते रहें। सद्भावना के साथ—

विनीत
नवयुवक संघ, मक्कासर

सत्य, प्रेम आदि ही तो सद्व्यवहार ही तो हो !

मेरी रुचि की पंक्तियां

(१)

असल बनो, नकल नहीं। तब कोई खलल नहीं! बनावट करोगे, तो रुकावट करोगे। किसको ? अपने सुख को ! इसलिए संभलो, असल बनो—शुद्ध ही शुद्ध, फिर सुख ही सुख !

(२)

शांति यानी अमन-चैन में ही, काम होते और कदम बढ़ते ! बिन इस, देखलो, काम बिगड़ते और कदम पीछे ही पीछे हटते !

(३)

कमजोरियां इन्सान की, निस्संदेह गलतियां ही !
गलतियां, 'नियमों' से लापरवाहियां ही !

(४)

सत्संग से अपना लोक परलोक बनाओ !
सत्संग वही, जहां सचाई भलाई पाओ !

(५)

आज, विज्ञान का रस, सब फीका !
बनाया न जब विश्व-जीवन मीठा !

साइंस ने हमें हवा में उड़ना सिखा दिया। आदि

छात्र अध्यापक दोनों की आदतें अच्छी, तो पढ़ाई अच्छी, वरना गई-गुजरी !

आदि । लेकिन यह नही सिखाया कि हमें जमीन पर किस तरह रहना चाहिये ?

(६)

क्यों लगाये रे होड़ ?
अरे, वैज्ञानिक ! क्या उड़ान ? पा लेगा क्या भगवान् ?
कर आध्यात्म मे उड़ान ! तब, निश्चय पा लेगा भगवान् !
होगा कल्याण तेरा जहां, विश्व का भी होगा वहां !

(७)

कठिन शब्द-प्रयोग, कोई विद्वत्ता नही ! ऐसी विद्वत्ता से क्या लाभ ? जिसे समझने मे रहे अभाव ! अर्थात् कुछ लेखक शब्द जटिल अंकित करें, तो जनता कैसे समझे—कैसे दुख हरें ? अतः विद्वत्ता हो, तो ऐसी : सभी कदर करें—सभी के दुख हरें !

(८)

ईश्वर, माता-पिता, गुरु—इन-ऋण हम पर बड़ा !
जो अनेक जन्मों, हम से उऋण नही हो सकता !
तो कम से कम इसी जन्म ही यथा सम्भव !
उन्हें प्रसन्न रखना हमारे लिए अति आवश्यक !

हर काम में बचत और राहत जब हों दो—मेहनत और शराफत !

(९)

तू कौन ? क्यों आया ? मनुष्य ! कर्त्तव्य-हेतु आया !
सत् जानने, सुमरने आया। सत्कर्म, सर्वहित करने आया !
किंतु देख, क्या कर पाया ? अकर्त्तव्य ! ईश-भुलाया !
परिणाम भी तभी पाया, क्या ? दुख सभी पाया !
एह लोक परेशान पाया ! परलोक भी गंवाया !

(१०)

'धर्म' के अर्थ ही 'शुभ कर्म'। तो फिर शुभ कर्म ही धर्म !
हां, शुभ कर्म, नहीं, 'जिस धर्म'। कैसे कहूं 'धर्म' उस धर्म ?
वस्तुतः धर्म तो एक ही। नाम जिस, उपयुक्त 'मानव धर्म' ही

(११)

कौन संतजन करें शुभ प्रचार ?
जिन-जीवन सादा, ऊंचे विचार !
मानो, जिन-होगये दोष फरार,
और कर लिया सद्गुण-संचार !

(१२)

वह क्या इबादत, वह क्या दीनों ईमां ?
काम आये न जो इन्सां के इन्सां !
काम तो क्या, उलटा करे औरों परेशां !
कहो तो, वह इंसां ? निश्चय शैतां-शैतां !

स्वास्थ्य, संयम, सद्वर्तन हों यदि रहे फिर कुटुम्ब सदा सुखी, खुशी !

पाखड ही, उस-इबादत, दीनों इमां !
देखो नहीं क्या ? ऐसा, बगुले-समा !

(१३)

स्त्री को 'पैर की जूती' या 'दासी' समझना कितनी बडी नीचता ! हा, 'मातृ' यानी 'देवी' जानना-समझना-कहना कितनी श्रेष्ठ महानता !

(१४)

भला, वह सब से उत्तम रास्ता कौन-सा है ? उत्तम ही सोचना और बोलना ! आइये, उत्तमता की गहनतम पेचीदगियों में चलें। उसके बाद ही हमें सांसारिक सुख और सद्गति मिल सकेगी !

(१५)

केवल वही शरीर उत्तम या पवित्र है, जो शुभ विचारों से भरपूर है। ऐसे शरीर से खुशबू ही खुशबू (कीर्ति) आती है, जो अपने सपर्क मे आने वालो को बाग-बाग करती चलती है !

(१६)

असत्य, धूम्रपान, क्रोध, मद्यपान, स्तेय छोड दो। प्रात.-भ्रमण, स्नान, ईशविनय, स्वाध्याय, सत्कर्म नित्य

करो। यदि सदैव स्वस्थ रहना चाहते, और उन्नत, मुक्त होना चाहते !

(१७)

लापरवाही, तबाही ! यानी सेहत, ताकत, इल्म, अक्ल, वक्त, कारोबार, दौलत, कुटुम्ब, इज्जत और राहत—इन में, किसी में भी, लापरवाही करना, निश्चय ही उसे तबाह करना है ! इसलिए अपनी इन-तमाम बातों में लापरवाही मत करो, यदि उन्हें-सबको, कायम रखना और सुखी रहना मंजूर है !

(१८)

अपनी जरूरतें थोड़ी रखिये—आप रख सकते हैं !
अपनी इच्छाएं कम कीजिये—आप कर सकते हैं !
अनर्थ बातें छोड़ दीजिये—आप छोड़ सकते हैं !
सर्वेश्वर का भजन कीजिये—आप कर सकते हैं !
ये चार बातें कीजिये—आप कर सकते हैं !
फिर, निश्चय, संसार से भी, तर सकते हैं !

(१९)

हमारा एक-एक नेक काम, हमें उस मालिक-कुल की ओर ले जा रहा और पहुंचा रहा है ! लेकिन संभलो, हमारा एक-एक बुरा काम, हमें उससे उतना ही परे ले जा रहा-फेंक रहा है !

गत जीवन, जो हुआ सो हुआ। अब तो, शेष, उत्तम ही बिता !

—सज्जनामृत

(२०)

'सत्य' क्या है ? पहुंचे पुरुष मौन रहें !
लोग, भला, क्या जान समझ सकें ?
अपनी ही डींगें, वे, मारते रहें !
तभी तो, वे, वहां न पहुंच सकें !

(२१)

छात्र घर में एकान्त ही बैठ, अपना गृह-कार्य किया करें। तो ही, वे, देख लें, कार्य को भली भांति संपन्न कर सकें ! अन्यथा, नहीं !

(२२)

जब तक काम को हाथ से निकाला न जाये,
तब तक, उससे क्या कुछ मिल पाये ?
निराशा-असफलता ही, पल्ले पड़ जाये !
तो क्यों न काम, हाथ से निकाला जाये ?

(२३)

सर्व प्रथम चित (तन-मन)-निर्माण, चित्त-निर्माण, चरित्र-निर्माण ! चरित्र-निर्माण, मानव-निर्माण ! मानव-

दुनिया लाख तरक्की करे, अमन के बिना सब बेफायदा है !

—डा० राजेन्द्र प्रसाद

निर्माण, राष्ट्र-निर्माण ! राष्ट्र-निर्माण, विश्व-निर्माण ! विश्व-निर्माण, विश्व-उत्थान ! विश्व-उत्थान, विश्व-कल्याण !

(२४)

ईश्वर, शुद्ध-पवित्र है। पवित्रता से ही मिलता है— पवित्र ही मन, पवित्र ही विद्या, पवित्र ही कार्य—सब कुछ ही— पवित्र हो, तब ईश्वर की प्राप्ति निश्चय ही सम्भव हो !

(२५)

शासन है अच्छा वही, हो जिस प्रजा सुखी !
बीमारी, गरीबी आदि सभी, कर रक्खे दूर सदा ही !
कर अन्यों-मिलन वर्तन भी, देवे योग विश्व-शांति !
उद्दे-शासन है यही : देश-विकास, विश्व-शांति !
न कि, 'नानाशाही', और अपना स्वार्थ ही !

(२६)

पार्टियाँ समस्त संसार में उपयुक्त दो ही — पहली : प्रत्येक देश में 'स्वदेश आदर्श पार्टी'। दूसरी : सारे विश्व की 'विश्व आदर्श पार्टी' ! लक्ष्य, इन दो का : 'भलाई सबकी' ! सब भिन्न भिन्न पार्टियाँ अवश्य एक बहुत बड़ी ताकतवर पार्टी बन जाये, जब वे एक ही दृष्टिकोण (समता-

विज्ञान ने हमें हवा में उड़ना सिखा दिया है, लेकिन यह नहीं सिखाया कि हमें जमीन पर किस तरह रहना चाहिये ?

—मंजनामृत

हितता) को बखूबी जान जायें ! समता-हितता के सर्वोत्तम दृष्टिकोण ही को तो वे नहीं जान पातीं, तभी पहले वे ही (और तो क्या) सफल व सुखी नहीं हो पातीं ! सफल व सुखी होने का रहस्य, प्रथम चार पंक्तियों में ही !

(२७)

समस्त संसार, देखो, माला-समान है। उस में सभी मनुष्य, सभी राज्य माला के मनके हैं। हर एक मनके-मनुष्य-राज्य की खैर इसी में है कि माला-मनुष्य-राज्य बने रहें—टूटें नहीं ! अन्यथा, फिर किसी की भी, जान लो, खैर नहीं ! विश्वास न हो, तो देख लो, माला टूट जाने पर, मनकों की खैर कहाँ ?

(२८)

थोड़ा बोलना, थोड़ा खाना, सुखकर !
ऐसे न अपनाना, देखलो, दुखकर !
मेहनत करना, सहयोग देना, सुखकर !
ऐसे न करना, देख लीजिये, दुखकर !

(२९)

दुर्लभ मानव-जीवन, जान लो, हमें और भी उन्नत होने को मिला। धन्य, जो मन-वाणी-शरीर से, इसका पूरा लाभ उठा रहा : सदा शुभचिंतन, कल्याण-वचन, प्राणी-सेवा जो कर रहा !

हम संसार में सृष्टि की सेवा करने के लिए आये हैं, उसे कोड़े लगाने के लिए नहीं !

(३०)

'देश पार्टी' और 'विश्व पार्टी'

भिन्न-भिन्न पार्टियां होने से, एकता, भला कहाँ तक ? संतोष, सुख, समृद्धि, शांति भी कहाँ तक ? एक ही ('देश' व 'विश्व') पार्टी से पूर्ण एकता ! संतोष, सुख आदि सभी का फिर निश्चय ही डेरा ! पर, खेद, पार्टियां करें क्या ? उद्धार नहीं, तमाशा करें जा —बनाना-ढाना ही करें जा । देखूं दिन रात यही तमाशा ! हाँ, देश में, एक 'देश पार्टी' ही हो । तथा समस्त देशों की एक 'विश्वपार्टी' भी हो । लक्ष्य दोनों का 'सबकी उन्नति' ही हो ! न कि अपना ही स्वार्थ अपनी ही उन्नति ! तब, देखना, कैसे न सर्वत्र पूर्ण एकता हो ? कैसे न फिर संतोष, सुख, समृद्धि, शांति हो ?

(३१)

सब देशों की सभी संस्थाएं (विद्यालय, धर्मशाला, पंचायत, न्यायालय, रेलवे, पटवार, पुलिस आदि सब) यदि अपने-अपने कर्त्तव्य कार्य नियम-पूर्वक (सच्चे दिल से, पूरी ईमानदारी से) करने लगें, तो फिर निस्सदेह उनके खराबी, अज्ञान, बीमारी, गरीबी, लड़ाई आदि सब दुख अपने आप से दूर होने लगें और सर्वत्र (विश्व में) सर्व कल्याण (पूर्ण सुख शांति) होवें व रहें !

कबीरा ! तेरा वास है गलकाटों के पास
जो करेंगे सो भरेंगे तुम क्यों भए उदास ?

(३२)

प्रत्येक ही को, अवश्य ही, करने योग्य दो बातें :—

१—सर्वेश्वर-भजन कभी भी मत भूले ! और, चाहे सब कुछ भूले !

२—सदैव, शुभ ही, चिन्तन करे ! अशुभ चिंतन कभी भी मत करे !

ऐसे, दुर्लभ जन्म को सफल करे ! फिर संसार-सागर से भी तरे !

अन्यथा, उपरोक्त दोनों न करे ! तरे तो क्या, सफल भी न होये !

(३३)

गत जीवन, जैसा गुजरा, गुजरा । शेष जीवन तो उत्तम बिता !

इतना ही सफल हो जाये, ऐसी ही चेष्टा हो पाये ! कभी, देखा सोचा, जीवन कैसा बीता ? और कि अब कैसा बीत रहा ? एक-एक दिन कैसे जा रहा ? क्या बेहतर तौर पर जा रहा ?

(३४)

'अमल' पर जोर !

उत्तम पढ़ने सुनने का क्या फायदा ? जब अमल ही न किया गया !

प्राणियों का हित करना और यथार्थ बोलना ही सत्य है !

—मह० याज्ञवल्क्य

अमल से ही तो निश्चय फल ! कोई नहीं फल, देख लो,
बिन अमल !
अतः 'अमल' पर अवश्य जोर दो, जब कुछ उत्तम
पढ़ सुन लेते हो !

(३५)

जो करे तो क्या, सुने भी न थोड़ा भी भला !
सचमुच, नहीं दुनियां में बदनसीब उस-सा !
जो सुन-के भी, लग जावे करने कुछ भी भला !
निश्चय ही खुल गया उसका सौभाग्य-द्वार बड़ा !

(३६)

सचाई का पुजारी किसी से दबाया नहीं जा सकता !
उलटा, गेंद की तरह सदा ऊपर को ही उठता !

(——'सज्जनामृत' से)

प्रेषिका:
कु० आशा रानी काल्ड़ा
मुख्याध्यापिका, ठक्नी राठान

जीवन के सभी व्यवहारों को शुद्ध बनावो, यदि सुखी और सफल जीवन चाहते हो !

—राज्जनामृत

विविध वाक्य

(१)

मेरा यह हाथ खुशकिस्मत हो. मेरा यह हाथ अत्यन्त ही खुशकिस्मत हो। मेरा यह हाथ सारी दुनिया के लिए सुख का साधन हो, और मेरा यह हाथ हर एक इन्सान को छूता हुआ तंदुरस्ती का देने वाला हो !

—वेद भगवान्

(२)

सुख चाहने वालों को विद्या और विद्या चाहने वालों को सुख नहीं मिलता। इसलिए सुख चाहने वालों को विद्या और विद्या चाहनेवालों को सुख छोड देना चाहिये !

—शास्त्र

(३)

जब तक पाप का परिपाक नही होता, तब तक अज्ञानी मनुष्य उसे मधु के समान जानता है। परन्तु जब पाप पक जाता है, तब दुखी होता है !

—बुद्ध वाणी

(४)

नाशवान चीजों के पीछे पड़कर अविनाशी प्रभु को

यदि मनुष्य के पास लोभ है, तो आग की कोई जरूरत नहीं है !

भूल जाना नामुनासिब है और अपने हाथों अपने आपको तवाह करना है !

(५)

वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति में सत्य के प्रति प्रेम और जीवन के महान् उद्देश्य और लक्ष्य के प्रति जागरूकता पैदा करती है !

—रेलवे राज्य-मन्त्री डा० रामसुभागसिंह

(६)

पानी झुक कर पिया जा सकता है, शिष्य गुरु के सामने झुक कर ही विद्या सीख सकता है। अतः जीवन में सफलता पाने के लिए 'नम्रता' पहली शर्त्त है !

(७)

जीवन क्षणभंगुर है—साहित्य सागर अथाह। थोड़े-से क्षणों में कौन पार पा सकता है भला ? हां, जिसने उनमें से मोती चुन लिये, उसने अपना जीवन सार्थक कर लिया !

(८)

हे ईश्वर ! तू ने हमें अपने लिए बनाया है, और हमें

यदि हृदय में अभिमान है, तो दान से क्या लाभ है ?

उस वक्त तक वेकरार रहती हैं जब तक कि तेरे अन्दर करार नहीं पाती !

—संत आगस्टायन

(६)

चोर वह नहीं है जो रात के अंधेरे में जा कर चोरी करता है। चोर वह भी है जो बिना काम और परिश्रम किये खाता है !

(क) डाकू वह नहीं है, जो डाका मार कर धन छीनता है। डाकू वह भी है जो दूसरे से कम मजदूरी में काम कराके खुद ज्यादा मुनाफा कमाता है !

(ख) अंधा वह नहीं जिसकी आंखें नहीं हैं, अंधा वह भी है जो अपने दोष नहीं देख पाता !

—हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
३१–१०–६५

(१०)

बदी खुद ही दोजख (शैतान) है, और नेकी खुद ही बहिश्त (खुदा) है। जिस शख्स के अन्दर बुराई है, वह खुद ही एक छोटा-सा दोजख है ! और जिसके अन्दर नेकी का जजबा है, वह खुद ही एक छोटा-सा बहिश्त है !

—रोजाना 'मिलाप,' दिल्ली-जालंधर
२७–१०–६६

जगह दिल लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत कीजा है, तमाशा नहीं है !

(११)

बच्चों को कुछ सीखने की इच्छा जगाए बिना, उन्हें पढ़ाने की कोशिश करना, ठंडे लोहे पर हथौड़े मारने के बराबर है !

(१२)

जिस सौंदर्य का उपयोग करने में इंद्रियों के साथ चित्त के भाव का स्पर्श नहीं होता, वही सौंदर्य वास्तव में सौंदर्य है !

(१३)

अतीत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान ऐसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिये, जिससे भविष्य उज्ज्वल बने !

(१४)

संकट का समय ही मनुष्य की आत्मा को परखता है !

—टामस पेन

(१५)

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है, जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है !

—मीरा

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का कल की खबर नहीं !

(१६)

सगीत से क्रोध मिट जाता है !

—महात्मा गाधी

(१७)

सतोष स्वाभाविक धन है, विलासिता दरिद्रता है, क्रोध यमराज है और तृष्णा वैतरणी !

—सुकरात

(१८)

उत्तम पुरुषों की सपत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपत्ति का नाश हो !

—कालिदास

(१६)

न छोड तू किसी आलम मे रास्ती कि यह शय
असा है पीर को और सैफ है जवा के लिए !

(२०)

फिरता है सैले-हवादस से कही मर्दों का मुँह ?
शेर सीधा तैरता है वक्ते-रफ्तन आब मे !

(२१)

ईश्वर के अनेक नाम हैं, लेकिन एक ही नाम अगर हम खोजें तो वह नाम है।—'सत्य'

धैर्य धारण करना कठिन तो है, परन्तु इसका फल मीठा होता है !

—रूसो

(क) ईश्वर के अनेक रूप हैं, लेकिन अगर हम उसका एक ही रूप खोजें तो वह है—'दरिद्रनारायण' !

—बापू

(२२)

अच्छे लेखक बनने के लिए कौन-से गुण होने आवश्यक हैं ? संवेदनशील होना, विवेकी होना और साथ ही अपने भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता !

(२३)

चलता चक्की देखकर दिया कबीरा रोये ।
दो पाटन में आये के बाकी बचा न कोये ॥
चलती चक्की देखकर दिया कबीरा खिल ।
वो ही नर बच जात हैं जो रहें कील से मिल ॥

(२४)

जिसमें अपने देश के लिए कुछ करने का दम है, उसे किसी विरासत और परम्परा की जरूरत नहीं !

—वाल्तेयर

(२५)

शासन तो ऐसा हो जो जन-जन का भेद भुला दे और एक ही विश्व-सरकार से जय-जगत् का नारा बुलन्द कर दे !

—रामचन्द्र [illegible]

(२६)

ऐ शमा ! तेरी उम्रे-तबई है एक रात
इसे रो कर गुजार या हंस कर गुजार दे !

(२७)

जब तक आदमी "अल्लाह हू—अल्लाह हू" "राम-राम" पुकारता है, तब तक यकीन जानो उसने ईश्वर-खुदा को नहीं पाया होता ! क्योंकि जो आदमी ईश्वर-खुदा को पा लेता है, वह चुप हो जाता है !

—रामकृष्ण परमहंस

(२८)

वह ज्योति शरीर के अन्दर ही मिल सकती है। वे लोग भूले हुये है, जो कि प्रभु से मिलने वाले असली स्थान को छोड़कर दूसरी जगह उसकी तालाश करते हैं !

—उपनिषद्

(२६)

माला फेरत युग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारिके मन का मनका फेर ॥

—कबीर

(३०)

शुद्ध बुद्धि वाले ही ईश्वर को पा सकते हैं !

कदरदान पाये सदा आनंद की लहरें, नाकदरदान खाये ठोकरों पर ठोकरें !

—सज्जनामृत

(३१)

भगवान् की पूजा के लिए सात फूलों की जरूरत है:—अहिंसा, इन्द्रिय-दमन, दया, क्षमा, मन का काबू में रखना ध्यान और सत्य ! इन्हीं फूलों से भगवान् खुश होते हैं !

(३२)

लिखते तो वे लोग हैं जिनके अन्दर कुछ दर्द है, प्यार का जजबा है, फिक्र है, लगन है ! जिन्होंने धन और ऐयाशी को जिन्दगी का अजम बना लिया, वे क्या लिखेंगे ?

—प्रेमचन्द

(३३)

A man said, "O Prophet of God ! which is the best (part) of Islam ?" *He said*, "That thou give food (to the hungry), and extend greetings to all whom thou knowest and whom thou knowest not."

—*Prophet Muhammad*

(३४)

अपने पूर्वजों के खोदे हुये कुएं का खारा पानी पीकर दूसरे के शुद्ध जल का त्याग करने वाले बहुत-से बेवकूफ दुनियां में घूमते-फिरते हैं !

—विवेकानन्द

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करें न कोय !
सुख में सुमिरन जो करे, दुख काहे को होय !!

—कबीर

(३५)

नित ही मावस, नित सक्रान्ती ! नित ही नव ग्रह बैठे पांती ।

—जम्भेश्वर महाराज

(३६)

रोक लो गर गलत चले कोई
बख्श दो गर खता करे कोई !

—मिर्जा गालिब

(३७)

ईश्वर चाहे तो मुझे मार सकता है, लेकिन मैं अशांति में से शांति चाहता हूं !

—महा० गांधी

(३८)

भरम भेद भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ।
बिनु हरि नामु कोउ मुकति न पावसि डूबि मुए बिन पानी ॥

—गुरु नानक

(३९)

हम वहाँ हैं जहाँ से हम को भी
कुछ हमारी खबर नहीं आती !

—मिर्जा गालिब

ऐ मन मेरे मूर्ख ! करले तू सत्संग आखिर रेत में रलेंगे सोने वर्ग अंग !

(४०)

अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागै पावै पद निरवाना।

—गुरु नानक

(४१)

"Mother ! Destroy in me all ideas that I am great, and that I am a Brahmana and that they are low and pariahs, for who are they but Thou in so many forms ?"

—Sri Rama Krishna

(४२)

उपा विकसित हुई है। समुज्ज्वल किरण-सम्पन्न अग्नि वेदी के ऊपर सस्थापित हुये हैं। हे धनुवर्पणकारी, शुभ संहारक अश्विद्वय, तुम दोनों के अक्षय्य रथ में अश्वयुक्त हों। हे मेधु विद्या-विशारद, तुम दोनों हमारा आह्वान श्रवण करो।

—ऋग्वेद

(४३)

रे मुल्ला ! मन मांहि मसीत नुमाज गुजारिये.
मुनता ना क्या खड़े पुकारिये।

—[illegible]

विद्या की शोभा सेवा में ही है !

(४७)

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

(४८)

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि
वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि

—यजुर्वेद

(४९)

असाधारण कार्य या तो भिक्खू करे या लक्खू करे। मैंने तो जो कुछ किया है भीख मांग कर ही किया है !

—स्वा० केशवानन्द

(५०)

मृत्यु अनिवार्य है, इस वास्ते श्रेष्ठ आदर्श के लिए खप जाना बेहतर है। ऐसा ही संकल्प हो तुम्हारा !··· 'धर्म' लेकर मत झगड़ो। सारे धार्मिक विवाद अन्तः सार-शून्य होते हैं, उनमें आध्यात्मिकता नहीं होती।

सार वस्तु है—त्याग। बिना त्याग सम्पूर्ण हृदय से औरों के लिए कोई भी काम नहीं किया जा सकता !

दुनिया चाहती है—चारित्र (Character) : दुनिया चाहती है ऐसे जीवन जिन में हो प्रज्ज्वलित प्रेम,

सत्संग वही, जहाँ सचाई भलाई पावो ! सचाई भलाई नहीं, तो सत्संग क्यों जानो ?

—सज्जनामृत

निःस्वार्थता……जागो, जागो महान् आत्माओ ! दुनिया दुःख में ज्वल रही है। *क्या तुम निश्चिन्त सो सकते हो ?*

—स्वा० विवेकानन्द

संकलक :

राकेश सकसेना

टी० डी० सी० (प्रथम वर्ष) विज्ञान

डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

सर्व हितार्थ वाक्य

(१)

'ध्यान-पूर्वक अध्ययन', निश्चय ही लाभदायक-सुख-दायक होता है ! 'बिना ध्यान', कदापि नहीं ! और 'ध्यान-पूर्वक अध्ययन' होता है : आदि से अन्त तक गौर से, समझ कर और दिल देकर पढ़ना, सुनना !

—सज्जन

(क) क्या हुआ मुँह से सदा हरि-हरि कहे,
दूसरों का दुख न जब हरते रहते !

—अयोध्यासिंह उपाध्याय

(२)

वास्तव में व्यक्ति की महिमा या बड़ाई किसी दूसरे की देन नहीं हो सकती, उसके अपने श्रम का फल होती है !

—वेद भगवान्

(३)

हमारा भविष्य हमारी सामर्थ्य, सत्यवादिता, साहस, संकल्प, तत्परता और नियन्त्रण पर निर्भर करता है !

— महा० गांधी

(४)

नरक क्या है ? अति विलंब से पहचाना गया सत्य,

ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोए !!

समय पर उपेक्षा किया गया कर्त्तव्य !

—टाइरेन एड्वर्ड्स

(५)

मनुष्य का चित्त कारुण्य में विचरे, भगवदिच्छा में रमे और सत्य की धुरी पर घूमे, तो धरती पर ही स्वर्ग है !

– बेकन

(६)

बालकों के पालन-पोषण तथा विद्या-शिक्षा उत्तम होने अत्यन्त ही आवश्यक है, क्योंकि उत्तम बालक ही जाति व देश की सर्वोत्तम नींव हैं !

—सदाआनन्द (सज्जन)

(क) मनुष्य अपने भाग्य का स्वय ही विधाता है !

– स्वामी रामतीर्थ

(७)

लालच और आनंद ने कभी एक-दूसरे को नही देखा, फिर वे परिचित हों, तो कैसे ?

—फ्रैंकलिन

(८)

किसी मनुष्य के अच्छा या बुरा होने का पता इससे नहीं लगता कि वह कितने घंटे समाधि में बैठता है या कितनी राम-नाम की माला जपता है। किसी व्यक्ति की

नीति और धर्म में निकट सम्बन्ध है !

—महा० गांधी

जांच करनी हो, तो देखना चाहिये कि वह धन कैसे कमाता है और उसे कैसे खर्च करता है ? बस इससे उसके सारे जीवन का चित्र आपके सामने आ जायेगा !

—संतराम

(९)

यदि तुम बुद्धिमानी सीखना चाहते हो कि जिससे तुम्हारी बातों का कुछ असर हो, तो थोड़ी देर के लिए अपनी गप्पबाजी और फिजूल बातों से परहेज करो !

—ए० ऐल सामन

(१०)

ऐ इन्सान ! तू चुपकी अख्तियार कर। चुपकी जिन्दगी का ताज है। इतने लम्बे दिन में एक घंटा तू चुप रह !

(क) अक्लमद इन्सान के भाषण में तो ताकत है हाँ, लेकिन उसकी चुपकी में उससे भी ज्यादा ताकत होती है !

(ख) जबान पर काबू रखना, बुद्धिमानी का प्रारम्भ है ! और दिल पर काबू पा लेना, बुद्धिमानी की आखिरी मंजिल है !

—'रहनुमाए जिन्दगी', दिल्ली

(ग) बुद्धिमान की संगति से ज्ञान और मान मिलता है !

खूबसूरत शरीर पर गरूर न करो क्योंकि यह नाश होने वाला है !

(११)

करने लायक कामों को, करना ही, और न करने लायक कामों को, न करना ही, सुखदायक है !

—सयोगितादेवी, भन्त्री

(१२)

जिसने स्वाद को नहीं जीता, वह विषय को नहीं जीत सकता !

—गाधी

(१३)

आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है !

—एमर्सन

(१४)

आलस्य परमेश्वर के दिये हुये हाथ-पैरों का अपमान है !

(१५)

हमें अपनी आत्मा का ज्ञान, चरित्र से ही मिल सकता है !

—गाधी

(१६)

मेहनत और किफायतशुआरी खुशकिस्मती के महल

अपने आपको आलिम मत समझो, क्योंकि इल्म समुन्दर का कोई किनारा नहीं !

पर चढ़ने के लिए दो सीढ़ियां हैं !

(क) शारीरिक काम ही नहीं, दिमागी काम भी मेहनत-मशक्कत होता है !

—सज्जन

(१७)

वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है !

— स्वा० रामतीर्थ

(१८)

सचाई के रास्ते पर चलने वाला शख्स यह परवाह नहीं करता कि लोग उसे क्या कहते हैं ?

(१९)

सचाई का पुजारी किसी से दबाया नहीं जा सकता।
बल्कि गेंद की तरह ऊपर ही को उठता !

(क) सचाई से ही सबकी भलाई यानी बेहतरी और तरक्की होती है !

—सज्जन

(२०)

दुनियां में जिन्दगी को बनाने के लिए अपने ऐब को देखना बहुत बड़ा हुनर है !

अभ्यास पूर्ण बनाता है तथा सफलता को प्राप्त कराता है !

—सज्जनामृत

(२१)

वही विद्वान् पूजनीय है, जो प्राप्त विद्या को अपने आचरण में लाने वाला तथा अन्य मनुष्यों को विद्या-ज्ञान से सुखी करने वाला है !

(क) वही धनवान् प्रशंसनीय है, जिसने पवित्रता से धन कमाया है और जो अपने जायज खर्च के बाद, शेष, पुण्य कार्यों में लगाता है !

— सज्जन

(२२)

गृह-आश्रम में तब ही सुख होता है, जब स्त्री पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों !

—महर्षि दयानन्द

(२३)

जिस कुल में पति अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से संतुष्ट होती है, वहां सदा कल्याण होता है !

—भगवान् मनु

(२४)

नेक पत्नी का पति और नेक पति की पत्नी बड़े सुख-

लो जान बेच कर भी जो इल्म व हुनर मिले, जिससे मिले, जहां से मिले, जिस कदर मिले !

विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान होता है !

— महर्षि दयानन्द

(३१)

दुनियां में वह काम कर जिस से तेरी शोभा हो !

(क) वह चाल चल कि उम्र खुशी से कटे तेरी,
वह काम कर कि याद तुझे सब किया करें !

(ख) "सारांश—गुर—सुख, शांति, मुक्ति :—

१. नाम सुमर। पार उतर ! न सुमर। जाये किधर ? कभी इधर—कभी उधर !

२. स्वास्थ्य पूरा । काम पूरा ! बिना, अधूरा ! पूरा स्वास्थ्य कब ? पूरा पालन जब !

३. सदाचार, सब कुछ ! बिना, है कुछ ? विचार शुभ, आचार शुभ—सब कुछ !

४. विद्या, उजाला—दीखे आला—रहे आला !
अविद्या, अंधेरा—दीखे काला—रहे काला !

५. नीयत साफ होये, कोशिश आप होये ! फिर कैसे न व्यवसाय सफल होये ?

धन बड़ी जबरदस्त बीमारी है। ज्यों ही आदमी धनी हुआ कि बिल्कुल ही बदल जाता है!

६. स्वास्थ्य, संयम, सद्‌वर्त्तन हों यदि
रहे फिर कुटुंब सदा सुखी सुखी!

७. शासन हो, तो ऐसा : सुखी हो सब प्रजा!
अन्यथा, कैसा?

८. गत जीवन, जो हुआ सो हुआ। अब तो, शेष,
उत्तम ही बिता! उत्तम, समझे? कैसे? मैं आठ,
जैसे! नहीं तो, देख लो, क्यों-कैसे?

—'सज्जनामृत'

(३२)

बाह्य आकाश में सभी के लिए पर्याप्त स्थान है। परन्तु उस क्षेत्र का शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिये, फौजी लक्ष्यों के लिए नहीं!

—यूरी गागारिन, रूस

(३३)

ताकत कमजोरों को कुचलने के लिए नहीं, बल्कि उन को सहारा देने के लिए इस्तेमाल करनी चाहिये!

(३४)

सर्वशक्तिमान् कौन? एक सर्वेश्वर ही! अतः ताकतें छोटी बड़ी सभी सदा शुभ ही चिन्तन करें—लालसा व

अपना उल्लू सीधा करने के लिए शैतान धर्मशास्त्र के हवाले दे सकता है !

—शेक्सपीयर

हिंसा से टली रहें। तभी उनकी खैर ! आखिर, वे देख लें 'अन्त में' प्रत्येक को गज-भर ही जगह मिले—और वह भी क्या ? उस पर हमेशा के लिए सो रहना पड़े !

—सज्जन

(३५)

परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता !

—मह० दयानन्द सरस्वती

(३६)

साइंस कुदरत से अलग ताकत नहीं है। साइंस को इन्सान का गुलाम होना चाहिये। इन्सान की मुनासिब जरूरतों को पूरा करने के लिए साइंस से काम लेना चाहिये !

—जयप्रकाश नारायण

(३७)

साइंस का सदुपयोग तो उसकी महान् शोभा ! पर, दुरुपयोग उसकी उतनी ही महान् निन्दा !

—सज्जन

(३८)

उत्तम जीवन के चार चिह्न हैं—शुभ वाणी, शुभ कार्य,

गरीब की मजदूरी हमेशा पूरी और वक्त पर दो !

—सज्जनामृत

पवित्र दृष्टि, और अच्छी संगति का होना !

—अरस्तालीग

(३६)

सुन्दर वह है, जिसके कार्य सुन्दर है !

(४०)

हर पढ़, अनपढ़ मनुष्य स्वयं अपना डाक्टर बने—
जीवन (स्वास्थ्य आदि) के नियमों का ज्ञान-पालन रखे !

—संयोगिता देवी, भम्बो

(४१)

सच्चे आनन्द का आधार हमारे अन्तःकरण में ही है !

—सेनेका

(४२)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं,
सामान सौ बरस का कल की खबर नहीं !

(फ) खाक के पुतले को गरूर जेबा नहीं देता !

—शेख सादी

जो आदमी नशे में मदहोश है। उसकी सूरत उसकी मां को भी बुरी मालूम होती है !

—तिरुवल्लुर

(४३)

अच्छे विचार रखना, भीतरी सुन्दरता है !

—स्वामी रामतीर्थ

(४४)

जब तुम कोई बात किसी से कहो, तो पहले अपने दिल से पूछ लो कि क्या यह दुरुस्त है ?

(४५)

अज्ञानी के मन में कामनाएं ऐसे ही जमा होती हैं, जैसे कच्ची छत में पानी !

—बुद्ध

(४६)

सांसारिक आकांक्षा मनुष्य को बांधती और घसीटती है !

—स्वा० रामतीर्थ

(४७)

ऐ इन्सान ! अगर तू (१) मान (इज्जत) चाहता है, तो मुल्क की सेवा कर ! (२) मोक्ष चाहता है, तो माला को हाथ में ले ! (३) मौत चाहता है, तो माया से मुहब्बत कर !

—महर्षि शंकर आचार्य

(क) सदा आनन्द होना व रहना कौन नहीं चाहता ?

ख्वाहिश-पुजारी ! उस दिन क्या करेगा जब ये जिस्म व जान दोनों नहीं रहेंगे !

—स्वा० सारशब्दानन्द

सभी चाहते हैं ! पर, प्रश्न यह है कि आया चेष्टा इस इच्छा के अनुकूल है ?

—सज्जन

(४८)

विद्वानों ने सात मर्यादाएं बनाई हैं। उनमे से एक को भी भंग करने पर मनुष्य को पाप लगता है। इनमे से एक मर्यादा है, शराब न पीना !

— वेद भगवान्

(क) सब तरह की शरावे और मास यक्षों, राक्षसों और पिशाचो के पीने-खाने की चीजें हैं !

—भगवान् मनु

(ख) भांग, मछली, सुरापान जो जो प्राणी खायें।
तीर्थ व्रत अरु दान किये सभी रसातल जायें।

—गुरु ग्रन्थ साहब

(ग) संयत मनुष्य ही उत्कृष्ट साहित्य पैदा कर सकता है, शराबी नहीं !

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

(घ) यदि मैं एक दिन के लिए सर्वेसर्वा बना दिया जाऊं, तो मैं सबसे पहले शराब की दूकानें बिना मुआवजा

पर हित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई !

दिये बन्द करवा दूं !

—गांधी जी

(ङ) दवा करके लोग शराब पीने लगते हैं। और बीमार होकर दवा-दारू में पसीने की कमाई खोते हैं !

—ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया (राजस्थान)

(च) शराब के बाद तम्बाकू पागलपन का दूसरा बड़ा कारण है !

—डा० फोर्स विसल !

(छ) तम्बाकू पीना, सूंघना और खाना, ये तीनों आदतें गन्दी हैं ! मैं तम्बाकू पीने को एक जंगली, हानिकर और गन्दी आदत मानता हूं। तम्बाकू पीना उतना ही बुरा है, जितना शराब पीना !

—राष्ट्र-पिता गांधी

(ज) तम्बाकू में १६ तरह के जहर हैं, जिनमें निकोटीन सबसे तेज है !

— डा० एफ० आर० सी० पी०

(झ) तम्बाकू पीना, जहर पीना है। प्रण कर लो, अभी छोड़ना है ! बल्कि सभी नशों को छोड़ देना है। ऐसा प्रण, तो क्या कहना है !

—सज्जन

लाली मेरे लाल की जहाँ देखूँ तहाँ लाल,
लाली देखन मैं गई मै भी हो गई लाल !

(४६)

शुरू में बुरी आदत इस कदर मामूली होती है कि कोई आदमी उसे काबले-एतराज करार नही दे सकता और न ही उसे दूर करने की जरूरत महसूस होती है। इन्सान समझता है कि किसी के साथ चाल चलना अच्छा मजाक है, चन्द सगरेजों की चोरी चोरी नहीं, चद पैसों का उधार मामूली बात है। लेकिन ये ही छोटी छोटी बाते बाद मे एक खौफनाक देव की शक्ल अख्तियार कर लेती है जो इन्सान को तबाह कर देता है !

—डा० जे० हमरटन

(क) शुरू में अच्छे विचार ऐसे मामूली लगते है कि आम-साधारण लोग उन्हें आदरणीय और आचरण करने योग्य नही समझते, बल्कि वे समझते है कि यह काम-आचरण सीधे-सादे लोगो और साधु-सतों का है, हमारा काम नही। मगर अफसोस, उनको यह मालूम नही है कि शुभ-नेक विचार ही तो, बाद में—समय पा कर, एक बड़ा इन्सान तथा एक महान् देवता भी बना देते है !

—सज्जन

(५०)

संसार के सभी विद्वान् एक स्वर से यह स्वीकार करते हैं कि ससार के पुस्तकालयों में सबसे पुराना ग्रन्थ 'वेद' है !

सौ मूर्ख पुत्रों से एक ही सुखी पुत्र अच्छा। एक चन्द्रमा रात के अंधेरे को दूर कर देता है, जबकि अनेकों तारे मिलकर भी दूर नहीं कर सकते !

'वेद' के मार्ग पर चलकर ही यह धरती स्वर्ग बन सकती है। यह एक ऐसा सत्य है, जिसे सभी को स्वीकार करना ही होगा !

'वेद' का प्रचार-प्रसार ही संसार को शान्ति और आनन्द के मार्ग पर चला सकता है !

—भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार

(क) मानव-धर्म ? सत्-धर्म !

सत्-धर्म ? सत्-सुमिरन, सत्कर्म ! अर्थात् सत्-विचरण, सदाचरण—एक 'सच्चे नाम' का 'सच्चे मन' से सुमिरन करना। तदुपरान्त सभी व्यवहार अनुकूल ही—उस-आज्ञा-अनुसार करना ! यही परिभाषा 'धर्म' की। अन्य कोई भी नहीं !

सत्-धर्म ही आधार, सब ही संसार !

अतः सत्-धर्म से ही, 'विश्व-शांति' एवं 'विश्व-कल्याण' दोनों, निश्चय ही सम्भव ! अन्य किसी भी तरह नहीं-- चाहे संसार (वर्तमान युग) कितने भी यत्न करे !

जो 'धर्म' चीज को नहीं मानता।
ईश-सृष्टि में कैसे टिक सकता ?
सुखी व शान्त कैसे रह सकता ?

जैसा प्रेम हाड़ मांस में वैसा हर से होय,
चला जायगा बैकुंठ को तेरा पल्ला न पकड़े कोय !

—पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र

मानो, सुख शान्ति कैसे पा सकता ?
यह तथ्य, संसार आज नहीं मानता ।
तो ही तो, देख लो, परेशान रहता !
हां तब तक ही, ऐसे, रहता !
जब तक, आधारः 'धर्म' नहीं समझता !

—सज्जन

(ख) प्राणियों का हित करना और यथार्थ बोलना ही सत्य है ।

—महर्षि याज्ञवल्क्य

(ग) सत्य विद्या, पढ़ना पढ़ाना, वास्तव में, सर्वश्रेष्ठ कार्य है ! संसार की वास्तविक उन्नति का मूल केवल सद्विद्या ही है !

—सज्जन

लो जान बेचकर भी, जो इल्म व हुनर मिले ।
जिससे मिले, जहां से मिले, जिस कदर मिले ॥

(घ) ब्रह्मा से लेकर तिनके तक सभी पदार्थ माया से कल्पित है । एक परब्रह्म ही सत्य है, उसको जान कर और सुखी होता है !

—शास्त्र

(ङ) न पढ़ने वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो पढ़ते हैं । पढ़ने

तकल्लुफ में तकलीफ है, और सादगी में आराम !

वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो पढ़े हुये को स्मरण रखते हैं। स्मरण रखने वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो पढ़े हुये के अभिप्राय को समझते हैं। उनसे भी वे श्रेष्ठ हैं, जो उसके अनुसार आचरण करते हैं !

—मनुस्मृति

(च) मनुष्य, और न सही, कम से कम अमर वाक्य ही, पढ़-समझ-कर ले। तो निश्चय ही, अपने लोक व परलोक दोनों ही, सफल होते देख ले ! अमर वाक्य ? सत्पुरुष-वाक्य !

— सज्जन

प्रेपिका :
संयोगिता देवी, भम्बी
ग्राम–राहों, जिला–जालन्धर
भारत

सानूं समझिश्रा असी न समझ सके

मसरू वाले दे पिंड नू उपदेस कर दा,
सज्जन जोगी जगिन्दर पाल देखो।
साल कई हो गये सानू देख दिश्रा नूं,
एस दे परोपकार दे ख्याल देखो।
बाग बूटे फुलवाड़िया तयार करदा,
लीला मास्टर दी अपर-अपार देखो।
बचिश्रां नाल एह बड़ा प्रेम करदा,
एह दी अजब तमाशिश्रां दी चाल देखो।
नक्शा दफतर दा बड़ा अजीब सुन्दर,
श्ररस कुरसी दी सारी ढाल देखो।
दुख टुट गये दफतर नूं देख करके,
किसे कारीगर ने करी कमाल देखो।
सज्जन सारे सजवा नूं छड के,
सुरत दसमें द्वार चढाई होवे।
निहाल कोरड़िश्रा सारे परवार वलों,
मास्टर जीश्रां नूं लख वधाई होवे।

× × ×

चार घंटे का दिमागी काम दस घंटों के शारीरिक परिश्रम के बराबर होता है !

अनपढ़ता ते नां स्कूल कोई,
मास्टर पंजाब दा साडे पिंड आया ।
विद्यार्थिआं पर उपकार करदा,
स्कूल पौण नूं बड़ा जोर लाया ।
दो कमरे असीं बना दिते,
दफतर मास्टर ने आपदा आप पाया ।
तिन हजार तनखाह चों कढके ते,
जगिन्दर पाल जोशी ने आप लाया ।
सरकल सेर्जीपुरा कमाणा ते चक मसरू,
इनां लोकां ने भेद न कुज पाया ।
सानूं समझिआ असीं न समझ सके,
होर मास्टर न एहो जिहा काई होवे ।
निहाल कोरड़िआ सारी पंचैत वलों,
एस मास्टर नूं लख वधाई होवे ।

× × ×

मास्टर जी दा सत्संग सुनके मैं वड़ा मुस्काया,
लिखती वोड सारा देख के कुज मैं धिआंन टिकाया ।
५५ साल दा उमर सज्जन दी लीला वड़ी निआरी,
परमहेत कम वोहते करदा जांदा पर उपकारी,
मन नीमां मत उच्ची है डूंगे ख्यालां दा पोस्ट,

शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य संसार में अपनी उन्नति कर सकता है !

—प्रनाम

सत्संग में करिम्रा वैके दो घंटे दा गोश्ट।
रूप रब दा मास्टर एहो नजर सानूं आया,
मन अपराधी पापियां नूं इन्हें जमां मार मुकाया।
'सज्जन-ग्रमृत' ग्रमल करो कैसी किताब छपौंदा,
बाग बगीचे दफतर सब मकल्प करौंदा।
जे मास्टर कोई चेंज होगिया सभी चार्ज देवे,
रजिस्टर नंबर ९८ सफेदा जो बागां दे मेवे।
दो गुलदस्ते घंटी टल्ली फोटो है गेवाई,
नमें टीचरा नू जो भी ग्रॉनगे करनी पऊ समाई।

—निहालसिंह कोरड़िया
चक मथूवाला

विश्व-हितचिन्तक

श्री सज्जन जी का स्वभाव सरल; व्यवहार साफ है। फोटोग्राफर के नाते मैंने इन्हें ऐसा पाया।

इनके निर्माण-कार्यों को भी देखकर बहुत प्रसन्नता का ग्रनुभव हो रहा है। इनके सब सुन्दर कार्यों से लगता

अपने शब्दों को अल्पतम रखो !

— बाइबिल

है कि ये एक सत्साहित्यकार, महान् कर्मठ और विश्वहित-चिन्तक हैं । इनकी कथनी और करनी को देखकर यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

कितने खेद की बात है कि कुछ लोग इनका विरोध करते देखे गये । वास्तव में ये लोग गलतफहमी के शिकार हैं । प्राय: आम लोग सत्पुरुषों के शब्दों व कार्यों को जान-देख नहीं पाते । तभी तो, देख लो, हमेशा महापुरुषों पर कइयों ने तरह-तरह के वार भी किये हैं । मगर वे (महा-पुरुष) अपने पथ से अडिग रह परोपकार में लगे ही रहे । और विरोधी अन्त में मुंह की खाकर रह गये । और महापुरुष सफल तथा अमर हो गये !

जरा ध्यान कीजिये कि ये अल्प वेतन-भोगी अध्यापक ऐसे ऐसे निर्माण तथा उत्कृष्ट रचनाएं, भला, क्योंकर कर रहे ? यानी इन्हें इतने-इतने कष्ट उठाने की क्या आव-श्यकता है ? अन्य अध्यापकों की तरह ये भी ऐश-आराम कर सकें । मगर नहीं, ये इस श्रेष्ठ कथन को बखूबी समझते हैं—'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये !' धन्य-धन्य ऐसे ये सज्जन जी अध्यापक !

सब अध्यापकों तथा अन्य लोगों—सभी को, इन से प्रेरणा अवश्य लेनी चाहिये । और अपने जीवन को पर-

ऊंचे विचार वालों का स्वभाव सरल : अभिमान रहित, सबको पसंद और सुखकर होता है ।

—सज्जनामृत

शानियों को दूर कर लेने का समाधान पाना चाहिये। क्या ही सुन्दर यह कथन—'बहती गगा में स्नान कर लो।' ऐसे ही, इनमे भी क्यों न लाभ उठा लो ?

अन्त मे, भगवान् से प्रार्थना है कि इन्हें सदा स्वस्थ एव चिरायु करें ताकि ये और-और भी सर्व-सेवा करते रहें ।

शुभचिंतक,
मामनचन्द जैन-फोटोग्राफर
हनुमानगढ़ जंकशन
२३-१०-६६

पर हित
पर पीड़

दिये बन्द करवा दूं

(ङ) दवा क
बीमार होकर दवा

(च) शरा
बड़ा कारण है !

(छ) त
आदतें गन्दी
और गन्दी अ
है, जितना

(ज
निकोटीन

अभी
प्रण

नेकी करो काम आयेगी आखिर को निगोई
साथ अपने अमल होंगे वहाँ और न कोई !

आवश्यकता है। शिक्षा का माध्यम सत् शिक्षा व उद्योग हो जिससे बालक सदाचारी, ईमानदार, आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी तथा मितव्ययी हों। उत्तम बालक ही जाति व देश की सर्वोत्तम नींव हैं। ऐसे नागरिक ही उपरोक्त समस्याओं के समाधान में काफी योग दे सकेंगे। परिणामस्वरूप सब परेशानियाँ स्वयं जाती रहेंगी। शेष, परिवार-नियोजन-कार्यक्रम भी ऐसी समस्याओं व परेशानियों का अच्छा समाधान है। विलम्ब, आचरण करने का है।

प्रश्न ४. क्या परमाणु युद्ध होगा ? इससे संसार को बचाने के लिए आप जैसे आदमी क्या कर सकते हैं ?

उत्तर हाँ, ऐसा युद्ध होने की सम्भावना है क्योंकि आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से संहारात्मक यन्त्रों में होड़ लगाये बैठा है। वह राष्ट्र उतना ही समृद्धिशाली समझा जाता है, जिसके पास परमाणु आदि शक्ति अधिक है। किन्तु वास्तव में ऐसे राष्ट्र बुद्धिमानों की दृष्टि में शक्तिशाली तथा समृद्धिशाली नहीं समझे जाते। बल्कि निकृष्ट-निकृष्ट ही माने जाते, कि जो उत्कृष्ट उद्देश्य को नहीं पहुंचते देश विकास तथा विश्व कल्याण नहीं कर पाते।

महिमा तेरे नाम की देखी सुनी अपार
सुख उपजे संकट टले जो सुमरे इक बार !

सम्पादक की सज्जन से दो टूक बातें

प्रश्न १. कार्य-मुक्त होने के बाद आपकी दिनचर्या क्या होगी।

उत्तर कार्य-मुक्त होने-पश्चात् मेरा कार्यक्रम होगा : शाला-उपवन को सफल करना तथा प्रथम फल वितरण करना। फुरसत-समय सत्साहित्य की साधना रखना। सफलता तथा वितरण के बाद कहीं प्रस्थान करूंगा।

प्रश्न २. ज्योतिषी के नाते वर्तमान शिक्षा के भविष्य पर टिप्पणी कीजिये।

उत्तर ज्योतिष के गणित-फलत के अनुसार शिक्षा का भविष्य अच्छा रहेगा (रुपये में बारह आने)। शुभ अशुभ ग्रहों के आसार ऐसे ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। शेष, सर्वज्ञ जानने वाला है।

प्रश्न ३. इस सदी के अन्त (२०००) तक विश्व की बढ़ती हुई आबादी और उसकी समस्याओं का समाधान क्या है ?

उत्तर विश्व की बढ़ती हुई आबादी और समस्याओं का समाधान शिक्षा में आमूल परिवर्तन की नितान्त

नेकी करो काम आयेगी आखिर को निकोई
साथ अपने अमल होंगे वहां और न कोई !

आवश्यकता है। शिक्षा का माध्यम सत् शिक्षा व उद्योग हो जिससे बालक सदाचारी, ईमानदार, आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी तथा मितव्ययी हों। उत्तम बालक ही जाति व देश की सर्वोत्तम नींव हैं। ऐसे नागरिक ही उपरोक्त समस्याओं के समाधान में काफी योग दे सकेंगे। परिणामस्वरूप सब परेशानियाँ स्वतः जाती रहेंगी। शेष, परिवार-नियोजन-कार्यक्रम भी ऐसी समस्याओं व परेशानियों का अच्छा समाधान है। विलम्ब, आचरण करने का है !

प्रश्न ४. क्या परमाणु युद्ध होगा ? इससे संसार को बचाने के लिए आप जैसे आदमी क्या कर सकते हैं ?

उत्तर हाँ, ऐसा युद्ध होने की सम्भावना है क्योंकि आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से सहारात्मक यन्त्रों में होड़ लगाये बैठा है। वह राष्ट्र उतना ही समृद्धि-शाली समझा जाता है, जिसके पास परमाणु आदि शक्ति अधिक है। किन्तु वास्तव में ऐसे राष्ट्र बुद्धिमानों की दृष्टि में शक्तिशाली तथा समृद्धिशाली नहीं समझे जाते। बल्कि निकृष्ट-निकृष्ट ही माने जाते, कि जो उत्कृष्ट उद्देश्य को नहीं पहुंचते देश विकास तथा विश्व कल्याण नही कर पाते।

प्रत्येक को अपनी उन्नति में ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिये, किंतु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये !

—मह० दयानन्द

संसार को विनाश से बचाने के लिए ऐसे राष्ट्रों को ऊँचे मोड़ पर लाना होगा— उनके दूपित दिल-दिमाग को शुद्ध-ऊँचे विचारों द्वारा सुगन्धित करना ही होगा : "दुनियां में दो ही ताकते हैं—एक तलवार, दूसरे दिमाग ! लेकिन आखिर दिमाग तलवार पर फतह पाता है !" उदाहरणतः विश्व में भारत के महात्मा गांधी ने अपने मानसिक व आत्मिक वल द्वारा ही (विना शस्त्रों के) युद्ध कर विजयश्री प्राप्त की ! मानसिक व आत्मिक शस्त्र हैं: – "अन्त वुरा, सो वुरा !" युद्ध का अंजाम ऐसा ही ! तो समझ लो वुरा कितना ही ? 'जिन खातिर युद्ध किये जा रहे, वे क्या 'अन्त में' साथ जा रहे ? "मरो और मारो" के स्थान "जियो और जीने दो" ऐसा आचरण हो ! 'परमाणु आदि पर जो व्यय किया जा रहा, वही स्वदेश के विकास कल्याण पर हो !' 'केवल सुरक्षा-हेतु ही व्यय करना उचित। लालसा में पड़ आक्रमण करना हड़पना अनुचित !' 'अपनी (स्वदेश) आवश्यकताओं की पूर्ति-हेतु परस्पर मिलन वर्तन ही अति उत्तम !' इत्यादि सत्य प्रकाश फैल। संसार को बचाया जा सकता है। अन्य किसी भी उपाय से नहीं ! वस, इन [illegible]क्त शब्दों पर ही ऐसे राष्ट्र ध्यान नहीं देते,

तो ही तो युद्ध-अग्नि में पड़ सारे दुखों के सास लेते !

प्रश्न ५. बढ़ते हुये वैज्ञानिक युग में और तकनीकी क्षेत्र में विद्युद्‌णु मस्तिष्क व कम्प्यूटर के प्रचलन से क्या मानव जाति पगु नही बन जायेगी ?

उत्तर निस्संदेह इस युग मे मानव जाति पंगु बनती जा रही है। क्योंकि आज मानव अपने पर निर्भर न रह कर, यंत्रों पर निर्भर हो रहा है। इससे अपना आत्मबल, जो कि एक श्रेष्ठ शक्ति है, खोये जा रहा है। लगभग सारे काम कलों द्वारा ही करना चाहता और शारीरिक आराम चाहता है कि बैठे-बैठे ही सुख से सारे काम हो जायें। मानों वह आज यत्रों का दास बन गया है। और दासता यानी गुलामी निःसंशय बुरी चीज है। कि इससे मानव का शारीरिक, मानसिक आदि सब कुछ नष्ट होता है। जिसने अपना आत्मबल खो दिया, उसने सब कुछ खो दिया !

प्रश्न ६. क्या इस समय युवक-वर्ग उग्र से उग्रतर नही बन गया ? उसे रचनात्मक कामों मे लगाने के लिए आपके पास क्या योजना है ?

उत्तर हाँ, युवक-वर्ग उग्रतर बन गया है। आज के वैज्ञानिक युग तथा पाश्चात्य शिक्षा ने उसकी सब

वह अध्यापक कदापि कदापि अपना कर्त्तव्य अदा नहीं करता, जो छात्रों को सदाचार की शिक्षा नहीं देता !

—सज्जनामृत

शक्तियों का हनन करके उग्रतर बना दिया है। फलस्वरूप हाथ से काम नहीं करना चाहता, बल्कि कसरेशान समझता है । उसे रचनात्मक कार्यों में लगाने के लिए आश्रम-शिक्षा की व्यवस्था बहुत जरूरी है। युवकों की शिक्षा गुरुकुलों की भांति ही होनी गुणकर है। इस प्रकार से युवक-वर्ग की उग्रता जाती रहेगी और वह रचनात्मक कार्य करते हुये उन्नति को पहुंच जावेगा । शिक्षक भी अनुभवी अर्थात् ३०–४० साल तक के हितकर हैं न कि युवक। क्योंकि युवा छात्र और युवक शिक्षक दोनों में स्वाभाविक चंचलता होती है जिससे शिक्षा तथा कार्य में विघ्न स्वाभाविक ही है।

प्रश्न ७. आजकल वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के अनुसार चलना मखौल नहीं है ?

उत्तर आश्रमों के अनुसार चलना, वास्तव में, मखौल नहीं है किन्तु वर्तमान में समझा जा रहा है। ध्यान कीजिये, जब आश्रम-व्यवस्था प्रचलित थी, तब मानव शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आदि शक्तियों से कितना उन्नत था ! जिसे देखकर आज भी संसार को बड़ा आश्चर्य होता है। जब से उक्त व्यवस्था को तोड़ा है, तब से ही मानव उपरोक्त शक्तियों से

चला है नाम पर तेरे ईश्वर आपका दीवाना
बचाकर हर मुसीबत से हमें मंजिल पर पहुंचाना !

रह गया है जिसके दुष्परिणाम आज संसार में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। हाँ. अब भी, संसार उक्त आचरण कर ले, तो निश्चय ही सारे ही दुख हर लें।

प्रश्न ८. भारत की गरीबी व असमानता दूर करने के लिए शिक्षा मे क्या परिवर्तन होने चाहिये ?

उत्तर गरीबी और असमानता को समाप्त करने के लिए आदर्श शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। छात्रों को ईमानदारी, हस्त-कुशलता, आत्म-निर्भरता, मितव्ययता आदि की पूरी शिक्षा देनी चाहिये जिससे गरीबी निश्चय जल्द दूर होने लगेगी। इन्ही बातों के अभाव से, गरीबी आती है। असमानता विचारों की भिन्नता या भेदभाव ही है। तो इस लिए सम-एक से-उच्च विचारों का सब पर प्रकाश करना चाहिये। परिणामस्वरूप सब भेदभाव मिट जाकर परस्पर भाईचारे से रहने लगेंगे। ऐसा, न होकर ही, तो, आज सब क्षेत्रों मे सुख का स्वास नही आता पाया जा रहा !

प्रश्न ९. भूले मनुष्य को 'भवसागर से पार' और 'घर बैठे सत्संग' जैसी पुस्तकों से क्या सान्त्वना मिलेगी ?

उत्तर हाँ, भूले मनुष्य को ऐसी श्रेष्ठ पुस्तकों के प्रताप

गुलामी पूर्ण अन्याय की एक व्यवस्था है !

— नेता जी

से, निश्चय सान्त्वना मिल सकती है। उत्तम स्वाध्याय से ज्ञान बढ़ता है, बुद्धि निर्मल होती है जिससे मनुष्य आलस छोड़ कर्म और पुरुषार्थ अधिक करने लगता है। सभी ने कर्म को ही महत्व दिया है। "मनुष्य सौ वर्ष तक कर्म करता हुआ ही जीने की इच्छा करे !" "परिश्रम बड़ी चीज है, इससे मनुष्य सब कुछ पा लेता है !" इत्यादि बातों का उसे ऐसे उत्तम अध्ययन से पूर्ण ज्ञान हो जाता है। फिर भला वह ऐसा शुद्ध प्रकाश कर्म (पुरुषार्थ) का पा करके, कैसे भूखा रह सकता है? और कि फिर परेशान या अशान्त भी कैसे रह सकता है ?

प्रश्न १०. स्पूतनिक युग में आप ईश्वर और साधना की बातें क्यों करते हैं ?

उत्तर इस युग में क्या, प्रत्येक ही युग, ईश्वर आदि की बातें श्रेष्ठ हैं। इन्हीं बातों के अभाव से, मानव आयु-पर्यन्त बल्कि बाद भी भव-चक्कर में चक्कर खाते रहते—अशान्त ही रहते—कोई कल्याण नहीं हो पाता। जीवन-भर मनुष्य जो कार्य करता है, शान्ति के लिए—शान्ति मिले ! किन्तु शान्ति उसे नहीं मिल पाती, बेचैन ही दीख रहा है किसी न

गुलामी डकैती और अत्याचार की प्रणाली है !

—सुकरात

किसी पहलू में। इस स्पूतनिक युग में मानव विश्व-शान्ति को छोड़ नक्षत्रों (चन्द्र, मंगल, शुक्र आदि) पर शान्ति की तलाश कर रहा है। लेकिन शान्ति, वास्तविक शान्ति फिर भी नहीं मिल रही। हाँ, यह चीज (वास्तविक शान्ति भी) केवल ईश्वर और साधना से ही मिल सकती है। अन्य उपाय—प्रयत्नों से, जो वर्तमान में किये जा रहे, कदापि नहीं ! ये सब किस काम के ? विज्ञान ने हमें हवा में उड़ना सिखा दिया है, लेकिन यह नहीं सिखाया कि हमें जमीन पर किस तरह रहना चाहिये ? तो, वहाँ रहना क्या सिखायेंगे ? हाँ तो, ऐसा ही निहाल करेंगे ! "विश्व शांति", "किस तरह रहना" आदि के लिए ईश्वर और साधना की बातें ही वास्तविक व कारगर उपाय है। इसीलिए तो मेरे जैसे प्रत्येक युग—प्रत्येक समय ईश्वर और साधना की बातों को सर्वश्रेष्ठ जानते तथा प्राथमिकता और महत्त्व देते है।

प्रश्न ११. आपके विचार में 'अध्यापन' कार्य कैसा है ? क्या इस युग में अध्यापन द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है ? अगर हाँ, तो कैसे ?

उत्तर अध्यापन-कार्य वस्तुतः सर्वश्रेष्ठ कार्य है क्योंकि

[illegible] और त्याग से मिलते हैं!

—प्रेमचन्द

[illegible]-निर्माता है। अन्य [illegible] (शिक्षा) के प्रताप से ही सुशोभित होते हैं। [illegible] आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षा [illegible] है। इसके बिना, ये सभी कार्य संसार [illegible] नहीं हो सकते। इस [illegible] द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन [illegible] है। यथा : सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह आदि [illegible] इसके ज्वलंत उदाहरण हमारे समक्ष हैं। शिक्षा के प्रताप से ही ये ऐसे परिवर्तनों के योग्य हुये! अतएव अध्यापन से नवयुवक छात्रों को ऐसा प्रशिक्षित कर दिया जावे कि वे आज के दूषित युग की कायापलट कर देवें। सर्वेश्वर सेवक की ऐसी मनोकामना पूर्ण करें। शिक्षक ऐसी चेष्टा करने लगें, ऐसा करे!

प्रश्न १२. कुछ लोग आपको अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट करना चाहते हैं। यह आपको कैसा लगेगा?

उत्तर बुरा तो न लगे, पर अन्य शिक्षक बन्धु भी इस (या अन्य) सम्मान-योग्य बनें। ऐसा मैं चाहूं! मैं कोई विशेष योग्य तो नहीं हूं। लेकिन आपकी भावना की कदर करते हुये इन्कार भी नहीं कर सकता। वैसे मैं देखता हूं कि और भी अच्छे-अच्छे

सत्य को पा लेना दुनिया का मालिक बन जाना है।
—स्वामी रामतीर्थ

अध्यापक समाज में विराजमान होंगे। क्यों नहीं उन्हें भी सम्मानित किया जावे। अन्य इस ग्रन्थ से और भी सभी को लाभ पहुंचने की सम्भावना है। क्योंकि आप सब महोदयों के प्रेरणादायक शब्दों का ही तो यह ग्रन्थ है! शेष, इसके लिए मैं सब महानुभावों का हार्दिक सद्भाव प्रकट करता हूं।

वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं!

राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय पुरस्कार विजेता

१. श्री झमनलाल माहेश्वरी

आप इस समय माहेश्वरी माध्यमिक विद्यालय, जयपुर में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। आपकी विशेषता यह है कि कक्षा में वे प्रभावशाली शिक्षक हैं तो प्रयोगशाला में एक अध्यवसायी-वैज्ञानिक तथा विद्यालय के वातावरण में प्रेरणाप्रद नेता व अनुशासन-प्रिय प्रशासक।

२. श्री रामसिंह

आप अपने क्षेत्र के अत्यन्त लोकप्रिय और श्रद्धास्पद शिक्षक हैं। आप सक्रिय स्काउटर एवं रेडक्रास तथा आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस सोसायटी के सदस्य हैं। आप इस समय प्राथमिक विद्यालय, रातानाडा, जोधपुर में प्रधानाध्यापक के पद पर आसीन हैं।

३. श्री सज्जनसिंह

आप उन विरले अध्यापकों में से हैं जो अपने कुशल व निष्पक्ष व्यवहार एवं उत्तम शिक्षण कार्य से विद्यालय और समाज की एकांगिता स्थापित करने में सफल हुए हैं।

स्वर्ग कैसे प्राप्त होता है ? केवल पुण्य-शुभ कर्मों से
—संयोगिता देवी, भम्बी

आप राजकीय प्राथमिक विद्यालय, रायसर (अजमेर) के प्रधानाध्यापक है।

४. श्री कामेश्वरदयाल

आप निष्ठावान शिक्षक और सुयोग्य विद्यालय प्रशासक तो हैं ही, उर्दू के मशहूर शायर एवं प्रतिभा-सम्पन्न लेखक भी हैं। आप राजकीय सिटी हायर सैकेण्डरी स्कूल, बीकानेर के प्रधानाध्यापक पद पर कार्यभार सम्भाले हुए है।

५. श्री मोहनलाल मुज्जू

आप एक प्रतिभा-सम्पन्न, कर्मठ और प्रगतिशील शिक्षक हैं। आपका छात्र-जीवन विद्यार्थियों का आदर्श रहा है।

६. श्री चन्द्रशेखर श्रोत्रिय

आप इस समय राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गगापुर (भीलवाड़ा) के प्रधानाध्यापक हैं। आप छात्रों में उत्तम और दृढ़ चरित्र की अपनी आकांक्षा को साकार करने का निरंतर प्रयत्न करते रहते हैं।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागों पायं।
बलिहारी गुरु आपके, गोविन्द दियो बताय॥

शिक्षक माने जाते रहे हैं। आप इस समय रा० उ० मा० विद्यालय, सिनसिनी (भरतपुर) के प्रधानाध्यापक हैं।

११. श्रीमती गुरुचरण कौर गुलाटी

आप इस समय निरीक्षिका, कन्या शालाएं, बीकानेर के पद पर कार्य कर रही हैं। श्रीमती गुलाटी एम० ए० तथा शिक्षण स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं।

१२. श्री एस० एम० जैन

श्री जैन एक सफल अध्यापक एवं योग्य प्रशासक हैं। आप भारत स्काउट्स और गाइड्स के जिला कमिश्नर हैं। आप इस समय के० डी० जैन उ० मा० विद्यालय, मदनगंज किशनगढ़ के प्रधानाध्यापक हैं।

१३. श्री मोहन लाल देसाई

आप इस समय राजकीय अन्ध विद्यालय, आदर्श-नगर, अजमेर में संगीत अध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपके शिष्यों में से अनेक उत्कृष्ट कोटि के संगीतज्ञ व कलाकार हैं।

१४. श्री नृसिंह लाल शर्मा

आप ख्यातिप्राप्त और सर्व-सम्मानित अध्यापक हैं।

हे प्रभु आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये॥

७. फादर जे० एस० पिण्टो

आप एक प्रशिक्षित अधिस्नातक हैं। आपने कैम्ब्रिज परीक्षा उत्तीर्ण करके ही अपने आपको शिक्षण व्यवसाय के लिए समर्पित कर दिया था। आप इस समय सेण्ट पाल्स उ० मा० विद्यालय, अजमेर के प्रधानाध्यापक के पद पर रहकर अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

८. श्री रमेशचन्द्र माथुर

आप सरल हृदय, सौम्य और आकर्षक भाव-भंगियो वाले प्रतिष्ठित और प्रभावशाली शिक्षक हैं। आप अविरत कर्म-तत्परता और दृढ़ मनोवल के सहारे ही राजकीय उच्च मा० विद्यालय, भीलवाड़ा के प्रधानाध्यापक पद पर पहुंच सके हैं।

९. श्री गजमल सिंघवी

आप लोकप्रिय, उदार और विचारवान शिक्षक हैं। आपकी खेलों के प्रति तरुणों के समान ही रुचि है। आप श्री सुमति शिक्षक सदन माध्यमिक विद्यालय, राणावास के प्रधानाध्यापक पद पर कार्य कर रहे हैं।

१०. श्री गोपालराम गर्ग

आप समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थी और उद्यमी

सीरत के बगैर खूबसूरती उस फूल की तरह है जिसमें खुशबू न हो !

तृतीय श्रेणी अध्यापक के वेतनमान में कार्य करते हुए भी आपको राजकीय माडल अपर प्राइमरी स्कूल, उदयपुर के प्रधान शिक्षक का कार्यभार सौंपा गया है।

१५. श्री हरिसिंह शेखावत

आप इस समय प्राथमिक विद्यालय स० १, शाहपुरा (जयपुर) के प्रधानाध्यापक हैं।

१६. श्री जुगेन्द्रसिंह

श्री सिंह उत्तम शिक्षक एवं लगनशील कार्यकर्ता हैं जिसके कारण साथी अध्यापकों, शिक्षाधिकारियों और स्थानीय समाज में आपका अत्यधिक सम्मान है। आप प्राथमिक विद्यालय, पं० समिति, मटीली राठान (श्री गंगानगर) के प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

१७. श्री दुर्गादत्त जोशी

आप राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेवाड़ी, पंचायत समिति बाली (जि० पाली) के प्रधानाध्यापक हैं। श्री जोशी समाज में सम्मानित तथा छात्र समुदाय के श्रद्धेय शिक्षक हैं।

अच्छी सूरत के लिए चाहिये आदत अच्छी
वरना किस काम की अच्छी से भी सूरत अच्छी !

१८. श्री प्रकाश चन्द्र जैन

श्री जैन 'सादा जीवन, उच्च विचार' के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। आपने राष्ट्रीय-आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था। आप इस समय श्री ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन विद्यालय, ब्यावर के प्रधानाध्यापक हैं।

१९. श्री जयचन्द जाट

आप इस समय प्राथमिक विद्यालय एमडी (उदयपुर) के प्रधानाध्यापक हैं। नवीन शैक्षणिक प्रयोगों में आपकी अत्यधिक रुचि है। अध्यापन आपका कार्य नहीं रूप ही बन गया है।

२०. श्री रामनारायण वर्मा

आपका सामाजिक क्रियाकलापों में उत्साहपूर्वक भाग लेने के कारण समाज में आदरपूर्ण स्थान है। आप राजकीय प्राथमिक विद्यालय नं० १ हनुमानगढ़ के प्रधानाध्यापक पद पर आसीन हैं।

२१. श्री चिमन सिंह

आप अपने क्षेत्र के विद्वान अध्यापक माने जाते हैं। आप उत्तम स्काउटर भी हैं। सन् १९६१ में भारत

हो न कुछ इन्सानियत इन्सान में तो फिर इन्सान क्या ?
ऐ जफर ! गरचेह हुआ जाहिर में वह इन्सान की शक्ल !

स्काउटिंग का 'योग्यता तथा दीर्घ सेवा पदक' प्राप्त हुआ था। आप राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नोखा के प्रधानाध्यापक हैं।

२२. श्री मोहम्मद शफी

आप सुदीर्घ अध्यापन का अनुभव रखने वाले एक उद्यमी, उत्साही और संकल्पवान अध्यापक हैं। स्काउटिंग में भी आपकी अभिरुचि है। आप राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मकराना के प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

संयम और त्याग के रास्ते से ही शांति और आनंद तक पहुंचा जा सकता है।

—आइन्स्टीन

उज्ज्वल मणियां

अ. 'सत् धर्म' ही, आधार
सब ही संसार !
बिन - इसी आधार
देख लो, परेशान, संसार !

आ. स्वदेश पुनः जगद्गुरु, स्वर्ण चिड़िया
जब सत् धर्म अपना लिया गया !
सत् धर्म क्या ? सर्वेश्वर-आज्ञा :
"बन इन्सान — बन इन्सान !
सत् पहचान — कर अनुष्ठान !
पा ले उत्थान — पा ले कल्याण !
नहीं अनुष्ठान — तो, ले परेशान !"

इ. विद्या-प्राप्ति के लिए, ईमानदारी भी आवश्यक !
अन्यथा, जान लो, ऐसी श्रेष्ठ चीज असम्भव !
अतः विद्यार्थी विद्या के 'पढ़ने' और 'लिखने' में,
कभी किसी तरह भी बेईमानी मत करें !

ई. कुछ बालक, प्रथम कक्षा को, एक वर्ष में ही,
पार क्यों नहीं कर पाते ?

आनंद केवल आध्यात्मिक जीवन में है।

—मुहम्मद

आलस, अनुपस्थिति, व्यर्थ बातें, कमी-
पठनीय सामग्री आदि से, रह जाते !

उ. दुकानदारी में सफलता व उन्नति पाने के लिए पांच बातें आवश्यक—

ईमानदारी, बढ़िया माल व उचित मोल, हंसमुख, ग्राहक की आवभगत और शराफत !

ऊ. सिनेमा, मनोरंजन या विनाश का साधन ? निश्चय विनाश का साधन—स्वास्थ्य, आचार, धन—सब का नाश जो होता !

कितना अच्छा— कितना भला ? यदि धार्मिक (उत्तम) फिल्मों-द्वारा, उन्नत किया जावे जीवन-जनता ! ऐसे भी धन-लाभ अवश्य हो सके, जब सिनेमा उत्तम व सही ढंग से काम करे ! बराबर मेहनत कोशिश करते रहना, निश्चय ही काम, सफल उन्नत होना ! यह गुर, सदैव ही ध्यान रखने-योग्य !

ऋ. पवित्र-नेक कमाई ही, सदुपयोग में आती और हमेशा कायम रहती ! पाप कमाई बुरी तरह नष्ट हो जाती तथा ऐसे आदमी को भी नष्ट कर देती !

ए. सब हाकिमों का रवैया अपने मातहतों वगैरह के प्रति, अच्छा होना, बहुत ही आवश्यक है। वरना [illegible]

आनंद का पौधा बुद्धि की अपेक्षा नीति की भूमि में अधिक लहलहाता है।

—मीटरलिन्क

उनके दुर्व्यवहार का, उन्हीं के लिए अत्यन्त हानिकर व दुखदायी होगा! इसी प्रकार सभी क्लर्कों आदि का भी रवैया, अच्छा होना, अत्यन्त ही आवश्यक है। अन्यथा, वे भी, ऐसे ही अंजाम को प्राप्त होंगे! अतएव, फिर क्यों न सावधान ही रहा जाये?

ऐ किफायत, जरूर अच्छी—बहुत ही अच्छी आदत।
कर मको इससे बचत, काम, इबादत!

यानी अगर तुम यह आदत बनालो, तो फिर निश्चय बहुत-कुछ पा लो!

ओ. 'यथा राजा, तथा प्रजा।' 'यथा गुरु, तथा चेला।' इसी प्रकार 'यथा प्रधानाध्यापक तथा अध्यापक'! अतः प्रधानाध्यापक का ठीक ही रहना आवश्यक! तभी परस्पर सुख-चैन संभव! अन्यथा, देखलें, कहां?

औ. पर स्त्री को अपवित्र दृष्टि से मत देखो। तुम्हारी भी बहन, माता, पुत्री को कोई देखे, तो तुम्हें कैसा लगेगा?

अं. समय नष्ट करना, जीवन नष्ट करना!
धीर्य नष्ट करना, जीवन नष्ट करना!
चरित्र नष्ट करना, जीवन नष्ट करना!

आनंद बढ़ता है ज्ञान के साथ, सद्गुणो के साथ।

–रि

नेकी[1] नष्ट करना,[2] जीवन नष्ट करना !
हाँ, सँभल जाना, जीवन सफल बनाना !
संसार, क्यों आना ? इसी-हेतु आना !

अ:. फुरसत की घड़ियां, कीमती होती हैं। उनको बेकार मत जाने दो ! तब भी, कुछ न कुछ बेहतर काम करते रहो। समय पा, ऐसी घड़ियां, बहुत ही कीमती, देखलो !

१. दिन रात के २४ घंटों में, घंटा आध घंटा, या पाव ही घंटा, ईश-स्मरण अवश्य किया करो। अन्यथा, निश्चय जानो तुम्हारी खैर नहीं होगी ! और, यदि कहो "है," तो नहीं रहेगी—देख लेना !

२. केवल ईश-भजन ही उत्तम नशा (पूर्ण सुख देने वाला व नित्य रहने वाला) ! अन्य नशे तमाम, बिल्कुल ही तुच्छ (कुछ ही समय रहने वाले और विनाश को प्राप्त करा देने वाले) !

३. भजन (या सत्संग) के लिए समय, लोग कहते, निकलता नहीं। अन्य व्यवहारों (भोजन आदि) के लिए, भला, कैसे निकल आता ?

(क) जो कहे, काम बहुत है—फुरसत नहीं जरा-भर भी
वह तो ले सके न स्वांस-भर भी नाम-हर भी !

([1] नेक कामों का। [2] न करना)

सचाई और सचाई की जिन्दगी दोनों हर चीज से श्रेष्ठ हैं। इन्हें न अपनाने वाले सुख, शांति और कल्याण से वंचित रहते हैं !
—सज्जनामृत

(ख) जो वहे. नाम-सुमिरन होवे नही श्रौर सत्संग भी न हो सके !
उसका क्या जीना—नित ही परेशान श्रौर भवचक्कर रहे !

४. सभी सत्पुरुष तो जपें एक ही 'सत्' नाम !
मगर श्रंधविश्वासी लोग जपें 'सत्पुरुषों'—नाम !
चाहिये तो, जपना उन्हें केवल एक 'सत्'—नाम !
चलना ? सत्पुरुष-दर्शन कर श्रौर ले सत्-नाम' !

५. किसी श्रादर्श श्रध्यापक का छात्रों पर क्या प्रभाव पड़े ?
कि उनका फिर दूषित वातावरण में भी रहना जो होवे !
हाँ, अधिक समय तक 'श्रादर्श'-सत्संग उन्हें उपलब्ध रहे।
तब, उन पर निश्चय ही श्रादर्श ही—महान् प्रभाव पड़े !

६. बच्चे क्या हैं ? कहाँ है ? कैसे हैं ?
यह निगाह, रखते माता पिता, कितने है ?
क्या खबर, श्रपने ही व्यवहारों-फसे हैं।
तभी तो, बच्चे बनते नहीं श्रच्छे है !

७. लोग हर रोज कोई न कोई उपदेश सुने ।
मगर उसे क्रियात्मक रूप मे कोशिश नही करे।
यह कारण, रहते परेशान, व्याकुल तथा दुखी।
कल्याण तो होता जीवन में घटाने से ही !

वास्तव में राशि-पुरस्कार की अपेक्षा वास्तविक अभिनन्दन श्रेष्ठ है !

—सज्जनामृत

८. न कल, न आज, अभी से, नेक अमल करने लग जा !
'कल' नाम 'काल' का, और 'आज' का भी
क्या भरोसा ?

९. जो करे तो क्या, सुने भी न थोड़ा-भी भला।
सचमुच, नहीं दुनियां में बदनसीब उस-सा !
जो सुन-के, भी, लग जावे करने कुछ भी भला !
निश्चय ही खुल गया उसका सौभाग्य-द्वार बड़ा !

१०. मन को अस्थिर, दिमाग को चक्कर : उपन्यास आदि, देख लीजिये, गुणकर नहीं उल्टा परेशान करने वाले ! जबकि सद्ग्रन्थ, देख लो, निश्चय बहुत गुणकर—कल्याण करने वाले !

११. वर्तमान युग में अजीब-से विचार देखे जा रहे। भिन्न भिन्न ही दृष्टिकोण पाये जो जा रहे ! इसी कारण कोई किसी के भावों की प्रायः कदर नहीं करता। अर्थात् वह किसी दूरदर्शी के भावाकाश तक, पहुंच, क्या सकता ?

(क) कौन-सा दृष्टिकोण सर्वोत्तम ? उत्तम ही तो
सर्वोत्तम !

विश्व-हित ही सर्वोत्तम – सर्व-हित ही सर्वोत्तम !

जितना बदी से रुका जाये, उतना ही भला !
जितना गलती से बचा जाये, उतना ही अच्छा !

— सज्जनामृत

विपरीत दृष्टिकोण, निकृष्ट ! करें न जो उत्कृष्ट !
तो फिर कहाँ उत्तम ?............

['सज्जनामृत' से]

प्रेषिका :
श्रीमती इन्द्रा देवी,
सुपुत्री श्री के० राय जोशी
कुलथम (जालन्धर)

बापू की आत्मिक शिक्षा

विद्यार्थियों के शरीर और मन को शिक्षित करने की अपेक्षा उनकी आत्मा को शिक्षित करने में मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा। मैं मानता था कि उन्हें अपने-अपने धर्म ग्रन्थों का साधारण ज्ञान होना चाहिये, इसलिए मैंने यथाशक्ति इस बात की व्यवस्था की थी कि उन्हें वैसा ज्ञान मिल सके। किन्तु इसे मैं बुद्धि की शिक्षा का अंग मानता हूं। आत्मा की शिक्षा एक भिन्न ही विभाग है। आत्मा का विकास करने का अर्थ है चरित्र का निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान पाना, आत्मज्ञान प्राप्त करना। इस ज्ञान को प्राप्त करने में बालक को बहुत अधिक मदद की जरूरत

ट्यूशन क्यों की जाती ? बेईमानी ही तो होती:
शाला-समय तो भली भांति न पढ़ाना, फिर बेचारे रहे
छात्रों को ट्यूशन पर लगाना !
—सज्जनामृत

होती है। और इसके विना दूसरा ज्ञान व्यर्थ है, हानिकारक भी हो सकता है, ऐसा मेरा विश्वास था।

मैंने सुना है कि लोगों में यह वहम फैला हुआ है कि आत्म-ज्ञान चौथे आश्रम में प्राप्त होता है। लेकिन जो लोग इस अमूल्य वस्तु को चौथे आश्रम तक मुलतवी रखते हैं, वे आत्मज्ञान प्राप्त नहीं करते, बल्कि बुढ़ापा और दूसरी तरफ दयाजनक बचपन पाकर पृथ्वी पर भार रूप बनकर जीते हैं; और इस प्रकार का अनुभव व्यापक पाया जाता है।

आत्मिक शिक्षा किस प्रकार दी जाय ? मैं बालकों से भजन गवाता, उन्हें नीति की पुस्तकें पढ़कर सुनाता, किन्तु इससे भी मुझे सन्तोष न होता। मैंने देखा कि यह ज्ञान पुस्तकों द्वारा तो दिया ही नहीं जा सकता। शरीर की शिक्षा जिस प्रकार शारीरिक कसरत द्वारा दी जाती है और बुद्धि की शिक्षा बौद्धिक कसरत द्वारा, उसी प्रकार आत्मा की शिक्षा आत्मिक कसरत द्वारा दी जा सकती है। आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इसलिए युवक हाजिर हों चाहे न हों, शिक्षक को सदा सावधान रहना चाहिये। मैं झूठ बोलूं और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने का प्रयत्न करूं, तो वह व्यर्थ ही होगा। डरपोक शिक्षक शिष्यों को वीरता

सत्संग का तब फल, जब हो कुछ अमल !
कि बिना कोई अमल, मिले न कोई फल !
सत्पुरुष-दर्शन भी सफल, जब हो उस-भी अमल !

नहीं सिखा सकता । व्यभिचारी शिक्षक शिष्यों को संयम कैसे सिखा सकता है मैंने देखा कि मुझे अपने पास रहने वाले युवकों और युवतियों के सम्मुख उदाहरण बनकर रहना चाहिये । इस प्रकार मेरे शिष्य मेरे शिक्षक बने । कहा जा सकता है कि टॉल्स्टॉय आश्रम का मेरा अधिकतर संयम इन युवकों और युवतियों की बदौलत था ।

आश्रम में एक युवक बहुत ऊधम मचाता, झूठ बोलता और किसी से दबता नहीं था । एक दिन उसने बहुत ही ऊधम मचाया । मैं घबरा उठा । मैं विद्यार्थियों को कभी सजा न देता था । इस बार मुझे बहुत क्रोध हो आया । मैं उसके पास पहुंचा । समझाने पर वह किसी प्रकार समझता ही न था । उसने मुझे धोखा देने का भी प्रयत्न किया । मैंने अपने पास पड़ा हुआ रूल उठा कर उसकी बांह पर दे मारा । मारते समय मैं कांप रहा था । विद्यार्थी रो पड़ा । उसने मुझ से माफी मांगी । मेरे रूल में उसे मेरे दुःख का दर्शन हो गया । इस घटना के बाद उसने फिर कभी मेरा सामना न किया । लेकिन उस दिन उसे रूल मारने का पछतावा मेरे दिल में आज तक बना हुआ है । उसे मार कर मैंने अपनी आत्मा का नहीं, बल्कि अपनी पशुता का दर्शन कराया था ।

'१ सत् धर्म' ? मानव धर्म—मानव जीवन—मानवीय बातों—संबद्ध नियमों का पालन कर, जीना। उल्लंघन कर जीना दानव ही जीवन, दानव ही धर्म ! —सज्जनामृत

मैं बालकों को मार-पीट कर पढ़ाने का हमेशा विरोधी रहा हूं। रूल की घटना ने मुझे इस बात के लिए अधिक सोचने को विवश किया कि विद्यार्थी के प्रति शिक्षक का क्या धर्म है ? उसके बाद युवकों द्वारा ऐसे ही दोष हुये, लेकिन मैंने फिर कभी दण्डनीति का उपयोग नहीं किया। इस प्रकार आत्मिक ज्ञान देने के प्रयत्न में मैं स्वयं आत्मा के गुण को अधिक समझने लगा।

प्रेषिका :

कु० अंग्रेजकौर,

प्र० अ० 'ओस' कन्या विद्यालय, नोहर

मेरे मन-पसन्द उत्तम कथन

क. जीना भला है उसका जो औरों के लिए जिये।
उसका जीना हीच है जो अपने लिए जिये !

ख. मुहब्बत, नेकी और बुजुर्गी का निचोड़ यह है कि इन्सान दूसरों की भलाई के लिए तकलीफ उठाये !
—हर्बर्ट स्पेंसर, इंगलैंड

ग. कौन भला ? जो पर सेवा में
तन धन प्राण लगाता है ?
अथवा अपनी चिन्ता में
जिसका जीवन जाता है ?

सत्पुरुषार्थ से कोई भी सत्पुरुष हो सकता। बिना पुरुषार्थ तो अन्य काम भी नहीं होता !

— सज्जनामृत

कौन भला ? जो मातृभूमि की
वेदी पर बलिदान हुआ ?
अथवा जो सुख सम्पत्ति पाकर
अपने घर धनवान हुआ ?
कौन भला ? जो करा एकता
सब से प्रेम बढ़ाता है ?
अथवा बैर विरोध फैलाकर
जो झगड़ा करवाता है ?
कौन भला ? जो निज विद्या मे
नूतन आविष्कार करे ?
अथवा थोथे पोथे रटकर
यह जीवन निस्सार करे ?

उमदा चालचलन – तंदुरुस्ती, शक्ति, बुद्धि, खुशी और शान्ति की – उमदा बुनियाद है ! — सज्जनामृत

धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, आचार गया तो सब कुछ गया !

अपना चालचलन आईने की मानिंद साफ और बेदाग रखो !

"धर्म का अनुशासन, श्रेष्ठ अनुशासन है !"
धर्म ? सत्य नियमों का पालन है !

रिश्वत लेना या देना देशद्रोह से कम नहीं है।

सत्य नियम? जो कि लागू होते हैं,
अर्थात् जो, जैसे; करने होते हैं!

—सज्जनामृत

ज. मनुष्यो!

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह प्राक्रम की परीक्षा है।

तुम तलवार के नीचे सर झुकाने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।

तुम पर्वत-शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।

तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण-परीक्षा है।

पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि
वह पाप और अनाचार की जननी है।

—भगवान् बुद्ध

झ. सत्सर्वेश्वर ही सर्वोत्तम साथी है। उसी से बुद्धि सत्परा-
मर्श पाती है! —सज्जनामृत

ञ. हाथ मलने न हों पीरी में अगर हसरत से,
तो जवानी में न यह रोग लगाना हरगिज-हरगिज!

—मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली'

ईश्वर न काबा में है, न काशी में। वह तो घर-घर में है, हर दिल में मौजूद है।

—गांधी

मोह के समान कोई गम नही, और त्याग के समान कोई आनन्द नही !

पैसा हमे कुफल बनाता है, कमल नही।
धन्य वह जो बनता कमल, कुफल नही।
अर्थात् पैसा हमे प्रत्येक ओर, बढने से जकड़ ही लेता।
कमल की भांति हमे लोकप्रिय ही नही होने देता।
धन्य वही, कमल-समान सर्वप्रिय लगने वाला जो होता,
तरक्की के दरवाजे पर लगने वाला ताला नही जो बनता !

बोलो कम, काम ज्यादा करो ! हा, ऐसा, करने वाले, बहुत कम !

सचाई का पुजारी किसी से दबाया नही जा सकता। बल्कि गेंद की तरह ऊपर ही को उठता !

सर्वप्रथम स्वय गवर्नमेंट ही आचार-आदोलन चलावे, तो राज्य, निस्सदेह, 'रामराज्य' हो जावे !

(१) सेवा वही कर सकता है, जो त्याग कर सकता है !

(२) जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को समझता-करता नही, वह मनुष्य, पूछो, कैसा ? 'मनुष्य' ही नही ! क्योकि सर्वेश्वर ने सभी को, कर्त्तव्य-हेतु ही, भेजा। तो फिर अवज्ञा करने वाला (कोई भी), जान लो, कैसा ?

प्रत्येक मनुष्य मानवता की सेवा करके ईश्वर के दर्शन कर सकता है।

—गांधी

(३) जग में तुम जब आये, जग हंसा तुम रोए।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोए॥

(४) सत् सुमरना, अनुकूल चलना होये।
निश्चय जीवन सफल, तरना होयें!

—सज्जनामृत

(५) राह के रोड़े ? अर्थात् बाधक कौन ? राह के सहारे ? अर्थात् सहायक कौन ? आलस, स्वार्थ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, द्वेष, राग, अहंकार, उत्तेजक व मादक वस्तु-सेवन, अशुभ चिन्तन, ईश-विस्मरण—ये ही बड़े भारी बाधक, जीवन-मार्ग और कल्याण-मार्ग में ! विपरीत—इनका परित्याग कर, इन्हीं के स्थान, पुरुषार्थ आदि प्राप्त होने, बड़े ही सहायक, दोनों ही मार्गों में !

: प्रेषिका :
लक्ष्मण कक्षा ५
विद्यालय हरिरामवाला

कुविचार मात्र अहिंसा है । पारस्परिक सहिष्णुता ही अहिंसा है ।

—गाधी

जीवन का मोड़

जाह्नवी का सुरम्य तट । ब्राह्म मुहूर्त की वेला और कंपायमान करने वाले पौष मास के दिवस । पवन देव मानव-दंतावली से 'दंतवीणोपदेशाचार्य' की शिक्षा-दीक्षा लेने में निरत थे ।

प्रकृति शीत में बेहोश मालूम होती थी । वहीं सरिता के रेतीले भूभाग पर ऋषि दयानन्द बैठे थे । वे प्राणायाम करते, समाधिस्थ होते और अलिप्त भावों में खोजाने का अभ्यास करते थे ।

नातिदूर, एक दीन-हीन मा अपने शिशु के शव को भागीरथी के जल में बहाने को झुकी । मारे शीत के स्त्री स्वयं जल-प्रवाह में लुढकते लुढकते बची । उसको एकमात्र ओढ़नी ही कफन का वस्त्र था और वह अब भीग चुका था । दु:ख, विलाप और विवशता की त्रिवेणी में डूबती हुई वह अबला अनिमेष नेत्रों से लाश को निहार कर लौट चली ।

वीतराग दयानन्द सरस्वती यह सब देख कर चिंतित हो उठे । उनकी ज्ञान-वीणा के तार विशृंखलित होने लगे । लेकिन उनका विचार-मथन अकथनीय था । तदुपरान्त

मनुष्य अपनी कम-से-कम जरूरत से जितना भी ज्यादा लेता है, वह चोरी करता है।

— गांधी

उस नीरवता में, उनके मुख-कमल से वाणी यों उद्घोषित हुई :

"हे सर्वेश्वर ! यह क्या देखता हूं ? मेरी माताओं की यह दशा ! मुझे सर्वांगीण शक्ति दो। मैं पिछड़े लोगों को उठाकर ही दम लूँगा। राष्ट्र के (विश्व के) समस्त भाई-बहनों के हित में, मैं आज से अपनापन मिटा दूँगा।"

—'सुखकर कहानियाँ'

जीवन के मोड़-संबंधी, घटनाएं, मनुष्य के जीवन में, घटती हैं। किन्तु खेद वे अपनी उन घटनाओं से कोई लाभ ही नहीं उठाते ! हाँ, यदि वे अब भी, अपनी घटना-विशेष से, थोड़ा भी लाभ उठा सकें, तो निस्संदेह, वर्तमान युग (दूषित वातावरण) में भी, सुख की सांस ले सकते हैं !

[सज्जनामृत]

"कुछ मनुष्य खुशकिस्मत होते हैं, मगर वे खुशकिस्मती का रास्ता अख्तियार नहीं करते। खुशकिस्मती छत फाड़ कर उनका स्वागत करने आती है, मगर वे किस्मत के हेठे उस से भी वंचित रहते हैं !"

शहीदी खंड

कीर्तिर्यस्य सः जीवति

(जिसकी कीर्ति है, वह अमर है)

अपनी भलाई दूसरों की बेहतरी के अन्दर तलाश करो !

महर्षि दयानन्द सरस्वती

१८५७ के विद्रोह के बाद मुगल-साम्राज्य ध्वस्त हो गया था, और अंग्रेजी अमला जमकर बैठ गया था । भारत में जगह-जगह पर ईसाई मिशनरी प्रचार के अड्डे स्थापित कर रहे थे । वे भारतीयों को प्राचीन आर्य-संस्कृति से विमुख करके अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न कर रहे थे । ऐसी विकट परिस्थिति में गुजरात काठियावाड़ के मोरवी ग्राम में सन् १८२५ मे स्वामी जी का जन्म हुआ । इनका जन्म-नाम मूलसंकर था । पिता इन्हें पूर्ण शिव-भक्त बनाना चाहते थे । १४ वर्ष की आयु में महाशिवरात्रि का कठिन उपवास बालक मूलशकर ने इस अभिप्राय से रखा कि उसे शिव-दर्शन होगा । सारी रात आंखों पर जल के छींटे मारता यह बालक जागता रहा, आधी रात के समय एक चुहिया इसके आराध्यदेव पर उछलने-कूदने लगी और श्रद्धालु भक्तों द्वारा चढ़ाई भेंटों को मजे मे खाने लगी । मूलशकर का मन यह दृश्य देखकर विचलित हो गया । वह सोचने लगा कि जो शकर अपने शरीर पर से इस चुहिया को नही हटा सकता वह समार का कल्याण किस प्रकार करेगा ? मैं तो सच्चे शिव को खोजूंगा । चचा और बहिन की मृत्यु ने इन्हें और भी विरक्त कर दिया । सन् १८४५ मे २० वर्ष की अवस्था मे ये घर से निकल भागे । सन्

१८४८ में दक्षिण के एक दण्डी संन्यासी से दीक्षा ली और दयानन्द सरस्वती नाम रक्खा। देश के विभिन्न प्रान्तों का पर्यटन करते हुये सन् १८६१ में मथुरा आकर प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द के पास रह कर विद्याध्ययन किया। इसके बाद स्वदेशी के प्रचार और उस समय की प्रचलित कुरीतियों को दूर करने में जुट गये। स्वामी जी के भाषण में अनोखा जादू था, वे जहाँ जाते जनता उनके पैरों की धूलि चूमने को तैयार हो जाती। शंकराचार्य के बाद ये ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दू-धर्म का इतना व्यापक प्रचार किया। इन्होंने १८६७ में "आर्य समाज" की स्थापना की और सबको आर्य भाषा पढ़ने का आदेश दिया। समाज-सुधारक दयानन्द ने अपने भाषणों द्वारा स्वदेश, स्वधर्म, स्वजाति और स्वाभिमान के बीच अंकुरित किये। अछूतों को गले लगाया तथा स्त्री-शिक्षा पर बल दिया। सन् १८६७ में इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ—'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ उस समय के सब हिन्दी ग्रन्थों से बाजी मार ले गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इस जन्मदाता ने ३९ वर्ष की आयु में कार्य प्रारम्भ किया और अखण्ड ब्रह्मचारी रहकर मृत्यु पर्यन्त ३० वर्ष तक निरन्तर परिश्रम किया। इन्होंने छोटे-बड़े एक हजार शास्त्रार्थ किये और १० हजार मील पैदल यात्रा की। इन पर २१ प्राणघातक वार हुये जिनमें

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य ? दिली चैन और आत्मिक शान्ति प्राप्त करना।

ये बाल-बाल बच निकले। अन्त में जोधपुर में इन्हें दूध मे विष दे दिया गया और सन् १८९४ में ६९ वर्ष की आयु में अजमेर मे इस महानात्मा की मृत्यु हुई।

महात्मा गाँधी

दुनियां में कोई ऐसा देश नही है जहाँ के कम से कम पढ़े-लिखे लोग, गाँधी जी के नाम से परिचित न हों। इनका जन्म काठियावाड़ के पोरबन्दर नगर में २ अक्टूबर, सन् १८६९ ई० को श्री कर्मचन्द गांधी के घर हुआ। माता पुतली बाई के पवित्र संस्कार से बालक मोहनदास में धार्मिक भावनाए जागृत हुई। १३ वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह कस्तूर बाई के साथ हुआ। मैट्रिक पास करने के पश्चात् इन्हे भावनगर के सामलदास कॉलेज मे भरती किया गया। परन्तु यहाँ इनका दिल न लगा। तदनन्तर ४ सितम्बर, १८८८ में जाति वालो के घोर विरोध की उपेक्षा कर आप कानूनी शिक्षा हेतु इंगलैंड गये और १२ जून १८९१ मे बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। राजकोट में वकालत शुरू की परन्तु सफलता न मिली। आखिर १८९३ मे पोरबन्दर की एक मुस्लिम कम्पनी का काम स्वीकार कर दक्षिण अफ्रीका

मानुष की देह पाय के हरिनाम न लिया
बिरथा जन्म गमा दिया शरम-शरम-शरम !

—ब्रह्मानन्द

के लिए प्रस्थान किया। अफ्रीका में रहकर उन्होंने यह अनुभव किया कि वहाँ के गोरे भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस अनौचित्य का आपने सत्याग्रह की नूतन प्रणाली के द्वारा घोर विरोध किया। उन्होंने प्रथम बार सत्याग्रह को एक सामूहिक शस्त्र बनाया। अफ्रीका में बीस वर्ष संघर्षमय जीवन बिताने के बाद १६१५ में आप स्वदेश लौटे। गाँधी जी गोखले को अपना गुरु मानते थे। उन्हीं के परामर्श से आपने विविध प्रान्तों का दौरा किया और यहाँ की राजनीति को समझा। १६१७ में बिहार के चम्पारन जिले में नील उगाने वाले किसानों पर अत्याचार के विरुद्ध और १६१८ में अहमदाबाद के मजदूरों की वेतन-वृद्धि के लिए आन्दोलन छेड़ा। १६३० में डांडी के लिए ऐतिहासिक यात्रा की और नमक बनाकर सरकारी कानून भंग किया। १६३४ में हरिजन आन्दोलन शुरू हुआ ! बापू ने अपने को पूरी तरह रचनात्मक कामों में लगाकर 'यंग इंडिया', 'नव-जीवन', हरिजन' आदि अखबार निकाले। खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम और हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रचार से देश में एक नई चेतना उत्पन्न कर दी। १६३६ में भयंकर आन्दोलन छिड़ा। गाँधी जी ने अहिंसात्मक युद्ध का नारा दिया—"करो या मरो" "अंग्रेजो भारत छोड़ो !"। १६४२ ई० के सर्वव्यापी आन्दोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि देश अधिक देर तक परतन्त्र नहीं रह सकता। महात्मा जी ने

जगत् में एक सार है धरम-धरम-धरम,
करो परोपकार के करम-करम-करम !

—ब्रह्मानन्द

नोग्राखली के हत्याकाण्ड के बाद यहाँ जाकर शान्ति और मैत्री का भाव स्थापित किया। देश-विभाजन से ग्रापको ग्रान्तरिक दुःख हुग्रा और ग्रापने अन्तिम उपवास किया। इस मैत्री के कारण ही उन्हें ग्रपना बलिदान देना पड़ा। ३० जनवरी १९४८ को प्रार्थना-सभा में जाते समय गोड्से की गोली से आप चेतना-शून्य हो गये—राम-राम कहते राममय हो गये।

नेताजी

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के सफल सेनानी तथा ग्राजाद हिन्द फौज के संस्थापक सुभाष बाबू का जन्म २३ जनवरी १८९७ में कटक के स्थान पर हुग्रा। इनके पिता श्री जानकीनाथ सुयोग्य और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। सुभाष की प्रवृत्ति बचपन से ही गरीबों की भलाई की ओर थी। उनका हृदय दयालु था। सुभाष ने ग्राजादी को ग्रपना लक्ष्य-बिन्दु समझा। उनकी नस-नस में मातृ-भूमि का प्यार हिलोरें ले रहा था। मातृ-भूमि के लिए उन्होंने सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। सुभाष पाँच वर्ष की ग्रायु में स्थानीय मिशनरी स्कूल में दाखिल कर दिये गये। वे

अच्छे बर्ताव पर कोई दाम नहीं लगते
बुरे बर्ताव ही हैं बहुत महंगे पड़ते !

—सज्जनामृत

तीक्ष्ण बुद्धि के बालक थे । प्रायः अपनी कक्षा में प्रथम रहते थे । स्कूल छोड़ने के बाद सुभाष ने आजीवन देश-सेवा करने का निश्चय कर लिया । उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने भोगी के बदले योगी का रूप धारण किया। आई० सी० एस० की परीक्षा पास करने से पहले ये अपने पिता के दुलारे थे; उनकी इच्छाओं के अनुसार चलते थे । देश उन्हें जान भी न पाया था । उनके दिल में देश-प्रेम की आग कभी-कभी भड़क उठती थी । एकाएक वीर सेनानी के सत्प्राण सारे बंधन तोड़ कर मुक्त हो गये । नौकरी गई, पिता की इच्छा गई, सुभाष देश के बांके सिपाही बन गये और बिजली की तरह देश के भाग्य-आकाश पर चमकने लगे ।

उन दिनों अंग्रेजों के अत्याचारों से भारतीय तंग आ चुके थे । ट्रामों, रेलगाड़ियों और बसों में गोरे कोई न कोई ऐसी बात कर देते जिससे भारतीयों के आत्म-सम्मान को ठेस पहुंचती । सुभाष ऐसी कहानियाँ प्रायः नित्य ही सुना करते । बस फिर क्या था, सुभाष गुलामी के राक्षस से शीघ्र ही छुटकारा पाने के लिए रणक्षेत्र में कूद पड़े । सारे देश में क्रान्तिकारी नेता ने अंग्रेजों के खिलाफ प्रबल आन्दोलन खड़ा कर दिया । इन्हें कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी । १९३८ में वे हरिपुर और अगले वर्ष त्रिपुरा अधि-

अपना चालचलन आईने की मानन्द साफ और बेदाग रखो !

बेशन मे कांग्रेस के सभापति बने परन्तु गांधी जी के साथ मतभेद होने कारण इन्हें त्यागपत्र देना पड़ा । सुभाष बाबू देश की स्वतन्त्रता के लिए उतावले हो उठे। इन्होने सुदूर विदेश मे विशाल सेना का सगठन करके भारतीय इतिहास को बदलना चाहा । २६ जनवरी १६४१ को ये भारत की सीमा को पार करके जर्मनी जा पहुंचे । ५ जुलाई १६४२ को इन्होंने सिंगापुर मे आजाद हिन्द फौज की नीव डाली। "मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" की मर्मभेदी पुकार के साथ ये एकदम कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। "आजादी या मौत" का नारा लगाकर नेताजी अपनी सशस्त्र सेना के साथ भारत की सीमा को पार करके कोहिमा और मणिपुर के स्थानो पर विजय का डंका बजाते हुये चले। "दिल्ली चलो" के प्रयाण-गीतों की ध्वनि से सेना का मार्च होने लगा। २४ अगस्त सन् १६४५ को नेताजी टोकियो रवाना हुये। दुर्भाग्य से विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु होगई बतलाई जाती है। भारत-भूमि उस तरुण-तपस्वी के अभाव में कुछ खोयी-खोयी सी अनुभव करती है। वीर नेता की वह दिव्य मूर्ति भुलाये भी नही भूलती। नेताजी सरकार भी अमर है। उनकी कृतियां भारतीयों का सदैव पथ प्रदर्शित करती रहेंगी।

धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, आचार गया तो सब कुछ गया !

भगतसिंह

आज भगतसिंह ज़िन्दा होते तो वे पूरे ६२ वर्ष के होते। उनका जन्म, पालन-पोषण, शिक्षा, संगति ही ऐसी थी कि वे जीवन में कुछ विशेष करना चाहते थे। उन्होंने अपने छोटे-से जीवन में जो केवल २३ वर्ष का रहा—कैसी मस्ती आकर्षक करिश्में और तूफानी वारदातें किये। उस महान् हस्ती का एक-एक क्षण, बोले गये शब्द व लिखे गये वाक्य प्रेरक थे। काश ! हम उन पर चलकर, भारत-मां के कर्ज से उऋण हों। शायद यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

२८ सितम्बर सन् १९०७ (आश्विन शुक्ला १३ संवत् १९६४ विक्रमी) को एक किसान के घर बालक भगतसिंह जन्मा। पाकिस्तान में जिला लायलपुर के गांव बंगा के उस ऐतिहासिक स्थान में वह अपने शैशवकाल में ही पिस्तौल की शक्ल बनाता और हाथ में लेकर घोड़ा दबाता। भगतसिंह के जन्म के समय शनिवार का दिवस था और ९ बजे थे। किन्तु घर में कोई नहीं था। उसके पिता किशनसिंह और चाचा स्वर्णसिंह जेल में थे और उसी दिन रिहा होकर लौट रहे थे। अतः भगतसिंह की दादी जयकौर ने उसका नाम भागोंवाला या भाग्यवान् (भगतसिंह) रखा। इसके अतिरिक्त बालक के चाचा अजीतसिंह का निर्वासन आज

भवसागर से पार उतरने के लिए सत्संग की नौका से बढ़ कर और कोई सबील नहीं है !

समाप्त हुआ था । इस खुशी में स्त्रियों ने चर्चा की, यह बालक बड़ी तक़दीर (भाग्य) का धनी होगा । क्रांतिकारियों के घर में सिंह (बालक) और भगत (भाग) का यह समावेश है ।

"चाची जी आप दुःखी न हो, मैं अंग्रेजों को यहा से भगा दूंगा और चाचीजी को वापिस लाऊंगा ।" ये वाक्य उस होनहार लड़के के है, जिसने अपनी चाची श्रीमती हरनाम कौर को एक संतुलित वाणी में कहे । वे एक बार अपने पति के वियोग में अश्रु-पात करके दुःखी हो गई थी । ये आंसू पोंछना व ढाढस बंधाना उसी प्रकार का था जैसे कोई देशभक्त बालक अपनी व्यथित भारत मा को कहता हो । बड़े होकर भगतसिंह ने तीव्र गति से अपने आपको देश-सेवा एवं अंग्रेजों से मुक्ति के आन्दोलन में झोंक दिया । उनको अन्यान्य आदोलनों व कार्यक्रमों में 'बलवन्तसिंह' और 'रणजीत' तथा 'हरि' नाम से पुकारा गया । उनकी बहादुरी गजब की थी । उन्होंने बम फेंके, गाड़ी लूटी, पार्टी बनाई और साबित कर दिया कि उनका प्रत्येक कार्य देश को समर्पित है । उन्होंने एक बार अपने पिता से भी जोरदार बात कही । सरदार किशनसिंह तो कहते थे, 'दुश्मन पर चोट करो, पर चोट खाओ मत ।' परन्तु भगतसिंह ने घोषणा की, 'इस तरह चोट खाओ, इस तरह अपनी आहुति दो कि चोट मारने का काम कुछ लोगों का न रहे और उसे जनता

नेकदिली है बातें अच्छी-अच्छी, नेकदिली है आदतें अच्छी-अच्छी !

—सज्जनामृत

अपने हाथ में ले ले ।'

भगतसिंह की प्रत्येक वारदात पर मैं लट्टू हूं। मेरा वश चले तो मैं उन्हें छोटी-बड़ी कक्षाओं के पाठ्यक्रम में जुड़वा दूं। उनका जीवन गीता की तरह नित्य पठनीय है। अगर कोई वृद्ध उनके जीवन को पढ़े तो वह युवा हो जावे और कोई बालक उनकी जीवनी सुने तो वह असमय में ही जवान हो सकता है। आज उनके आदर्श एवं विचार कितने प्रेरक हैं, वे तो जानने के बाद महसूस करने के अजस्र मंत्र ही हैं। जब क्रांति का चौथा दौर चालू था उस समय बाबा सोहनसिंह भकना और भगतसिंह जेल में थे। यह लाहौर की सेन्ट्रल जेल की एक कोठड़ी का वार्तालाप है :

"भगतसिंह तू पढ़ा-लिखा है, तेरी आयु खाने-पहनने और ऐश करने की थी, तू इधर क्यों फंस गया है ?"

"यह कसूर करतारसिंह सराबा और आपके जैसे दूसरे साथियों का है, जिन्होंने हंस-हंसकर फांसी के रस्से को चूमा। आप तो अंडमान के कुंभी नरक से भी साबित निकले हैं।"

साण्डर्स की हत्या करके भगतसिंह और उनके साथी लाहौर से बड़ी सफाई से निकले। उनका यह कमाल अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंकने से बहुत अधिक था, भारतीयों

के लिए एक राष्ट्रीय एवं ऊंचे चरित्र की कहानी तथा किसी गढ़ के फतह करने की एक अद्वितीय व्यूह-रचना थी। उन्हें पकड़ने को शहर की नाकाबंदी की जा चुकी थी। फिर भी वे दीवाने कलकत्ता भाग निकले। उन्होंने रातोंरात पैसे का जुगाड किया। भगतसिंह एक सुन्दर रईस के रूप में पति बने, दुर्गा भाभी उनकी सहधर्मिणी, भगवतीचरण उनके नौकर बने। उनके साथ राजगुरु और चन्द्रशेखर भी सपेरा हो गए। यह साधारण घटना उन्हें कैसे लगी होगी, अंग्रेज अफसर के कत्ल के बाद 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' ने उनके बारे में क्या सोचा होगा, उनके हितैषियों पर क्या बीती होगी? इत्यादि इत्यादि एक-एक काव्य है।

क्रांतिकारी भगतसिंह अध्ययनशील थे। वे निरन्तर पढ़ते थे, बल्कि फांसी पर लटकने से कुछ पहले भी अध्ययन-रत थे। उनके जीवन में फ्रांसीसी अराजकतावादी मिस्टर वैला का चित्र समाया हुआ था, जिसने पेरिस की असेम्बली में बम फेंक कर अपना औचित्य साबित किया। ऐसा ही प्रतिपादन उन्होंने दिल्ली पार्लियामेंट में श्री दत्त के साथ बम फेंक कर किया। उनके निर्भीक नारों से नेता लोग रोमांचित हो उठे :

इन्कलाब, जिन्दाबाद !
साम्राज्यवाद का, नाश हो !

उस समय २ बम फेंके गये और पर्चे हाल में बिखेर दिये गये। कैसे जोश व होश से ओत-प्रोत थे वे लोग। उनके पर्चे के कुछ अंश थे : "हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखते हैं, जिसमें प्रत्येक पूर्ण शांति और स्वतंत्रता का उपभोग करेगा···मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रांति में कुछ व्यक्तियों का बलिदान अनिवार्य है।"

अनेक देशभक्तों के साथ भगतसिंह भी बारम्बार जेलों में रहे। वे वहां भी खाली न रहते। वे अपने मित्रों के साथ योजना बनाते, लिखते तथा पढ़ते। जब वे अदालत में बयान देने को जाते तो प्रायः यह गीत गुनगुनाते :

मेरा रंग दे बसन्ती चोला।

इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बन्धन खोला।

फांसी रुकवाने या अपील करने के सुझाव भगतसिंह के पास आये, लेकिन वे इसके विरुद्ध थे। उन्होंने अपने पिता को भी इसके लिए फटकारा : "मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आपने स्पेशल ट्रिब्यूनल को मेरे बचाव के लिए एक प्रार्थना-पत्र भेजा है।" इसी प्रकार उन्होंने अपने अन्तिम पत्र में एक मित्र को लिखा : "·········अगर मैं फांसी से बच गया तो वह जाहिर हो जायेगा और इन्कलाब का निशान मद्धिम पड़ जायेगा या शायद मिट ही जाये।

ईश्वर के विधान को मानना ही ईश्वर को मानना है !

लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हसते हंसते फांसी पाने की सूरत मे हिंदुस्तानी माताएं अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेगी।"

ग्राज गांधी शताब्दी समारोहों की धूम है। ऐसे समारोहों में क्या भगतसिंह का कोई समारोह आयोजित किया जाये तो वह क्या कम कीमत का होगा ? नही, भगतसिंह अपने स्थान में और क्रांतिदूतों मे विशेष है । गाधी अपने में कम नही थे। वे अपने माननीय हैं, उन्होने मानवता के क्षेत्र मे भी काम किया, लेकिन भगतसिंह ने अल्पायु मे जो कर डाला, वह गांधी नही कर पाये। मैं कहना चाहता हूं कि भगतसिंह खूनी क्रांति के पक्ष में नही थे। उनमे सुखद भारत का स्वरूप उभर रहा था। उन्होने कहा, "क्रांति बम और पिस्तौल की संस्कृति नही है। क्रांति से हमारा प्रयोजन है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था मे परिवर्तन होना चाहिए।"

कुछ लोग भगतसिंह को जी-जान से प्यार करते है। वे उनके इस जन्म-दिवस पर मूर्ति लगा रहे हैं : मैं उनके अनुयायियों से पूछता हूं, "क्यों पैसा वर्बाद करते हो ?" इससे वे मेरी निष्ठा पर शक करते है। लेकिन मैं बताना चाहता हूं, मित्रो ! भगतसिंह बनो, उसके एक-एक वाक्य को जीवन में उतार लो और देश में फैले लोभ-लालच एवं स्वार्थ की असेम्बलियों में सेवा व त्याग के बम फेंको ।

धर्म, धन और विद्या थोड़ा थोड़ा करने से ही जमा होते हैं !

भगतसिंह को समाजवाद प्रिय था । देखना यह है कि आप कितना और कैसे उनके विचार को अपनाते हैं ? उनके नाम पर युवक मंडल बनाइये, क्योंकि वे युवकों के प्रतीक थे । पुस्तकालय खोलिये, क्योंकि, वे अन्तिम घड़ी तक पढ़ते रहे । दूसरों के लिए जीवो, क्योंकि वे अपने लिए कभी जीवित नहीं रहे । भगतसिंह स्मारकों, प्रतिमाओं में नहीं, बल्कि जागृत भावनाओं में है और वह भी न्याययुक्त व तर्कसंगत म ।

शहीदेआजम भगतसिंह की, 'शहीद भगतसिंह स्मारक समिति, हनुमानगढ़ जं०' ने, २८-९-६९ को (उनके जन्म-दिवस पर) एक शानदार संगमरमर की मूर्ति चौराहे पर स्थापित की है । यह युवकों का एक प्रेरणा-स्थल बनेगा ।

मेजर शैतानसिंह

राजस्थान की भूमि वीर प्रसविनी कहलाती है । इतिहास साक्षी है कि जब-जब देश पर संकट के बादल छाये तो राजस्थान के अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश के सम्मान की रक्षा की है । इस परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले—मेजर शैतानसिंह नहारा की भारतीय सीमा पर चीनी आक्रमण के समय शत्रुओं से

शुभ विचारों की रोशनी दुनियां में सूरज के प्रकाश की तरह फैला दो !

— सज्जनामृत

संघर्ष करते हुये वीर गति को प्राप्त हो गये।

मेजर शैतानसिंह का जन्म जोधपुर जिले के फलौदी तहसील के ग्राम बानासर में १ दिसम्बर १९२४ को एक बड़े राजपूत परिवार मे हुआ था। आपकी शिक्षा श्री सुमेर सैनिक क्षत्रिय माध्यमिक स्कूल तथा चौपासनी स्कूल मे हुयी थी। १९४७ मे आपने जसवन्त कालेज, जोधपुर से द्वितीय श्रेणी मे बी० ए० पास किया था। वीरता आपको अपने पिता लेफ्टीनेंट कर्नल श्री हेमसिंह से विरासत में प्राप्त हुयी थी। मेजर साहब अपने वीर पिता के बेटे थे। आपने सन् १९४७ में दुर्गाहार्स जोधपुर में केडेट की हैसियत से सेवा प्रारम्भ की थी। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् जब रियासती सेनाओं का भारतीय सेना मे विलीनीकरण हुआ तब आप २० राजपूत रेजीमेंट मे भेज दिये गये। कुछ समय बाद कुमायूं रेजीमेन्ट मे तबादला कर दिया गया, जहां आपको "परमानेंन्ट कमीशन" देकर १९५५ में केप्टिन बना दिया गया। बाद मे ३ वर्ष तक उपद्रवी नागा क्षेत्रों मे बड़ी मुस्तैदी से कार्य किया। १९६२ में गोआ को भारत में मिलाने की कार्यवाही में आपकी सेवाओं के उपलक्ष में आपको मेजर का पद प्रदान किया गया।

चीनियो के आक्रमण के समय राजस्थान की गर्म जलवायु में पला-पोसा यह नौजवान नितान्त प्रतिकूल परि-

शुभ विचारों को खूब जबानी याद करके बादल की तरह सब जगह बरसा दो !

—सज्जनामृत

स्थितियों में लद्दाख के मोर्चे पर चुशूल के निकट मोर्चा लेने तैनात कर दिया गया ।

१८ नवम्बर १९६२ की भोर को तीन हजार से अधिक चीनी सैनिकों ने इस चौकी पर हमला बोल दिया जहां मेजर साहब १३० सैनिकों सहित डटे हुये थे । ७०० से भी अधिक चीनी सैनिक इस युद्ध में मारे गये । मेजर साहब कुछ बचे हुये सैनिकों के साथ आगे बढ़ते गये । अचानक एक दुश्मन की गोलियां उनके हाथ और छाती में लगीं । वे वहां विवश होकर गिर पड़े । इस प्रकार मेजर शैतानसिंह रक्त की अन्तिम बूंद तक दुश्मनों को भारत की इस पवित्र भूमि पर अधिकार जमाने से रोकते रहे ।

मेजर साहब कई दिन तक लापता घोषित किये गये । परन्तु ठीक तीन माह बाद भारतीय वायुसेना के एक विशेष विमान द्वारा राजस्थान के इस रणबांकुरे अमर शहीद का शव—जोधपुर लाकर सम्मान उसका दाह-संस्कार किया गया ।

भारत सरकार ने मेजर शैतानसिंह को "परम वीर चक्र" से सम्मानित किया ।

मेजर शैतानसिंह ने वीरता, त्याग और बलिदान का जो मार्ग प्रशस्त किया है, वह राजस्थान के इतिहास में

स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जावेगा एवं उनकी वीर गाथा पर भावी पीढ़ियां गर्व से सिर ऊंचा कर उठेंगी।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

"...death's stamp gives value to the coin of life making it possible to buy with life what is truly precious......" —*Tagore*

Major Surender Prasad, Vir Chakra
November 5, 1938—September 23,1965

मेजर सुरेन्द्रप्रसाद वीरचक्र विजेता

नवम्बर ५, १९३८—सितम्बर २३, १९६५

सुपुत्र मा० तेगराम (भूतपूर्व एम० एल० ए० एवं महात्मा गांधी द्वारा सचालित भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के महान् नेता तथा समाजसेवक)।

५ नवम्बर १९३८ को अबोहर में शुभ जन्म। श्री सूरजमल विद्यालय साहित्य सदन अबोहर मे प्रारम्भिक शिक्षण। एम० बी० हाई स्कूल अबोहर १९५५ से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। डी० ए० बी० कालेज जालन्धर से १९५९ में बी० ए० की उपाधि प्राप्त की। मिलिट्री ट्रेनिंग

अच्छी बातें सदा याद रखो तथा अपनाते भी जरूर रहो !

— सज्जनामृत

कालेज देहरादून में सैनिक शिक्षण लेकर १३-१२-६१ को कमीशन I. C. 13057 प्राप्त किया । दिसम्बर १९६१ में '१९ मराठा लाइट इन्फेण्टरी' में नियुक्ति हुई ।

अक्तूबर १९६२ में भारत चीन संघर्ष के अवसर पर नेफा के मोर्चे पर वीरतापूर्वक युद्ध किया तथा २३ सितम्बर १९६५ को लाहौर फ्रन्ट पर आक्रमण करते हुए छाती पर अनेक गोलियों के प्रहारों के परिणामस्वरूप वीरगति प्राप्त की । मेजर सुरेन्द्र तथा उनके साथियों ने अनेक घावों को सहते हुए भी शत्रु को बुरी तरह पछाड़ दिया और शत्रु के १ टैंक, ३ जीपगाड़ियां और काफी गोला-बारूद पर अधिकार कर लिया । स्वतन्त्रता दिवस १९६६ को उन्हें वीर चक्र के सम्मान से विभूषित किया गया ।

—मेजर सुरेन्द्र प्रसाद मैमोरियल कमेटी, अबोहर (जि० फीरोजपुर) द्वारा प्रकाशित ।

स्वर्गवासी श्री ताराचन्द जी सारण
गांव मक्कासर
पुलिस कप्तान जोधपुर (राज०)

जन्म : संवत् १९६८ सावण सुदी ३ । उस समय पिता

आंवले के खाने का और बुद्धिमान के बताने का पीछे ही अनुभव होता है !

नहीं थे। ५ साल की उम्र में जकसान पढ़ने लगे। गरीबी की दशा। चुन्नीलाल जी से १७ साल वे छोटे थे। अब चुन्नीलालजी रिटायर्ड हवालदार हैं—मक्कासर में वास करते हैं। हनुमानगढ़ जंकशन में देहातियों को लेते नहीं थे। बीकानेर से प्रवेश-आज्ञा मिली।

संवत् १६७८ में जाट स्कूल संगरिया में दाखिल कराया। वजीफा मिलता था प्रति माह ८ रुपये। मैट्रिक की परीक्षा—केन्द्र फरीदकोट।

मैट्रिक करने के बाद ताराचन्द मेरे (चुन्नीलाल) पास नौकरी के लिए आया। सरदार इन्फेंट्री जोधपुर में पहले-पहल ताराचन्द भर्ती हुआ। वहां ५ साल रहा। Battalion Havaldar Major हुए। देहरादून में लेफ्टिनेंट कोर्स करने से वे इन्कार हुए; क्योंकि वहां मांस खाना पड़ता था। मेरठ "मिलिटरी रायफल्स मीटिंग' में उन्होंने "उम्मेद शील्ड" जीती। मेजर स्टीड (अंग्रेज) ने उन्हें लेफ्टिनेंट कोर्स के लिए चुना। उन दिनों में रियासती झगड़े और अपने-अपने कानून थे। अतः ताराचन्द को इस पद से वंचित रखा गया। इस ठेस पर ताराचन्द ने त्याग-पत्र दे दिया।

बीकानेर के मुख्यमंत्री (Prime Minister) के सामने नौकरी की दरख्वास्त। मुरादाबाद में ट्रेनिंग। सब-इन्सपेक्टरी

सत्य विद्या—सत्य ज्ञान ही सुख है, अविद्या-अज्ञान का ही फल दुःख है !

— संयोगिता देवी, भम्बी

की ट्रेनिंग वहीं से की । सब खर्च अपने परिश्रम से निकाला ।

पहली पुलिस नौकरी रायसिंहनगर से, सब-इन्सपैक्टर की नियुक्ति । फिर हनुमानगढ़, बीकानेर, बहारनपुरा, टीबी, करनपुर, गंगानगर, जोधपुर । कुख्यात डाकुओं को पकड़ने के बाद इन्सपैक्टर बनाया ।

डी० एस० पी० गंगानगर थे । उन दिनों में उन्हें एक केस में १ लाख रुपया मिलता था, पर नहीं लिया ।

एस० पी० बन कर वे चूरू गये । सुगनसिंह राजपूत के हाथ पर लिखाया—"आइन्दा चोरी नहीं करूंगा ।"

भरतपुर में नियुक्ति । डाकुओं की गिरफ्तारी की, मारे भी । उन्हें "अशोक चक्र" महाराजा सवाई मानसिंह ने दिया ।

अन्त में जोधपुर में डाकुओं से भिड़े और वीर पद को प्राप्त हुए । मरने से पहले चुन्नीलाल ६ दिन पहले जोधपुर में मिला । तबादले के लिए मैंने कहा क्योंकि यहां बड़ी बड़ी कोठियों वाले सब डाकू हैं ।

कल्याणसिंह डाकू का पत्र उनकी (तारा चन्द) की जेब में था । उससे वे रोष से भर गये । वे आवश्यक छुट्टी नहीं गये । उन्होंने कहा था—या मैं नहीं या डाकू नहीं ।

निर्वाण सब से बड़ा सुख!

—भगवान् बुद्ध

उनको मैं हाथ दिखाऊंगा। जिन्होंने अनेकों को मारा है, अनेकों के नाक काटे हैं।

जोधपुर मे पूर्व की ओर ६० मील दूर चिरड़ानी की हद् में वे धराशायी हुए। २० हजार व्यक्ति अंतिम संस्कार मे शामिल तथा श्री सुखाड़िया भी थे।

राजस्थान का कुख्यात डकैत कल्याणसिंह और उसके अन्य पांच साथी अन्ततः मौत की गोद मे सुला दिये गये। पुलिस से हुई अन्तिम मुठभेड के दिन जिस किसान के यहां इन डाकुओं ने पनाह ली थी, वह भी जिन्दगी से हाथ धो बैठा। इन सातों समाजद्रोहियों की लाशों को रात में दो बजे जोधपुर लाया गया।

१३ मार्च—पौ फटने के साथ ही सैकड़ों नागरिक पुलिस-मैदान मे डाकुओं की लाशों को देखने एकत्रित होने लगे। दस्युराज कल्याणसिंह के साथ भूरसिंह, छोगालाल, भालिया, जोगला, केमखानी और जटिये ढाणी वाले की लाशें रेत मे पडी थी, जिन्हें जनता घृणा से देखती जा रही थी। डाकुओं के अगों पर पुलिस की गोलियों के गहरे घाव साफ दिखाई दे रहे थे।

अर्जित ज्ञान का सदुपयोग सिखाना ही शिक्षा का लक्ष्य !

कुख्यात डकैत कल्याणसिंह सौराष्ट्र के भूपत की तरह ही आतंकवादी था। जोधपुर जिले की सारी बिलाड़ा तहसील संकटग्रस्त हो गयी थी। कल्याणसिंह और उसके गिरोह ने अब तक लगभग ५० किसानों का खून किया है। उसने अनेकों प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के नाक, कान और होंठ काट लिये थे। लाखों डकैती के साथ हाल ही में इस गिरोह ने पुलिस के तीन जवानों को भी मार डाला था। तुरन्त ही एस० पी० श्री चौधरी स्वयं डकैतों को समाप्त करने के व्रत के साथ चल पड़े। १२ मार्च को सुबह ही से मुकाबला शुरू हो गया। गिरोह टीबे पर मकान में था, इसलिए अधिक सुरक्षित था। इस दिक्कत के बावजूद भी पुलिस ने मोर्चाबन्दी की। मध्यान्ह में अग्रिम पंक्ति के नायक श्री चौधरी वीर गति प्राप्त कर गये। शेष अधिकारियों ने उनके व्रत को पूरा करने का निश्चय कर अन्ततः १२ मार्च को ही मौत से खेलकर डकैतों का अन्त कर दिया।

स्व० श्री ताराचन्द जी की कांस्य मूर्ति लग चुकी हैं — एक ग्रामोत्थान विद्यापीठ, सगरिया और दूसरी पुलिस लाईन, जोधपुर में। अभी अभी समाचार मिला है कि उनका वहां एक अन्य स्मारक 'किसान बोर्डिंग हाउस' में बन रहा है।

जीना भला है उसका जो औरों के लिए जिये उसका जीना होव है जो अपने लिए जिये ।

नायब-सूबेदार हरिराम

'वीर-चक्र' (मरणोपरान्त) १९६२

निवासी-ग्राम गोठोड़, तहसील खेतड़ी, जिला झुंझुनू।

१८ नवम्बर, ६२ को चीनी सैनिकों ने तोपखाने का भारी जमाव करके मोर्टार द्वारा गोलाबारी के साथ लद्दाख क्षेत्र में रेजांगला स्थित हमारी कम्पनी की एक चौकी पर आक्रमण किया। आक्रमणकारियों की संख्या प्रतिरक्षा कम्पनी की संख्या से बहुत अधिक थी परन्तु वे बहुत ही बहादुरी से लड़ते रहे और शत्रु को भारी संख्या में हताहत किया। नायब-सूबेदार हरिराम ने इस समय साहसपूर्ण कार्य द्वारा एक उत्तम उदाहरण पेश किया। वे भारी चोटें लगने के बावजूद भी अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते रहे और उन्हें डटे रहने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्होंने इस प्रकार उच्च-स्तर की कर्त्तव्य-परायणता एवं साहस का परिचय दिया।

अध्ययन शीलता एक अचूक अस्त्र है जिसे सब को अपनाना चाहिये !

केप्टिन महेन्द्रसिंह तंवर

'अशोक-चक्र' (३), १९६५;

६, राजपूताना राइफल्स

निवासी–ग्राम बिहारीपुर, तहसील नीम का थाना जिला सीकर।

१३ नवम्बर, १९६४ को मनीपुर स्टेट के नागा क्षेत्र में पाकिस्तान की ओर जाते हुए कुछ विद्रोहियों को छापा मार कर रोकने के लिए केप्टिन महेन्द्रसिंह को आदेश दिया गया। यह क्षेत्र बहुत विकट था। घने जंगल और सीने तक भरे हुए पानी और दलदल को पार करके इस कप्तान ने, अपने प्राणों की परवाह न कर, विपक्षियों की टोह में प्रच्छन्न रूप से अभियान किया और उन पर छापा मारा। स्वयं कप्तान ने एक विपक्षी को गोली से मार गिराया। कप्तान की टोली पर विपक्षियों ने भारी मोर्टार और मशीन-गनों की बौछार कर दी। किन्तु कप्तान व उसकी टुकड़ी ने हिम्मत के साथ उनका मुकाबला करके उन्हें भारी क्षति पहुंचाई और उनमें भगदड़ मचा दी। बारह विपक्षी मारे गये और बीस घायल हुए। एक लाइट मशीन-गन, बहुत बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और शस्त्रास्त्र हाथ लगे। इस वीरता के उपलक्ष में केप्टिन महेन्द्रसिंह तंवर को 'अशोक-चक्र' (तृतीय) प्रदान किया गया।

मनुष्य को बड़ा बनाने वाली चीज केवल 'नेक दिली' है। धन-माल या अन्य अधिकार नहीं।

शहीदों की बातें

क्रांति का चौथा दौर चल रहा था। 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रीपब्लिकन आर्मी' और 'नौजवान भारत सभा' का क्रम चल पड़ा। इन में भगवतीचरण, बी० के० दत्त, राजगुरु और सुखदेव जैसे वीर सेनानी भरती हुये। उनके राजभक्ति के कारण भी और विचारों से अंग्रेजों की नींद हराम हो गई। वह विदेशी सरकार इन बहादुर नौजवानों के पीछे पड़ी—किसी को कैद, किसी को काला पानी और किसी को फांसी की सजा देती। रोज कोई न कोई फांसी पर चढ़ जाता। वे आजादी के परवाने मृत्यु की भी परवाह नहीं मानते और अपने पूर्ववर्ती साथियों के काम को विरासत समझ कर आगे बढ़ाते। वे उनके अनुगामी बनने को उत्सुक रहते; परन्तु लीडरशिप व डिक्टेटरशिप के लिए नहीं।

एक बार बाबा सोहनसिंह भकना और भगतसिंह लाहौर की सेंट्रल जेल में मिले। उन्हें हफ्ते में एक दो बार ही मिलने की आज्ञा मिलती। उनके संक्षिप्त वार्तालाप के वाक्य थे—

बाबा सोहनसिंह—"भगतसिंह ! तू पढ़ा-लिखा है,

सत्य का ज्ञान, न होना ही, सारे कष्टों और दुखों का मूल कारण है !

तेरी आयु खाने-पहनने की है और ऐश करने की भी। तू इधर क्यों फंस गया है ?"

भगतसिंह—"यह मेरा कसूर नहीं, आपका है !"

बाबा सोहनसिंह"—वह कैसे ?"

भगतसिंह—"यदि करतारसिंह सराभा और आपके दूसरे साथी हंस-हंस कर फांसी के रस्से न चूमते और आप लोग अंडेमान के कुम्भी नरकों में पड़कर सावत न निकलते तो शायद मैं इधर न आता।"

— सम्पादक

स्वातंत्र्य यज्ञ के होताओं के अंतिम संदेश

१८५७ की जन-क्रांति में मुगलों के अंतिम बादशाह को कैदखाने में रहना पड़ा। अंग्रेजों द्वारा उनके पुत्रों का सिर काट कर उनके सामने ले जाया गया। बहादुरशाह को अपनी राजधानी से बड़ा स्नेह था। उन्हें बर्मा में अपने अन्तिम दिन गुजारने पड़े। जब उनकी जिन्दगी का चिराग गुल होना चाहता ही था, तो उन्होंने अपने एक शेर में लिखा—

पढ़ने-सुनने के बाद उस पर गौर न करना ऐसा ही है, जैसे खाना खाकर हजम न करना !

'मेरी कब्र पर आंसू गिरायेगा कौन ?
मेरी कब्र पर फूल चढ़ायेगा कौन ?'

२३ मार्च सन् १९३१ को लाहौर जेल में सरदार भगतसिंह को फांसी पर लटकाया गया, लेकिन सरदार ने इससे पहले बड़ी निर्भीकता से गाना गाया—

"मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।
इसी रंग में वीर शिवा ने
मां का बन्धन खोला ।"

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल को १९ दिसम्बर १९२७ ई० में सोमवार को साढे छः बजे प्रातःकाल फांसी पर लटकाया जाना था। उन्होंने ३ दिन पूर्व निम्न पंक्तियों का उल्लेख किया—'यह सब सर्व शक्तिमान प्रभु की लीला है। सब कार्य प्रभु की लीला है। सब कार्य उसकी इच्छानुसार ही होते हैं ।

यह परमपिता परमात्मा.........। कोई किसी पर हुकूमत न करे, सारे संसार में जनतन्त्र की स्थापना हो।.........परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे, ताकि मैं उसकी पवित्र वाणी—'वेद वाणी' का अनुपम घोष मनुष्यमात्र के कानों तक पहुंचाने में समर्थ हो सकूं ।'

अन्त में उन्होंने काकोरी षड्यंत्र के अभियोग की अनियमितता की ओर इंगित करते हुए लिखा—

"मरते 'बिस्मिल' 'रोशन' 'लहरी'
'अशफाक' अत्याचार से ।
होंगे पैदा सैंकड़ों इनके रुधिर की,
धार से ।"

जब देहोत्सर्ग की वेला आई, तो बिस्मिल ने फांसी के दरवाजे की ओर जाते हुए बड़े धैर्यपूर्वक कहा था—

'मालिक तेरी रजा रहे और
तू ही तू रहे ।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू
रहे ।
जब तक कि तन में जान रगों में
लहू रहे ।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू
रहे ।।

और फांसी के तख्ते के निकट पहुंच कर वे बोले, "मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं ।"

तदन्तर उन्होंने तख्ते पर खड़े होकर प्रार्थना की और 'विश्वानिदेव सावितुर्दुरितानि……' मंत्र का जाप करते हुए गोरखपुर की जेल में फांसी के फन्दे को चूम लिया ।

बुरी बातों को 'बुरा' कहो ही नहीं, छोड़ो भी !

—सज्जनामृत

शतशः श्रद्धांजलि ! स० ऊधमसिंह

१२ जून, १९४० का दिन। फांसी के फंदे का स्पर्श नही, चुम्बन। "भारत माता की जय" उसके अन्तिम शब्द थे और उसके भावों में—आजादी-प्राप्ति हेतु जो तड़प थी, उसका कौन अनुमान लगा सकता है ?

जलियांवाला हत्याकांड का प्रतिशोध लेने वह सात समुद्र पार—लन्दन गया। उसने मिस्टर ओ'डायर का पूरा अता-पता खोज निकाला। सरदार ने उस कुकर्मी अंग्रेज का पीछा किया जैसे कोई सिंह किसी मृग-छौने का।

ओ'डायर क एक स्वागत सभा। वह अंग्रेज अपनी शेखी मे मदान्ध था। ऊधम सिंह के अदम्य उत्साह ने उस दिन ब्रिटिश साम्राज्य के ताज की लड़ियां बिखेर दी। सब के सन्मुख, भरी सभा में उसके लाडले ओ'डायर पर फायर, उधर उसका धराशायी होना और इधर इसका बेड़ियां पहनना, क्या था ? निर्ममता पर पौरुष की विजय, सूर्य पर दीपक का आतंक और असम्भव पर सम्भव की छाप।

वीर प्रसविनी भारत भूमि, तेरी जय और तेरे उस प्रेरणा-प्रसून सरदार ऊधमसिंह की शत शत वन्दना !

—'वीर अर्जुन' से साभार

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यही है कि हम उसको आचरण में लायें !

—एमसन

महारानी लक्ष्मीबाई

इस भारतीय स्त्री-रत्न का जन्म १६ नवम्बर, १८५६ ई० में श्री मोरोपन्त तांबे तथा भागीरथी वाई के यहां भागीरथी ही के तट पर काशी में हुआ। नवजात बालिका का नाम मनुबाई रखा गया। मनु अभी तीन ही साल की थी कि भागीरथी बाई का देहान्त हो गया। मोरोपन्त इसे लेकर पेशवा बाजीराव द्वितीय के पास बिठूर आ गये। अपने दिव्य गुणों के कारण नन्हीं मनु सब की स्नेह-भाजन वन गई। स्वयं पेशवा इसे "छबीली मैना" कहकर पुकारते थे। इसके वचपन के खेलकूद के साथियों में नाना साहब और राव साहब थे। छबीली शीघ्र ही सेना-संचालन, व्यूह-निर्माण, तलवार चलाने और घुड़सवारी में दक्ष हो गई। १८४२ ई० में इसका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ सम्पन्न हुआ। पति-गृह में आकर मनु का नाम लक्ष्मीवाई रखा गया।

१८५१ ई० में महारानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। परन्तु वह तीन साल का होकर चल बसा। १८५३ ई० की २१ नवम्बर को गंगाधर राव भी रानी को असहाय छोड़ कर स्वर्ग सिधारे। पति की मृत्यु के पश्चात् आपने झांसी राज्य का कार्य बड़ी योग्यता के साथ किया। लार्ड डलहौजी

पवित्रता का मार्ग ही आनंद का मार्ग है।

—ईसा

ने झांसी को ब्रिटिश राज्य में मिलाना चाहा, अतः राव की रानी का दत्तक पुत्र मानने से इन्कार कर दिया। रानी का खून खौल उठा। उसने कड़क कर कहा "झांसी दे दूं ? नहीं, मैं मेरी झांसी नहीं दूंगी।" उस समय झांसी अंग्रेजों के हाथ में अवश्य चली गई परन्तु शीघ्र ही उस वीरांगना ने अपनी वीरोचित पूर्ति कर दी। रानी १८५७ के सिपाही-विद्रोह में विद्रोहियों से मिल गई और अपनी झांसी पुनः ले ली। अभी १ मास ८ दिन ही शासन कर पाई थी कि ह्यू रोज ने झांसी पर भीषण आक्रमण कर दिया। समझौता या हार कर झुक जाना लक्ष्मी बाई के स्वभाव के सर्वथा विरुद्ध था। बस, रानी और उसकी साथी अन्त तक युद्ध करने के लिए कमर कस कर तैयार हो गई। प्रत्येक गली और प्रत्येक घर के द्वार पर संघर्ष हुआ। नगर का एक सुई की नोक जितना स्थान भी युद्ध के बिना नहीं दिया गया। रानी कुछ विश्वासपात्र सैनिकों के साथ कालपी पहुंची। वहां कुनौली के मैदान में तात्या टोपे, राव साहिब और महारानी की अंग्रेजी सेना से फिर भिड़न्त हुई। कालपी का पतन होने पर तीनों सेनानी गोपालपुर इकट्ठे हुए और ग्वालियर पर धावा बोल दिया। ग्वालियर के किले पर अधिकार किये कुछ ही दिन बीते थे कि ह्यू रोज की सेना का सामना करना पड़ा। दुर्ग चारों ओर से घिर गया। रानी ने यहां भी अतुल पराक्रम दिखाया और

आलस आया कि परमार्थ डूबा।

—श्री ब्रह्म चैतन्य

युद्ध में वीरगति पाई। फूल बाग (ग्वालियर) में लक्ष्मी बाई का अन्तिम संस्कार किया गया।

दुर्गावती

वीर रमणी दुर्गावती महोवे के चन्देल राजा शालिवाहन की पुत्री थी। उसका विवाह गढ़ा मण्डला के गोंड राजा दलपति के साथ हुआ। दलपतिशाह जैसे सुन्दर और वीर पति को पाकर दुर्गावती फूली न समाई। दोनों का जीवन आनन्द में कटने लगा। इसी बीच दुर्गावती के वीरनारायण नाम का एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा तथा प्रजा ने बड़ी खुशियाँ मनाईं—गढ़ा मण्डला में चारों ओर आनन्द छा गया। परन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। वीरनारायण अभी तीन वर्ष का न होने पाया था कि दलपतिशाह की मृत्यु हो गई। दुर्गावती पर मानो वज्र गिरा; उसने सती होना चाहा परन्तु बालक वीरनारायण और राज्य के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ रही। दुर्गावती ने लगभग १५ वर्ष तक राज्य किया। उसके शासन-काल में गढ़ा मण्डला ने चतुर्दिक उन्नति की। व्यापार और कृषि की दृष्टि से गोंडवाना (गढ़ा मण्डला) भारत की प्रमुख रियासत गिनी जाने लगी। बाहरी

जब तक आपने स्वयं अपना कर्तव्य पूरा न कर दिया है तब तक आपको दूसरों की कड़ी आलोचना नहीं करनी चाहिए। —डीमास्थनीज

आक्रमणों से राज्य की रक्षा करने के लिए रानी ने एक अच्छी सेना सगठित कर रखी थी। इस सेना मे सुमेरसिंह जैसा वीर तथा विश्वस्त सेनापति काम करता था। रियासत में विश्वासघात करने वाले कर्मचारियों को कडे से कड़ा दण्ड दिया जाता था। दुर्गावती ने वदनसिंह नामक सरदार की इसी अपराध के कारण जागीर छीन ली और उसे देश-निकाला दे दिया।

उस समय दिल्ली का सम्राट् अकबर था। गढ़ा-मण्डला की सुख-समृद्धि उसे फूटी आख न भाई और उसने मालवा के सूबेदार आसफखा को इस रियासत पर आक्रमण करने का आदेश दिया। देशद्रोही वदनसिंह शत्रु पक्ष में जा मिला। रानी इस स्थिति के लिए पहले से तैयार न थी। उसने शीघ्रतापूर्वक सेना तैयार की और स्वय साक्षात् भवानी का रूप धारण कर युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ी। उसका युद्ध-कौशल देखकर शत्रु के कई बार पाँव उखडे; परन्तु राजपूतों की मुट्ठी भर सेना मुगलों की टिड्डी दल सुशिक्षित सेना के सामने कब तक टिक सकती थी। एक एक कर सभी योद्धा कट मरे। अपनी सेना को गाजर-मूली की भांति कटते देखकर रानी क्रोध से तिलमिला उठी, वह क्रुद्ध सिंहनी की तरह शत्रु सेना पर झपटी ही थी कि इतने में एक तीर उसकी आंख में आ घुसा। महावत ने दुर्गावती

आशा ऐसा सितारा है जो रात को भी दीखता है और दिन को भी !

—एस० जी० मिल्स

से चौरागढ़ भाग चलने के लिए कहा; परन्तु रानी ने रण-क्षेत्र से भागना उचित न समझा। जब सफलता की कोई आशा न रही तो महावत से अंकुश लेकर पेट में भोंक लिया। उसने शत्रु को आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा मौत को गले लगाया। रानी की मृत्यु के पश्चात् वीरनारायण ने दो माह तक किले की रक्षा की; अन्त में उसने भी लड़ते-लड़ते वीर गति प्राप्त की। इस प्रकार जन-शून्य किला आसफखां के हाथ लगा। भारत मां को अपनी इस वीर बाला पर सदा गर्व रहेगा।

वातावरण को बदलने के लिए और बाहरी बंधनों को ढीला करने के लिए आत्मशुद्धि अमोघ उपाय है।

— गांधी

दान दाताओं के नाम व रकम

क्रम	नाम		रकम
१.	सरदार छिन्दर सिंह, पंच, ग्राम पंचायत, सेत्रीपुरा		४० रु०
२.	" गुरचरणसिंह सिद्धू चक मधूवाला		५० "
३.	" पिरथीसिंह	"	२० "
४.	" नरसिंह	"	२५ "
५.	" गुरबचनसिंह	"	३० "
६.	छात्र विक्रसिंह उर्फ मगा		२५ "
७.	छात्र बख्शीशसिंह उर्फ काला		२५ "
८.	श्री भूराराम चक मधूवाला		२५ "
९.	श्री स्योकरण "		२५ "
१०.	सरदार गुरबन्तसिंह (भू पू सैनिक)		१० "
११.	श्री बनवारी लाल पटवारी, निवासी : हुरसेवाला		१० "
१२.	सरदार अर्जुन सिंह मुल्लर, चक मधूवाला		१० "
१३.	श्री करतारसिंह, (भू. पू सैनिक)		५ "
१४.	श्री मनोहरलाल, दूकानदार	"	५ "
१५.	सरदार जलौर सिंह	"	५ "
१६.	सरदार भगवान सिंह	"	५ "
१७.	श्री ठाकुरराम बिश्नोई	"	१० "
१८.	श्री निहालसिंह सिद्धू, दूकानदार		५ "
१९	सरदार बन्तासिंह मान	"	५ "
२०.	श्री रामचन्द्र, मुक्तासर, सम्पादक		१० "
२१.	सरदार मलकियत सिंह भेला, प्र. अ., मुक्तासर		१० "

इस जीवन-समुद्र में एक ही रत्न है—आत्मज्ञान।

—सूफी

२२.	श्री अजमेरसिंह (भूतपूर्व सैनिक), चक मश्रूवाला		२५	रु०
२३.	सरदार मुखत्यार सिंह सिद्धू	"	१०	"
२४.	श्री कृष्णसिंह, दूकानदार	"	५	"
२५.	सरदार बन्तासिंह भुल्लर,	"	१०	"
२६.	कु० आशारानी कालड़ा, मुख्याध्यापिका, डवलीराठान		११	"
२७.	श्री गणेश, साइकिल दूकानदार	"	२	"
२८.	श्री गंगाराम, नाई	"	२	"
२९.	श्री दीवानचन्द गूम्बर, दुकानदार	"	५	"
३०.	श्री सतपाल गूम्बर, दुकानदार	"	११	"
३१.	श्री मामन चन्द जैन फोटोग्राफर, हनुमानगढ़ जं०		१०	"
३२.	श्री रामजी दास पूनियाँ, अध्यापक, चक जहाना		११	"
३३.	श्री फूलसिंह 'अक्कू', अध्यापक सतीपुरा		१०	"
३४.	श्री दिनेशकुमार जोशी, लोको, हनुमानगढ़ जं०		१०	"
३५.	श्री हरिश्चन्द्र शर्मा, मक्कासर		१०	"
३६.	श्री इन्द्रसिंह, पैंशनर अध्यापक, ढावाँ-निवासी		११	"
३७.	श्री मंगूराम शर्मा अध्यापक, निवासी डवली राठान		१०	"
३८.	श्री योगेन्द्रसिंह अध्यापक, नाथवाना-निवासी		१०	"
३९.	श्री प्रीतमसिंह अध्यापक, निवासी: ज्वालेवाला		१०	"
४०.	श्री केदारनाथ शर्मा अध्यापक डवली राठान स्कूल		१०	"

पुनश्च : ग्रन्थ सम्पूर्ण होने के पश्चात् जिनसे राशि प्राप्त होगी, उनका भी पेशगी आभार स्वीकार किया जाता है।

इन बंधुओं के आर्थिक सहयोग के लिए इन्हें 'भा० अ० ग्रन्थ-समिति' की ओर से धन्यवाद !

दान दाताओं का संक्षिप्त परिचय

सरदार छिगारसिंह : आप ग्राम पचायत मेजीपुरा के सम्मानीय सदस्य हैं। कृषि के साथ-साथ आप स्कूल के कामों में बहुत रुचि लेते हैं। जब भी 'सज्जन-अभिनन्दन ग्रन्थ' समिति की बैठक हुई तब भोजन की व्यवस्था आपने ही की। आप ४० वर्ष के युवक हैं।

सरदार गुरचरणसिंह सिद्धू : आपकी खेती उन्नत गिनी जाती है। आपके सभी कार्य सराहने के योग्य होते हैं। आप एक २६ वर्षीय शिक्षित नागरिक हैं।

श्री भूराराम : आप एक अधेड़ अवस्था के जाट हैं। वे सरल एवं श्रम-साध्य व्यक्ति हैं। आपका कहना है, "हर एक घर में एक लड़का पूरा पढ़ा-लिखा होना चाहिए। आपका लड़का श्री कृष्ण कुमार इस समय ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया में कक्षा ६ का विद्यार्थी है।
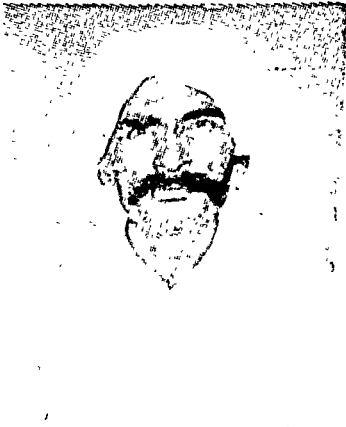
श्री श्योकरण : आपका जन्म आज से ४० वर्ष पूर्व श्रीमाधोपुर (सीकर) में हुआ था। इस समय ग्राम मथूवाला के निवासी हैं। आपकी दृष्टि में विद्या का बहुत महत्त्व है। आप धार्मिक भावना से ओत-प्रोत हैं। सफेद वस्त्र, पगड़ी, लम्बी मूछों से आप सहज ही पहचाने जा सकते हैं।

सरदार नरसिंह सिद्धू : उम्र ४५ वर्ष, जट सिक्ख, भारी भरकम शरीर, कद ६ फुट तक इत्यादि से आपकी जानकारी होती है। प्रौढ़-शिक्षा में आप आते रहे हैं। आप एक कुशल किसान व बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप कहते हैं – जमीदार को भी पढ़ना चाहिए।
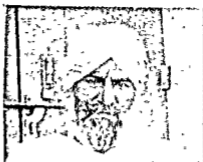
सरदार पिरथीसिंह : उम्र ४० वर्ष, काली दाढ़ी-मूछें, लंबा कद, आंखों में दिव्य आभा आपके चिह्न हैं। आपका विचार है, "आदमी को व्यवहार साफ रखना चाहिए।" आप एक धनी जमीदार हैं।

विद्यार्थी श्री बिक्रसिंह उर्फ मंगा : आप स्वर्गीय सरदार करनैलसिंह के सुपुत्र हैं। इस समय आप कक्षा ८ में पढ़ते है। आप एक सौम्य प्रकृति के किशोर हैं।

दाएं से दूसरे श्री गुरबचनसिंह हैं।

सरदार गुरबचनसिंह : उम्र २४ साल। शिक्षा मैट्रिक तक। आप एक प्रगतिशील किसान हैं। गांव में आप एक विशेष युवक के रूप में समझे जाते हैं।

विद्यार्थी श्री बख्शीशसिंह उर्फ काला : आप स्वर्गीय सरदार मुख्त्यारसिंह (छोटू) के सुपुत्र हैं। इस समय आप कक्षा २ के होनहार छात्रों में से हैं। आपकी माताजी परम संतोषी हैं।

श्री अजमेरसिंह : आप एक साक्षर व्यक्ति हैं। आप सेना से रह चुके हैं। धर्म, सेवा, परोपकार में आपकी पूरी आस्था है। आपका विश्वास है, "देश की रक्षा सर्वोत्तम है।"